राष्ट्रीय दैनिक

प्रात:किरण

दिल्ली एवं पटना से प्रकाशित

हर खबर पर पकड़

/Pratahkiran /Pratahkiran /Pratahkiran

12 केजरीवाल के बयान पर सीएम ममता ने साधी चुप्पी.....

मैदान में घुसा फैन, विराट से मिला...... 11

वर्ष : 12 | अंक : 254 | पटना, शनिवार, 28 दिसम्बर, 2024 | विक्रम संवत् 2081 | पेज : 12 | मूल्य ₹ : 03.00 | www.pratahkiran.com

मौसम

अधिकतम तापमान 18.0°C
न्यूनतम तापमान 15.0°C

बाजार

सोना 75,920

चांदी 91,900

सेंसेक्स 83,584

निफ्टी 25,698

संक्षिप्त खबरें

पंजाब : नाले में गिरी यात्रियों से भरी बस; आठ की मौत

बठिंडा। पंजाब के बठिंडा में शुक्रवार को एक भीषण सड़क हादसे में आठ लोगों की मौत हो गई, जबकि 18 घायल हो गए। सड़क हादसा बठिंडा के कोटशमीर रोड पर उस समय हुआ जब पुल से गुजर रही यात्रियों की एक बस नाले में जा गिरी। बस के गिरने के बाद घटनास्थल पर चीख-पुकार मच गई। बस में सवार पांच यात्रियों ने मौके पर ही दम तोड़ दिया, जबकि तीन अन्य गंभीर घायलों की अस्पताल में इलाज के दौरान मौत हो गई। वहीं, अन्य 18 यात्रियों का अस्पताल में इलाज चल रहा है। हादसे के बाद बठिंडा शहर से विधायक जगरूप सिंह गिल अस्पताल पहुंचे। उन्होंने इस दुखद घटना में जान गंवाने वाले लोगों और घायलों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त की। उन्होंने सरकार से मृतकों के परिवारों और घायलों को वित्तीय सहायता देने का अनुरोध किया। विधायक जगरूप सिंह गिल ने कहा, ह्लसड़क हादसे में पांच लोगों की मौके पर मौत हो गई, जबकि तीन यात्रियों ने अस्पताल में इलाज के दौरान दम तोड़ा। यह बहुत ही दुखद घटना है। भगवान मृतकों की आत्मा को शांति दे, हम पीड़ितों के साथ हैं। पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत मान एवं प्रशासन से आर्थिक मदद करने की अपील है। हमारी यही प्रार्थना है कि जितने भी घायल हैं, वे जल्द ही स्वस्थ होकर अपने घर को लौटें। बताया जा रहा है कि प्राइवेट बस में सवार सभी यात्री एक निजी कंपनी में कार्यरत थे। बठिंडा तलवंडी साबो रोड पर तेज रफ्तार से जा रही बस पुल से नीचे कई फीट गहरे नाले में गिर गई। बस में बड़ी संख्या में यात्रियों की मौजदूगी होने के कारण घटनास्थल पर अफरा-तफरी मच गई।

संदीप शाह प्रयोगशालाओं को मान्यता देने वाले बोर्ड के अध्यक्ष नियुक्त

नई दिल्ली। प्रख्यात चिकित्सा पेशेवर डॉ. संदीप शाह को भारतीय गुणवत्ता परिषद के अंतर्गत काम करने वाले निकाय- परीक्षण और अंशांकन प्रयोगशालाओं के लिए राष्ट्रीय प्रत्यायन बोर्ड का अध्यक्ष नियुक्त किया गया है। यह जानकारी शुक्रवार को वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय की एक विज्ञप्ति में दी गई । डॉ. शाह इस पद पर प्रो. सुब्बन्ना अय्यप्पन का स्थान ले रहे हैं। एनएबीएल उपभोक्ताओं, व्यवसायों और नियामकों द्वारा उपयोग किए जाने वाले उत्पादों और सेवाओं में विश्वास सुनिश्चित करते हुए परीक्षण और अंशांकन सेवाओं की गुणवत्ता में सुधार करने के लिए काम करता है। अहमदाबाद के बी. जे. मेडिकल कॉलेज से एमडी पैथोलॉजी और बैक्टीरियोलॉजी में गोल्ड मेडलिस्ट डॉ. शाह के पास पैथोलॉजी, आणविक जीव विज्ञान और ट्रांसप्लांट इम्यूनोलॉजी में व्यापक शैक्षणिक और व्यावसायिक कार्यों का अनुभव है।

राजकीय सम्मान के साथ आज होगा मनमोहन सिंह का अंतिम संस्कार

सात दिनों तक राष्ट्रीय शोक घोषित, सभी सरकारी कार्यक्रम रद्द

प्रात : किरण

नई दिल्ली/एजेंसी। पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह का 92 साल की उम्र में गुरुवार रात दिल्ली स्थित एम्स में निधन हो गया। केंद्र सरकार ने सात दिन के राष्ट्रीय शोक की घोषणा की है और शुक्रवार को होने वाले सभी सरकारी कार्यक्रम रद्द कर दिए हैं। शुक्रवार सुबह 11 बजे कैबिनेट की बैठक भी बुलाई गई। पूर्व पीएम डॉ. मनमोहन सिंह का अंतिम संस्कार पूरे राजकीय सम्मान के साथ किया जाएगा। उनकी अंतिम यात्रा शनिवार को सुबह 9:30 बजे दिल्ली स्थित ऑल इंडिया कांग्रेस कमेटी मुख्यालय से शुरू होगी। यह जानकारी कांग्रेस महासचिव केसी वेणुगोपाल ने दी। उन्होंने बताया- शनिवार सुबह 8 बजे डॉ. सिंह का पार्थिव शरीर उनके आवास से ऑल इंडिया कांग्रेस कमेटी मुख्यालय लाया जाएगा, जहां सुबह 8:30 बजे से 9:30 बजे तक लोग और कांग्रेस कार्यकर्ता उन्हें श्रद्धांजलि दे सकेंगे। इससे पहले शुक्रवार शाम को कांग्रेस मुख्यालय पर सीडब्लयूसी की बैठक हुई, इसमें पूर्व पीएम मनमोहन सिंह को श्रद्धांजलि दी गई। देश के पहले सिख पीएम, सबसे लंबे समय इस पद पर रहने वाला चौथे नेता मनमोहन सिंह, 2004 में देश के 14वें प्रधानमंत्री बने थे। उन्होंने मई 2014 तक इस पद पर दो कार्यकाल पूरे किए थे। वे देश के पहले सिख और सबसे लंबे समय तक रहने वाले चौथे प्रधानमंत्री थे। राहुल गांधी और कांग्रेस अध्यक्ष खड़गे बेलगावी से देर रात दिल्ली पहुंचने के बाद सीधे मनमोहन सिंह के आवास गए थे। राहुल ने पर लिखा- मैंने अपना मार्गदर्शक और गुरु खो दिया।

पार्टी मुख्यालय से शुरू होगी अंतिम यात्रा

नई दिल्ली। कांग्रेस की शीर्ष नीति निर्धारण कांग्रेस इकाई कार्य समिति शुक्रवार शाम बैठक कर पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह को श्रद्धंजलि अर्पित करेगी। सिंह का पार्थिव शरीर शनिवार सुबह पार्टी मुख्यालय में लोगों के अंतिम दर्शन के लिए रखा जाएगा और फिर वहीं से उनकी अंतिम यात्रा भी शुरू होगी। मनमोहन सिंह जी का पार्थिव शरीर शुक्रवार को उनके आवास 3, मोतीलाल नेहरू मार्ग पर रखा जाएगा ताकि लोग वहां पहुंचकर अंतिम दर्शन कर सकें। आज 28 दिसंबर को सुबह 8 बजे, उनके पार्थिव शरीर को एआईसीसी मुख्यालय लाया जाएगा और जनता तथा कांग्रेस कार्यकर्ता कल सुबह 8.30 से 9.30 बजे के बीच उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित कर सकेंगे। उन्होंने कहा कि सिंह की अंतिम यात्रा एआईसीसी मुख्यालय से श्मशान घाट तक के लिए आज सुबह 9.30 बजे शुरू होगी।

2004 से 2014 तक रहे प्रधानमंत्री

पूर्व पीएम मनमोहन सिंह साल 2004 से 2014 तक प्रधानमंत्री रहे थे। साल 1991 में मनमोहन सिंह की राजनीति में एंट्री हुई जब 21 जून को पी.वी. नरसिम्हा राव की सरकार में उन्हें वित्त मंत्री बनाया गया। उस समय देश एक गंभीर आर्थिक संकट का सामना कर रहा था। पी.वी. नरसिंह राव के साथ मिलकर उन्होंने विदेशी निवेश का रास्ता साफ किया था। वित्त मंत्री रहते उन्होंने देश में आर्थिक उदारीकरण की नीतियों को लागू किया, जिससे विदेशी निवेश को बढ़ावा मिला और भारत को विश्व बाजार से जोड़ा जा सका। वह 1991 में पहली बार असम से राज्यसभा के सांसद चुने गए। उन्होंने देश की अर्थव्यवस्था को सुधारने के लिए कई सुधार किए, जिससे भारत की अर्थव्यवस्था बेहतर हुई। वह 1998 से 2004 तक विपक्ष के नेता भी रहे। हालांकि, साल 2004 के लोकसभा चुनाव में कांग्रेस पार्टी को मिली जीत के बाद उन्होंने 14वें प्रधानमंत्री के रूप में शपथ ली। उन्होंने यूपीए-1 और 2 में प्रधानमंत्री का पद संभाला। मनमोहन सिंह ने पहली बार 22 मई 2004 और दूसरी बार 22 मई, 2009 को प्रधानमंत्री के पद की शपथ ली थी।

सीएम नीतीश की प्रगति यात्रा का शेड्यूल बदला

नई तारीख घोषित

प्रात : किरण

पटना। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की मुजफ्फरपुर और वैशाली जिले में प्रगति यात्रा की नई तारीख जारी हुई है। इन दिनों जिलों में सीएम की यात्रा पूर्व पीएम मनमोहन सिंह के चलते स्थगित कर दी गई थी। बता दें कि पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह के निधन के शोक में बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की 27 और 28 दिसंबर की प्रगति यात्रा स्थगित कर दी गई। इसको लेकर सीएमओ से आधिकारिक जानकारी दी गयी। अब इस कार्यक्रम को लेकर शेड्यूल में बदलाव किया गया है। नयी तारीख जारी हुई है। दरअसल, मंत्रिमंडल सचिवालय के तरफ से नई तारीख को लेकर तिथि जारी किया गया है। इस पत्र में यह कहा गया है कि मुख्यमंत्री की प्रथम चरण अंतर्गत 27 दिसंबर को मुजफ्फरपुर तथा 28 दिसंबर को वैशाली में होने वाले प्रगति यात्रा कार्यक्रम को संशोधित करते हुए द्वितीय चरण अंतर्गत निम्नप्रकार निर्धारित किया जाता है।

इस पत्र के अनुसार सीएम के प्रगति यात्रा के तरत मुजफ्फरपुर का कार्यक्रम अब नए साल में 05 जनवरी को किया जाएगा। इसके अलावा वैशाली का कार्यक्रम भी अब 06 जनवरी को किया जाएगा। इसके अलावा बाकी के कार्यक्रम यथावत रहेंगे। उसके तारीखों में कोई बदलाव नहीं किया गया है। लिहाजा

सीएम बाकि जिलों में पहले की तरह की यात्रा करेंगे। उल्लेखनीय है कि मुख्यमंत्री कुमार की प्रगति यात्रा के प्रथम चरण की शुरूआत 23 दिसंबर को पश्चिम चंपारण जिले से हुई। इसके अगले दिन 24 दिसंबर को उन्होंने पूर्वी चंपारण की यात्रा की। इसके क्रम में 26 दिसंबर को वह शिवहर और सीतामढ़ी की यात्रा पर रहे। इस दौरान 27 दिसंबर को मुजफ्फरपुर में और 28 दिसंबर को वैशाली में उनकी यात्रा प्रस्तावित थी।

बिहार में सात दिन का राजकीय शोक

पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह के निधन पर बिहार में नीतीश सरकार ने बड़ा फैसला लिया है। राज्य सरकार की ओर से शुक्रवार को बिहार में सात दिनों का राजकीय शोक मनाने का निर्णय लिया गया। राज्य के मुख्य सचिव अमृत लाल मीणा ने इसे लेकर मंत्रिमंडल सचिवालय विभाग का आदेश जारी किया। इसमें कहा गया कि भारत के पूर्व प्रधानमंत्री डॉ मनमोहन सिंह का निधन एम्स नई दिल्ली में 26 दिसंबर को हो गया है। दुःखद संवेदना के इस क्षण में तद्नुसार बिहार सरकार द्वारा स्व डॉ० मनमोहन सिंह के सम्मान में 26 दिसंबर से 01 जनवरी तक कुल सात दिनों का राजकीय शोक मनाने का निर्णय लिया गया है।

नहीं होंगे ये काम

दिवंगत पूर्व प्रधानमंत्री के सम्मान में राजकीय शोक की अवधि में राष्ट्रीय ध्वज उन सभी भवनों पर आधा झुका रहेगा, जहाँ नियमित रूप से राष्ट्रीय ध्वज फहराया जाता है। इस अवधि में कोई राजकीय समारोह एवं सरकारी मनोरंजन से संबंधित कार्यक्रम आयोजित नहीं होंगे।

सीएम नीतीश ने जताया दुःख

इसके पहले डॉ मनमोहन सिंह के निधन पर बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने अपनी शोक संवेदना प्रकट की. उन्होंने कहा कि देश के पूर्व प्रधानमंत्री डॉ० मनमोहन सिंह जी का निधन दुःखद। वे एक कुशल राजनेता एवं अर्थशास्त्री थे। उनके नेतृत्व में भारत की अर्थव्यवस्था को नई दिशा मिली। डॉ० मनमोहन सिंह जी का निधन भारतीय राजनीति के लिए अपूरणीय क्षति है। ईश्वर से दिवंगत आत्मा की चिर शांति के लिए प्रार्थना है।

सूबे के कई जिलों में बारिश के आसार, अलर्ट जारी

प्रात : किरण

पटना। बिहार में मौसम का मिजाज बदलने वाला है। मौसम विज्ञान केंद्र पटना के मुताबिक बिहार के 6 जिलों में अगले 48 घंटे बारिश, वज्रपात और मेघगर्जन की संभावना है। इन 6 जिलों में- भभुआ, रोहतास, बक्सर, भोजपुर, औरंगाबाद और अरवल शामिल है। इन जिलों में अगले 48 घंटे के दौरान ठंड में भी इजाफा देखने को मिलेगा। मौसम में यह बदलाव पश्चिमी विक्षोभ और एक चक्रवाती परिसंचरण के कारण देखने को मिल रहा है। मौसम विज्ञान केंद्र के अनुमान के मुताबिक दक्षिण बिहार के कई इलाकों में बारिश की संभावना है। राजधानी पटना में भी बारिश के आसार हैं। आइएमडी की ओर से जारी एक विशेष अलर्ट में किसान को होशियार रहने की विशेष सलाह दी गई है। मौसम विभाग ने बताया कि 28 से 29 दिसंबर के बीच नार्थ वेस्ट भारत में पश्चिमी विक्षोभ प्रभावित करने की संभावना है। इस वजह से यहां के मौसम में परिवर्तन होने की संभावना है।

भारत मौसम विज्ञान विभाग के मुताबिक पहाड़ों पर बर्फबारी जारी है और इस बीच एक ताजा पश्चिमी विक्षोभ निचले स्तरों पर पश्चिमी

हवाओं में एक ट्रफ के रूप में चल रहा है। जिससे शनिवार और रविवार को अरब सागर के साथ ही बंगाल की खाड़ी से भारी नमी आएगी। इसके चलते ही बिहार के कई जिलों में बारिश की संभावना जताई गई है। इससे ठंड और बढ़ेगी। दरअसल, पश्चिमी विक्षोभ के सक्रिय नहीं होने के कारण बिहार में न्यूनतम तापमान दिसंबर में अपने सामान्य से चार-पांच डिग्री ऊपर बना हुआ है। वहीं अब अगले दो से तीन दिनों के दौरान प्रदेश बारिश की संभावना है। इससे जिलों में बादल छाए रहने के साथ कुछ स्थानों पर हल्की वर्षा, वज्रपात की संभावना है। इन जिलों में हो सकती है बारिश : बक्सर, भोजपुर, रोहतास, भभुआ, औरंगाबाद और अरवल जिलों में बारिश की संभावना है। वहीं पटना, गया, नालंदा, शेखपुरा, नवादा, बेगूसराय, लखीसराय, जहानाबाद, भागलपुर, बांका, जमुई, मुंगेर और खगड़िया के एक या दो स्थानों पर वर्षा होने की संभावना है।

बीपीएससी पीटी : किसी भी स्थिति में रद्द नहीं होगी परीक्षा

बीपीएससी परीक्षा नियंत्रक की दो टूक, अभ्यर्थियों को झटका

पटना। पिछले दस दिन से बीपीएससी परीक्षा को रद्द करने की मांग को लेकर आंदोलन कर रहे अभ्यर्थियों को बिहार लोक सेवा आयोग ने बड़ा झटका दिया है। आयोग ने साफ कर दिया है कि किसी भी स्थिति में 70वीं बीपीएससी प्रारंभिक परीक्षा को रद्द नहीं किया जाएगा। इस दौरान अभ्यर्थियों के आंदोलन को लेकर आयोग ने साफ कर दिया कि कुछ लोग ही इसको लेकर आंदोलन कर रहे हैं। जबकि कई लोग मेल कर परीक्षा को रद्द नहीं करने की मांग कर रहे हैं। बीपीएससी के परीक्षा

नियंत्रक राजेश कुमार ने मीडिया से बात करते हुए कहा कि जो भी जिसको करना है करें, 4 तारीख की परीक्षा की तैयारी कर रहे हैं, एडमिट कार्ड जारी हो गया है। अभ्यर्थी एडमिट कार्ड डाउनलोड कर रहे हैं। 2 तारीख को जिलों का नाम भी पता चल जाएगा। परीक्षा नियंत्रक ने कहा कि बिना साक्ष्य के ही परीक्षा रद्द करने का दबाव दिया जा रहा है। लेकिन, हम पर कोई दबाव नहीं है। आयोग पर भ्रष्टाचार का आरोप लगाने का बचाव करते हुए उन्होंने कहा कि उनके पास कोई साक्ष्य नहीं है। सिर्फ बेबुनियाद आरोप लगा रहे हैं। उन्होंने कहा कि परीक्षा में 3 लाख 28 हजार अभ्यर्थी शामिल हुए थे। जिसमें दो हजार अभ्यर्थी ही परीक्षा रद्द करने की मांग कर रहे हैं। अब दो हजार बच्चों के लिए 3 लाख 26 हजार बच्चों को अनदेखा नहीं किया जा सकता है। परीक्षा नियंत्रक राजेश कुमार ने बताया कि चार तारीख को होनेवाली परीक्षा के बाद आयोग जनवरी में ही प्रारंभिक परीक्षा का रिजल्ट जारी कर देगा । इसके बाद अप्रैल महीने में मुख्य परीक्षा ली जाएगी।

आईसीएआई ने सीए फाइनल परीक्षा का परिणाम किया घोषित

नई दिल्ली/एजेंसी। इंस्टीट्यूट ऑफ चार्टर्ड अकाउंटेंट्स ऑफ इंडिया ने शुक्रवार को नवंबर 2024 में आयोजित चार्टर्ड अकाउंटेंसी फाइनल परीक्षा के परिणाम की घोषणा की जिसमें करीब 11,500 छात्र सफल हुए। हैदराबाद के हेरंब माहेश्वरी और तिरुपति के ऋषभ ओस्तवाल आर ने 84.67 प्रतिशत अंकों के साथ संयुक्त रूप से अखिल भारतीय स्तर पर प्रथम स्थान प्राप्त किया है। अहमदाबाद की रिया कुंजनकुमार शाह ने 501 नंबरों के साथ 83.50 प्रतिशत अंकों के साथ दूसरा स्थान प्राप्त किया, जबकि किंजल अजमेरा ने 493 नंबरों के साथ 82.17 प्रतिशत अंक लेकर तीसरा स्थान प्राप्त किया। इस अवसर पर आईसीएआई के अध्यक्ष सीए रंजीत कुमार अग्रवाल ने टॉपर्स और सीए परीक्षा में सफल होने वाले सभी छात्रों को बधाई दी। श्री अग्रवाल ने कहा देश की सबसे कठिन परीक्षाओं में से एक को पास करना एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। उन्होंने कहा यह उपलब्धि आपके जीवन में एक आशाजनक और परिवर्तनकारी अध्याय की शुरूआत का प्रतीक है -उच्च लक्ष्य रखें और अधिक से अधिक प्राप्त करें, हमेशा अपने राष्ट्र की प्रगति और गौरव को सबसे आगे रखें। श्री अग्रवाल ने आगे बताया कि इस वर्ष के परिणाम छात्रों द्वारा असाधारण प्रदर्शन को दशार्ते हैं जो उल्लेखनीय उपलब्धियों को प्रदर्शित करते हैं। इस वर्ष 31,946 से अधिक छात्रों ने सीए फाइनल परीक्षा सफलतापूर्वक उत्तीर्ण की जो भागीदारी में उल्लेखनीय वृद्धि और चार्टर्ड अकाउंटेंसी में करियर बनाने के लिए युवाओं के बीच बढ़ती रुचि को दशार्ता है।

मनमोहन सिंह को श्रद्धांजलि देने वालों का तांता लगा

नई दिल्ली/एजेंसी। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, कांग्रेस संसदीय दल की प्रमुख सोनिया गांधी, पार्टी अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे, लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी सहित कई प्रमुख नेताओं तथा अन्य हस्तियों ने शुक्रवार को पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह को उनके आवास पर श्रद्धांजलि अर्पित की। तिरंगे में लिपटे पूर्व प्रधानमंत्री के पार्थिव शरीर को उनके आवास पर फूलों से सजे ताबूत में रखा गया, जहां दलगत भावना से ऊपर उठकर नेताओं ने दिवंगत नेता को अंतिम श्रद्धांजलि दी। सिंह की पत्नी गुरशरण कौर और परिवार के अन्य सदस्य भी उपस्थित थे। सिंह का अंतिम संस्कार शनिवार को किया जाएगा। कांग्रेस के संगठन महासचिव केसी वेणुगोपाल ने बताया कि सिंह का पार्थिव शरीर शनिवार सुबह पार्टी मुख्यालय में लोगों के अंतिम दर्शन के लिए रखा जाएगा और फिर वहीं से सुबह साढ़े नौ बजे उनकी अंतिम यात्रा भी शुरू होगी। राष्ट्रपति मुर्मू, प्रधानमंत्री मोदी, उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़, गृह मंत्री अमित शाह और भारतीय जनता पार्टी अध्यक्ष जेपी नड्डा ने भी पूर्व प्रधानमंत्री को उनके आवास पर श्रद्धांजलि अर्पित की। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे और पार्टी की पूर्व प्रमुख सोनिया गांधी एवं राहुल गांधी समेत कांग्रेस के शीर्ष नेताओं ने भी सिंह को अंतिम श्रद्धांजलि दी। अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी महासचिव प्रियंका गांधी और अन्य नेता भी मौजूद थे। प्रधानमंत्री मोदी ने मनमोहन सिंह को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके निधन को राष्ट्र के लिए एक बड़ी क्षति बताया और कहा कि उन्हें एक दयालु इंसान, विद्वान अर्थशास्त्री और आर्थिक सुधारों के जरिए देश को एक नए युग में ले जाने वाले नेता के रूप में याद किया जाएगा। एक आधिकारिक बयान में कहा गया, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में केन्द्रीय मंत्रिमंडल ने पूर्व प्रधानमंत्री डॉ मनमोहन सिंह की स्मृति में एक शोक प्रस्ताव पारित किया। मंत्रिमंडल ने दो मिनट का मौन रखकर डॉ० मनमोहन सिंह को श्रद्धांजलि दी। कांग्रेस नेता

केंद्रीय मंत्रिमंडल ने दी श्रद्धांजलि

नई दिल्ली। केन्द्रीय मंत्रिमंडल ने शुक्रवार को यहां पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह की स्मृति में दो मिनट का मौन रख कर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में केंद्रीय मंत्रिमंडल ने डॉ. सिंह की स्मृति में शोक प्रस्ताव भी पारित किया और तय किया कि उनका अंतिम संस्कार राजकीय सम्मान के साथ किया जाएगा। मंत्रिमंडल ने दो मिनट का मौन रखकर डॉ. सिंह को श्रद्धांजलि दी। गौरतलब है कि दिवंगत नेता के सम्मान में 01 जनवरी 2025 तक सात दिनों का राजकीय शोक घोषित किया गया है। इस शोक अवधि के दौरान पूरे भारत में राष्ट्रीय ध्वज आधा झुका रहेगा। विदेश स्थित सभी भारतीय मिशनों/उच्चायोगों में भी राष्ट्रीय ध्वज 01 जनवरी 2025 तक सात दिनों के लिए आधा झुका रहेगा। मंत्रिमंडल की बैठक में तय किया गया कि डॉ. सिंह का राजकीय सम्मान के साथ अंतिम संस्कार किया जाएगा। राजकीय सम्मान के साथ अंतिम संस्कार के दिन सभी केंद्रीय सरकारी कार्यालयों और सीपीएसयू में आधे दिन की छुट्टी घोषित की जाएगी। बैठक में पूर्व प्रधानमंत्री के सम्मान में पारित शोक प्रस्ताव में कहा गया, मंत्रिमंडल भारत के पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह के 26 दिसंबर, 2024 को अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, नई दिल्ली में हुए दुखद निधन पर गहरा दुख व्यक्त करता है।

सिंह 2004 से 2014 तक, 10 वर्ष देश के प्रधानमंत्री रहे और उससे पहले उन्होंने वित्त मंत्री के रूप में देश के आर्थिक ढांचे को मजबूत करने में मदद की। वह वैश्विक वित्तीय और आर्थिक क्षेत्रों में एक प्रसिद्ध नाम थे। उनकी सरकार ने सूचना का अधिकार, शिक्षा का अधिकार और मनरेगा जैसी युग परिवर्तनकारी योजनाओं की शुरूआत की। हमेशा नीली पगड़ी पहनने वाले सिंह को 1991 में नरसिम्हा राव सरकार में भारत का वित्त मंत्री नियुक्त किया गया था। आर्थिक सुधारों की एक व्यापक नीति शुरू करने में उनकी भूमिका को अब दुनिया भर में मान्यता प्राप्त है।

मनमोहन सिंह का जीवन आने वाली पीढ़ियों को हमेशा सीख देगा : मोदी

श्रद्धांजलि

प्रधानमंत्री ने दी श्रद्धांजलि, कहा-डॉ. सिंह का निधन देश के लिए एक बड़ी क्षति

प्रात : किरण

नई दिल्ली/एजेंसी। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह के निधन को राष्ट्र के लिए एक बड़ी क्षति बताया है। प्रधानमंत्री कार्यालय के मुताबिक श्री मोदी ने एक वीडियो संदेश में डॉ. मनमोहन सिंह के निधन पर गहरा दुख व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि डॉ. सिंह का निधन देश के लिए एक बड़ी क्षति है। प्रधानमंत्री ने कहा, जीवन के हर क्षेत्र में सफलता हासिल करना कोई सामान्य उपलब्धि नहीं है और विभाजन के दौरान भारत आने के बाद बहुत कुछ खोने के बावजूद डॉ. सिंह बड़ी उपलब्धि हासिल करने वाले व्यक्ति थे। डॉ. सिंह का जीवन आने वाली पीढ़ियों को सिखाता है कि विपरीत परिस्थितियों से कैसे ऊपर उठकर महान ऊंचाइयों को हासिल किया जाए।

श्री मोदी ने जोर देकर कहा कि डॉ. सिंह को हमेशा एक दयालु व्यक्ति, एक विद्वान अर्थशास्त्री और सुधारों के लिए समर्पित नेता के रूप में याद किया जाएगा। उन्होंने केन्द्र सरकार में डॉ. सिंह के एक अर्थशास्त्री के रूप में विभिन्न स्तरों पर अनगिनत योगदानों पर प्रकाश डाला। उन्होंने चुनौतीपूर्ण समय में भारतीय रिजर्व बैंक के गवर्नर के रूप में डॉ. सिंह की भूमिका की सराहना की। प्रधानमंत्री ने कहा कि पूर्व प्रधानमंत्री एवं भारत रत्न पी. वी. नरसिम्हा राव की सरकार में वित्त मंत्री के रूप में डॉ. सिंह ने देश को वित्तीय संकट से निकालकर नये आर्थिक रास्ते पर चलाया। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि प्रधानमंत्री के रूप में देश के विकास और प्रगति में डॉ. सिंह के योगदान को हमेशा याद किया जाएगा। उन्होंने कहा कि लोगों और देश के विकास के प्रति डॉ. सिंह की प्रतिबद्धता को हमेशा उच्च सम्मान में रखा गया है। श्री मोदी ने कहा कि डॉ. सिंह का जीवन उनकी ईमानदारी और सादगी का प्रतिबिंब था। उन्होंने कहा कि डॉ. सिंह का प्रतिष्ठित संसदीय करियर उनकी विनम्रता, सौम्यता और बुद्धिमत्ता से चिह्नित था। प्रधानमंत्री ने याद किया कि इस वर्ष की शुरूआत में राज्यसभा में डॉ. सिंह के कार्यकाल के अंत में भी, उन्होंने सभी के लिए प्रेरणा के रूप में डॉ. सिंह के समर्पण की प्रशंसा की थी। अपनी शारीरिक चुनौतियों के बावजूद, डॉ. सिंह ने अपने संसदीय कर्तव्यों को पूरा करते हुए व्हीलचेयर पर महत्वपूर्ण सत्रों में भाग लिया। प्रधानमंत्री ने कहा कि प्रतिष्ठित वैश्विक संस्थानों से शिक्षा प्राप्त करने और शीर्ष सरकारी पदों पर रहने के बावजूद, डॉ. सिंह अपनी साधारण पृष्ठभूमि के मूल्यों को कभी नहीं भूले। उन्होंने कहा कि डॉ. सिंह हमेशा दलगत राजनीति से ऊपर उठकर सभी दलों के लोगों से संपर्क बनाए रखते थे और सभी के लिए आसानी से उपलब्ध रहते थे। प्रधानमंत्री ने मुख्यमंत्री के रूप में अपने कार्यकाल के दौरान और बाद में दिल्ली में डॉ. सिंह के साथ राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय मुद्दों पर उनकी खुली चर्चा को याद किया। उन्होंने डॉ. सिंह के परिवार के प्रति संवेदना व्यक्त की और सभी नागरिकों की ओर से उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की।

देश दुनिया की ताजा तरीन खबरें पढ़ने के लिए लॉग ऑन करें
@Pratahkiran www.pratahkiran.com

संक्षिप्त खबरें

ट्रेन की चपेट में आने से दो युवक की मौत

दानापुर। नगर के अंतर्गत देर रात रेलवे लाइन क्रास करने के क्रम में ट्रेन के चपेट में आने से दो युवक की मौत हो गयी। सूचना पर पहुंची रूपसपुर पुलिस ने दोनों शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम करा सौप दिया। प्राप्त समाचार के अनुसार रूपसपुर थाना क्षेत्र के जलालपुर के पास बाइक लेकर स्थानीय प्रभु मांझी का पुत्र हीरा लाल 23 व विद्या मांझी का पुत्र गोपाल 25 रेलवे ट्रैक पार कर रहा था। इसी क्रम में दानापुर की ओर से पाटलिपुत्र की ओर जा रही सीमांचल एक्सप्रेस के चपेट में दोनो आ गया। जिससे दोनो की मौके पर ही मौत हो गया। सूचना पर पहुंची रूपसपुर पुलिस ने दोनो शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम करा को सौंप दिया। थानाध्यक्ष रणविजय कुमार ने बताया कि सीमांचल एक्सप्रेस के चपेट में आने से जलालपुर निवासी हीरालाल व गोपाल की मौत हो गई है

बिजली मिस्त्री का इलाज के दौरान मौत

दानापुर। नगर के रूपसपुर नगर के अंतर्गत आरपीएस मोड़ के निकट विधुत धारा प्रवाहित तार चपेट में आने से जख्मी बिजली मिस्त्री का इलाज के दौरान मौत हो गई। सूचना पर पहुंची पुलिस कार्रवाई में जुटी है। बताया जाता है कि गुरुवार की शाम आरपीएस मोड़ के निकट बिजली ठीक करने को लेकर मिस्त्री विजय राय काम करने गया था। इसी दौरान उसे करंट लग गई जिससे वो जख्मी हो गया। आनन फानन में उसे खगौल रोड स्थित निजी अस्पताल मे भर्ती कराया गया। जहां इलाज के दौरान उनका मौत हो गया। कनीय अभियंता अमित मिश्र ने बताया कि इलाज के दौरान मैनपुरा निवासी जख्मी विजय राय की मौत हो गयी। थानाध्यक्ष ने बताया कि पोस्टमार्टम की कार्रवाई की जा रही है।

पूर्व पीएम के निधन पर जताया दुख

पटना सिटी (प्राकि)। पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह के निधन पर प्रबंधक कमेटी तख्तश्री हरिमंदिर जी पटना साहिब के अध्यक्ष जगजोत सिंह सोही, महासचिव इंद्रजीत सिंह, वरीय उपाध्यक्ष लखविंदर सिंह व सचिव हरवंश सिंहासन ने दुख जताया है। उनकी आत्मा की शांति के लिए तख्त साहिब में अरदास कराई गई। बिहार सिख फेडरेशन के संस्थापक त्रिलोक सिंह निषाद, अध्यक्ष दिलीप सिंह पटेल, महासचिव सूरज सिंह, कोषाध्यक्ष रणजीत सिंह निषाद, हरदेव सिंह बाजवा, भोला सिंह, राजवीर सिंह आदि ने भी शोक जताया है। सेवादार कल्याण समिति के अध्यक्ष तेजेंद्र सिंह बंटी, संरक्षक बलराम सिंह, अजायब सिंह, अवधेश सिंह आदि ने भी दशमेश पिता से स्व मनमोहन सिंह को चरणों में वास देने के लिए अरदास किया। ऑल इंडिया जामियातुस सब्बाग रंगरेज ऑर्गनाइजेशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष रजी अहमद सिद्दिकी

गुरुद्वारा गायघाट पहुंची प्रभातफेरी

पटना सिटी (प्राकि)। दशमेश पिता गुरु गोविंद सिंह जी महाराज के प्रकाश पर्व को लेकर शुक्रवार की सुबह तख्तश्री पटना साहिब से प्रभातफेरी निकली। यह अशोक राजपथ के रास्ते होते हुए गायघाट स्थित बड़ी संगत गुरुद्वारा पहुंची। यहां सबों ने मत्था टेका और कीर्तन किया। इसके बाद सभी वहां से जमाल रोड, पटना जंक्शन संगत के घर से होते हुए वापस लौटी। शनिवार को तख्तश्री पटना साहिब से निकलने वाली प्रभातफेरी अशोक राजपथ से होते हुए गुरु का बाग गुरुद्वारा जाएगी।

एससी एसटी मामले में आरोपी युवक गिरफ्तार

मसौढ़ी !एसटी मामले में एक आरोपी को मसौढ़ी पुलिस ने गिरफ्तार करने में सफलता हासिल की है।गिरफ्तार आरोपी की पहचान गंगाचक मालिकाना मुहल्ले निवासी सतेंद्र सिंह के पुत्र अरुण कुमार के रूप में हुई है।मसौढ़ी थानाध्यक्ष विजय कुमार येदुवेंदु ने बताया कि आपसी विवाद को लेकर मारपीट की घटना हुई थी।इसी मामले में मारपीट व एससीएसटी मामले में फरार आरोपी को गिरफ्तार किया गया। शुक्रवार को गिरफ्तार युवक को न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया है।

अज्ञात महिला का शव बरामद, शिनाख्त नहीं

मसौढ़ी !थाना क्षेत्र के बैरागीबाग गांव के पास मसौढ़ी पुलिस ने शुक्रवार की शाम लगभग 30वर्षीया एक अज्ञात महिला का शव बरामद किया है।महिला की शिनाख्त समाचार लिखे जाने तक नहीं हो पाई है।उसकी गला दबाकर हत्या कर धारदार हथियार से चेहरा पर वार किया हुआ था।हत्या दूसरे जगह से कर के शव को लाकर यहां फेक दिया है।स्थानीय लोगों में विभिन्न तरह

बिहार में आयुष्मान भारत योजना के तहत अपग्रेडेड पोर्टल टीएमएस 2.0 लांच

एनएमसीएच के आयुष्मान काउंटर पर आरोग्य मित्र टीम को पोर्टल से संबंधित दी जानकारी

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

नेशनल हेल्थ अथॉरिटी (एनएचए) द्वारा आयुष्मान भारत प्रधानमंत्री योजना के तहत अपग्रेडेड पीएमएस 2.0 पोर्टल में लांचच किया गया। इस पोर्टल का सफल परीक्षण बीती रात पटना मुख्यालय में एनएचसी के तकनीकी सहयोग से किया गया था। नेशनल हेल्थ अथॉरिटी, नई दिल्ली से आए डॉ कनुप्रिया एवं वीर भारती सीनियर कंसल्टेंट ने एनएमसीएच के आयुष्मान काउंटर सेंटर पर जाकर आरोग्य मित्र टीम को पोर्टल से संबंधित जानकारी दी। साथ ही पोर्टल के नवीनतम फीचर, गुणवत्ता और कार्यक्षमता के बारे में विस्तार से बताया। इस दौरान अधीक्षक डॉ बिनोद कुमार सिंह, उपाधीक्षक डॉ सरोज कुमार, निदेशक आलोक रंजन आदि भी अस्पताल में योजना से संबंधित निरीक्षण किया। नए पोर्टल का परीक्षण सफल रहा और यह सुनिश्चित किया गया कि यह मरीजों के इलाज और संबंधित कार्यों में तेजी से सुविधा प्रदान करेगा। इससे अस्पताल में प्रक्रियाओं को अधिक कुशलता से संचालित किया जा सकेगा। नवीनतम पीएमएस 2.0 वर्जन के माध्यम से पोर्टल पर किए गए कार्य से डॉक्टर और अधिकारी संतुष्ट हुए। आयुष्मान भारत के इस नए पोर्टल डिजिटल क्रांति का प्रतीक है और मरीजों को अधिक सुविधाजनक सेवाएं प्रदान करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

मालसलामी थाना की पुलिस ने देसी कट्टा व गोली के साथ दो को किया गिरफ्तार

● पिस्टल व गोली रख मोबाइल में वीडियो व फोटो रख जमाता था धाक

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

मालसलामी थाना की पुलिस ने मोबाइल में पिस्तौल और गोली के साथ फोटो व वीडियो रख कर लोगों पर धौंस जमाने वाले को गिरफ्तार किया है। साथ ही एक देसी कट्टा, दो गोली और दो एंड्राइड मोबाइल भी जब्त किया है। यह जानकारी मालसलामी थाना के थानाध्यक्ष राजकुमार सिंह ने दी। उन्होंने बताया कि हर्ष फायरिंग तथा सोशल मीडिया पर अपलोड किए जाने वाले अपराधकृत की मॉनिटरिंग लगातार की जा रही है। इसी दौरान 26 दिसंबर को सूचना मिली कि सिकंदर कुमार नामक लड़का अपने रिश्तेदार के यहां नखास पिंड आया हुआ है। वह अपने मोबाइल में पिस्तौल और गोली के साथ फोटो रखकर लोगों को दिखा रहा है और धाक भी जमा रहा है। सूचना के सत्यापन एवं आवश्यक कार्रवाई के लिए टीम का गठन किया गया। इस दौरान सिकंदर नामक युवक की पहचान कर मोबाइल के साथ उसे दबोचा गया। इसके बाद उससे पूछताछ की गई। उसके द्वारा बताया गया कि चौक थाना क्षेत्र के कैमाशिकोह का रहने वाला आदित्य कुमार उर्फ जौनसन के साथ मिलकर वह सब लोगों को डराने, धमकाने तथा धाक जमाने के लिए पिस्तौल और गोली रखकर मोबाइल में वीडियो और फोटो बनाते हैं। उसके बताए अनुसार आदित्य उर्फ जौनसन को चौक थाना क्षेत्र के कैमाशिकोह को भी दबोचा गया। इसके बाद दोनों से पूछताछ और बताए गए आधार पर फिर पीरदमरिया घाट पर पत्थर में छिपा कर रखे गए एक देसी पिस्तौल और दो गोली बरामद किया गया। दोनों को गिरफ्तार कर लिया गया। इस संबंध में मालसलामी थाना में कांड संख्या 593/24 दर्ज किया गया है। गिरफ्तार आदित्य कुमार उर्फ जौनसन का आपराधिक इतिहास भी है। वह चौक थाना में कांड संख्या 637/23 में जानलेवा हमले से लेकर अन्य धाराओं में आरोपित भी है। छापेमारी टीम में पुलिस निरीक्षक सह थानाध्यक्ष राजकुमार सिंह, एसआई अखिलेश कुमार, एएसआई संजय कुमार, सिपाही मनोर कुमार, संतोष कुमार, संतोष कुमार यादव, संजीत कुमार और गुलाब कुमार शामिल थे।

50 लीटर देसी शराब के साथ एक कारोबारी गिरफ्तार

प्रात :किरण संवाददाता

मसौढ़ी !थाना क्षेत्र के दाऊदपुर मुहल्ले के पास छापेमारी कर पुलिस ने 50 लीटर देशी शराब के साथ एक कारोबारी को गुरुवार को गिरफ्तार कर लिया ।गिरफ्तार शराब कारोबारी पुनपुन थाना क्षेत्र के मोहम्मदपुर गांव निवासी सुरेन्द्र चौधरी के पुत्र संजय चौधरी बताया जाता है ।मसौढ़ी थानाध्यक्ष विजय कुमार येदुवेंदु ने बताया कि सूचना मिली थी कि एक दाऊदपुर मुहल्ले से एक व्यक्ति शराब लेकर जा रहा है ।इस सूचना के आधार पर छापेमारी कर पुलिस दाऊदपुर मुहल्ले के पास से शराब कारोबारी को पकड़ा गया ।उसके पास से 50 लीटर देसी शराब बरामद किया गया है ।गिरफ्तार शराब कारोबारी के खिलाफ नामजद प्राथमिकी दर्ज की गई है ।और शुक्रवार को उसे जेल भेजा दिया गया है।

सादिकपुर में नाला निर्माण की गति धीमी होने से घायल हो रहे लोग

पथ निर्माण विभाग का विरोध, वार्ड कार्यालय पर भी प्रदर्शन

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

पथ निर्माण विभाग के द्वारा शेरशाह रोड के सादिकपुर में नाला निर्माण में खासा धीमी गति से काम किया जा रहा है। उस पर से अनियमितता का आलम यह है कि निर्माण सामग्री में भी घालमेल किया जा रहा है। काम धीमा और गुणवत्तापूर्ण नहीं होने के कारण स्थानीय लोगों में आक्रोश है। लोगों का कहना है कि एक तो नाला की खुदाई करने के बाद गंदे पानी के बहाव को घुमा दिया गया है। उस पर से गड्ढा करने के बाद काफी दिनों तक यूं ही छोड़ दिया जाता है। जिस दूरी में गड्ढा कर छोड़ा जाता है, उस दूरी में रहे दुकानदारों एवं मकान में रह रहे लोगों को आने-जाने में परेशानी का सामना करना पड़ता है। लोगों की दुकानदारी भी खासा प्रभावित हो रही है। ऐसे में लोग नाला को फांद कर आने और जाने के दौरान लगातार चोटिल होकर घायल हो रहे हैं। मगर काम कर रही एजेंसी व इंजीनियरों इससे कोई मतलब नहीं है। आक्रोशित दुकानदारों ने शुक्रवार को इसे लेकर प्रदर्शन किया। साथ ही कहा कि आए दिन लोग दुर्घटना के शिकार हो रहे हैं। प्रदर्शन में शामिल प्रवीण कुमार, अजय कुमार, सुनील केसरी, मनोज कुमार, लल्लू ठठेरा, पंकज गुप्ता आदि ने कहां की गुणवत्तापूर्ण और तेजी के साथ यदि नल का निर्माण नहीं किया गया तो आंदोलन विभाग के कार्यालय का घेराव भी किया जा सकता है। यहां प्रदर्शन करने के बाद पीड़ित लोगों ने वार्ड 57 के वार्ड कार्यालय में भी गए और वहां आक्रोश का इजहार करते हुए प्रदर्शन भी किया। यहां मौजूद पार्षद गायत्री देवी के प्रतिनिधि राजू गुप्ता ने कहा कि स्थानीय विधायक सह बिहार विधानसभा अध्यक्ष नंदकिशोर यादव से बात कर काम की गुणवत्ता और तेजी से काम कराए जाने को लेकर बात करेंगे। साथ ही पथ निर्माण विभाग के अभियंता से भी बात की जाएगी।

अग्निवीर कांड के आरोपित गिरफ्तार

प्रात :किरण संवाददाता

मसौढ़ी !पुलिस अग्निवीर कांड के एक आरोपी को दबोच लिया है ।उक्त आरोपी को उसके घर से ही पकड़ा गया है ।गिरफ्तार आरोपी धनरूआ थाना क्षेत्र के पथरहट गांव निवासी सुधीर सिंह के पुत्र हर्ष कुमार में है। मसौढ़ी थाना में कांड संख्या 358/22 दर्ज है। जिसमें यह फरार चल रहे थे।

जमीनी विवाद में फायरिंग के मामले में पुलिस ने चार को गिरफ्तार कर न्यायिक हिरासत में भेजा

प्रात :किरण संवाददाता

दानापुर। थाना के शाहपुर थाना क्षेत्र के अंतर्गत बीते रात नीतीश आहर सिकंदरपुर मार्ग में जमीन विवाद को लेकर कई गयी फायरिंग मामले मे पुलिस ने कार्रवाई करते हुए गिरफ्तार चारो को न्यायिक हिरासत मे भेज दिया। पुलिस ने गिरफ्तार रंजीत कुमार, अनी सिंह, आदित्य सिंह और सरला कुमार से पुछताछ के बाद कार्रवाई की। बताया जाता है कि नीतीश आहर सिकंदरपुर मार्ग पर एक 22 कट्ठा जमीन पर खरंजारोड के रहने वाले कमलेश कुमार बाउंड्री करा रहे थे। जिसका विरोध करने देर रात 2 बाइक पर सवार 5 लोग पहुंच गये और दहशत फैलाने को लेकर फायरिंग करने लगे। सूचना पर पहुंची पुलिस ने भाग रहे 4 लोगो को गिरफ्तार किया। जबकि एक अंधेरा का फायदा उठा भागने मे कामयाब हो गया। जिसकी गिरफ्तारी को लेकर पुलिस छापेमारी में जुटी रही। कमलेश कुमार ने बताया कि अपने जमीन का घेराबंदी करा रहे थे। जो मां के नाम पर है। इस बीच रात मे दो बाइक पर पांच लोग पहुंचे और फायरिंग करने लगे। उन लोगो ने 10 राउंड फायरिंग की। किसी तरह हम लोग भाग कर अपनी जान बचाये। सूचना पर पहुंची पुलिस ने फायरिंग कर रहे चार अपराधियों को गिरफ्तार कर लिया। जबकि एक अपराधी मौके से फरार हो गया ।जमीन पर काम कराते लोग। शाहपुर थानाध्यक्ष मनीष कुमार आनंद ने कहा कि जमीन विवाद को लेकर गोलीबारी की घटना हुई है। जिसमें चार अपराधियों को एक पिस्टल, दो देसी कट्टा, चार जिंदा कारतूस, दो मोबाइल और दो बाइक के साथ गिरफ्तार किया गया है। घटना स्थल 5 खोखा बरामद किया गया है। फरार आरोपी की गिरफ्तारी को लेकर कार्रवाई की जा रही है।

इबरार रजा प्रदेश कांग्रेस के महासचिव बनाए गए

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

प्रदेश कांग्रेस अल्पसंख्यक विभाग की नई कमेटी घोषित की गई। अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी अल्पसंख्यक विभाग के अध्यक्ष और राज्यसभा सांसद इमरान प्रतापगढ़ी ने बिहार प्रदेश अल्पसंख्यक विभाग के अध्यक्ष उमेर खान की नई कमेटी को अनुमोदित कर दिया है।

नवगठित कमेटी में पटना सिटी निवासी कांग्रेस के वरिष्ठ नेता एडवोकेट इबरार रजा को प्रदेश कांग्रेस अल्पसंख्यक विभाग का महासचिव नियुक्त किया गया है। श्री रजा युवा कांग्रेस प्रदेश डेलीगेट, पटना महानगर जिला कांग्रेस कमेटी में उपाध्यक्ष, मुख्य प्रवक्ता और पटना महानगर अध्यक्ष (अल्पसंख्यक विभाग) प्रवक्ता बिहार प्रदेश कांग्रेस (अल्पसंख्यक विभाग) भी रहे हैं।

वे सामाजिक संगठनों से जुड़कर विभिन्न मुद्दों, सामाजिक सौहार्द, हिदू-मुस्लिम एकता और वंचित वर्गों के उत्थान के लिए काम करते रहे हैं।

उन्हें बधाई देने वालों में कांग्रेस विधायक दल के नेता डॉ शकील अहमद खान, पटना महानगर अध्यक्ष शशि रंजन, डॉ अंशुल अभिजीत, फजल इमाम मालिक, प्रवीण भगत, सुमित कुमार सन्नी, सोनू अग्रवाल, प्रखंड अध्यक्ष शमीम अख्तर, अभय जायसवाल, संजीत यादव, सुजीत कसेरा, पंकज पुजारी, फकीरा यादव, शाह फैजूर रहमान, मो माहिउद्दीन, ताजिफ अख्तर आदि हैं।

गुरु गोविंद पथ से तोड़ हटाया गया रोड डिवाइडर, एसडीओ ने दिया था आदेश

स्थानीय लोगों ने ली राहत, लगातार हो रही थी दुर्घटना

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

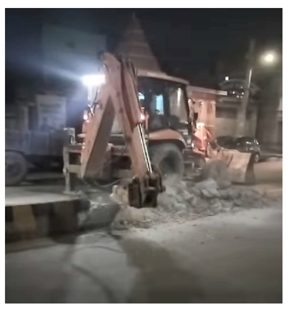

गुरु गोविंद सिंह पथ के चौकशिकारपुर टीओपी के सामने और इसके थोड़ा उत्तर की ओर दो रोड डिवाइडर बना था। यह वाहन चालकों के लिए लगातार खतरा बना हुआ था। आए दिन लोग इस डिवाइडर से टकरा कर घायल भी हो रहे थे और वाहन भी क्षतिग्रस्त हो रहा था। नतीजतन सिटी एसडीओ सत्यम सहाय ने पथ निर्माण विभाग के अभियंता को पत्र भेजकर दोनों डिवाइडर के साथ ही चौकशिकारपुर आरोपी के नीचे भी रहे रोड डिवाइडर को तोड़कर हटाने का आदेश दिया था। इस आलोक में गुरुवार की देर रात जेसीबी की मदद से डिवाइडर को ध्वस्त कर दिया गया। इससे खासकर स्थानीय लोगों ने राहत की सांस ली है। इसके पीछे कारण यह रहा कि पथ निर्माण विभाग के द्वारा सड़क के बीचो-बीच कुछ दूरी में रोड डिवाइडर बना तो दिया गया, मगर उसका रंग-रोगन और रिफ्लेक्टर लगाने का काम नहीं किया। नतीजा तेज बारिश और कम रोशनी में वाहन चालक इस रोड डिवाइडर से टकरा कर घायल हो रहे थे, तो वाहन भी क्षतिग्रस्त हो रहा था। प्रकाश पर्व को लेकर पटना साहिब स्टेशन के सभाकक्ष में रेल एसपी के द्वारा विभिन्न विभागों की समन्वय बैठक का आयोजन विधि-व्यवस्था को लेकर किया गया था। इसमें सिटी एसडीओ सत्यम सहाय भी मौजूद थे। जब बात इस समस्या पर उठाई गई, तब खुद एसडीओ ने कहा कि वह अपने परिचित को पटना साहिब स्टेशन से रिसीव कर लौट रहे थे, तो गुरु गोविंद सिंह पथ में रहे रोड डिवाइडर की चपेट में आते-आते बचे। उन्होंने पथ निर्माण विभाग के कार्यपालक अभियंता को पत्र भेज कर निर्देश दिया है कि दोनों डिवाइडर को तोड़कर हटा दिया जाए। इसका कोई औचित्य नहीं है। सिटी एसडीओ को बताया गया कि चौकशिकारपुर आरओबी के नीचे थोड़ा पश्चिम भी एक डिवाइडर बना हुआ है। उसका भी रंग-रोगन नहीं हो पा रहा है और न ही कोई रिफ्लेक्टर लगाए गया है। इस पर उनका कहना था कि तीनों को ध्वस्त करा दिया जाएगा। वार्ड 62 की पार्षद तारा देवी व उनके प्रतिनिधि उमेश मेहता ने कहा कि वह लगातार इस संबंध में स्थानीय विधायक सह बिहार विधानसभा के अध्यक्ष नंदकिशोर यादव, पथ निर्माण विभाग के अभियंता और प्रशासन को पत्र भेज कर उक्त डिवाइडर को तोड़े जाने के [illegible] रहे थे। अंततः यह कार्य सफल हुआ। अब पथ निर्माण विभाग तोड़े गए डिवाइडर के हिस्से को जल्द से समतल कर पीचिंग करने का काम करा दे।

नगर मंडल अध्यक्ष पद के चुनाव को लेकर भाजपा कार्यकर्ताओं ने की बैठक

प्रात :किरण संवाददाता

मसौढ़ी !भाजपा कार्यकताओं ने नगर मुख्यालय स्थित पुनीत ज्ञान मन्दिर स्कूल में शुक्रवार को सहजानंद शर्मा की अध्यक्षता में एक बैठक आयोजित की,जिसमें नगर मंडल अध्यक्ष पद चुनाव के लिए चर्चा की गई.जिसमें कार्यकताओं ने विचार विर्मश कर निर्णय लिया कि नगर मंडल का चुनाव बिहार प्रदेश भाजपा अध्यक्ष के द्वारा भेजा गया। प्रर्यवेक्षक के द्वारा ही मसौढ़ी में नगर मंडल अध्यक्ष पद का चुनाव होगा ।उनके द्वारा ही चुनाव का नगर मंडल मसौढ़ी के कार्यकताओं का मान्य होगा ।इस बैठक में विजय सिंह यादव उपेंद्र केशरी शिवशंकर पांडेय उर्फ मंटू बाबा भाजपा के वरिष्ठ नेता विश्वनाथ केशरी सचिदानंद सुधाकर संजय चंद्रवंशी नागेंद्र चंद्रवंशी रजनीश भारती अजय शर्मा अनीता देवी सुनीता देवी सहित अन्य कार्यकताओं उपस्थित रहे।

सेवानिवृत्त को अवधि विस्तार मिलने से दूसरे की मेधा होती है कुंठित

मामला एनएमसीएच के अधीक्षक डॉ बिनोद सिंह के अवधि विस्तार की चर्चा का

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

नालंदा मेडिकल कॉलेज अस्पताल के अधीक्षक की कुर्सी पर कौन काबिज होंगे? क्या वर्तमान सेवानिवृत हो रहे अधीक्षक डॉप्रो बिनोद कुमार सिंह को अवधि विस्तार मिलेगा? इन दिनों एनएमसीएच में चिकित्सक, नर्सिंग स्टाफ व कर्मियों के बीच यह चर्चा का केंद्रबिंदु बना है। इसमें तरह-तरह की बातें हवा में तैर रही हैं। विदित हो कि अधीक्षक के रूप में पदस्थापित डॉ बिनोद कुमार सिंह शिशु रोग विभाग में भी चिकित्सक हैं। इनका सेवानिवृत्ति इसी माह हो रहा है। हालांकि मीडिया से बातचीत में और उनके शुभचिंतक भी इस बात की चर्चा करते नहीं अघाते हैं कि उनकी पैठ स्वास्थ्य मंत्री से लेकर अधिकारियों से बेहतर है। इसलिए सेवानिवृत्ति के बाद भी इन्हें अवधि विस्तार मिलेगा और अधीक्षक के रूप में वे लगातार कार्य करते रहेंगे। हालांकि दूसरी चर्चा यह भी है कि इन्हें अवधि विस्तार नहीं मिल पाएगा। उनकी जगह किसी वरीय चिकित्सक को ही अधीक्षक बनाया जा सकता है या फिर अन्य मेडिकल कॉलेज अस्पताल से किसी को अधीक्षक चर्चा यहां तक है कि डॉक्टर बिनोद कुमार सिंह के अवधि विस्तार को लेकर फाइल स्वास्थ्य विभाग में दौड़ चली है। नए साल के जनवरी के पहले या दूसरे सप्ताह में पत्र जारी होने की पूरी संभावना है। हालांकि एनएमसीएच के शिशु रोग विभाग की विभागाध्यक्ष डॉप्रो अलका सिंह और सर्जरी विभाग के विभागाध्यक्ष डॉप्रो पीडी वर्मा, ईएनटी के विभागाध्यक्ष डॉक्टर सत्येंद्र शर्मा, गायनी की डॉप्रो दीप्ति राय, पैथोलॉजी के विभागाध्यक्ष डॉप्रो सीपी जायसवाल आदि के नाम भी अधीक्षक के पद के लिए जोर-शोर से लिया जा रहा है। डॉ बिनोद कुमार सिंह ने डॉक्टर अलका सिंह से ही अधीक्षक का प्रभार लिया था। अस्पताल परिसर में चिकित्सकों, नर्सिंग स्टाफ व कर्मियों के बीच आम चर्चा यह है कि यदि पद पर डॉ बिनोद कुमार सिंह को अवधि विस्तार मिलता है, तो यह गलत होगा। उन्होंने लगातार दो बार अधीक्षक की कुर्सी संभाली है। अब किसी और को मौका दिया जाना चाहिए। ऐसे में उस पद के योग्य लोगों में कुंठा की भावना जागृत होती है। कारण कि लंबी सेवा देने के बाद प्रोफेसर के पद पर काम कर रहे लोग भी अपनी प्रोन्नति की उम्मीद लगाए रहते हैं। मुख्यमंत्री और स्वास्थ्य मंत्री के साथ ही स्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों को भी इस ओर ध्यान दिया जाना चाहिए। विदित हो कि पूर्व में इसी अस्पताल के डॉप्रो निर्मल कुमार सिंह, डॉक्टर संतोष कुमार सिंह, डॉक्टर आनंद प्रसाद सिंह, डॉ एके गुप्ता, डॉप्रो शिवकुमारी प्रसाद आदि अधीक्षक के पद पर रह चुके हैं। वहीं उपाधीक्षक के पद पर डॉक्टर अजय कुमार सिन्हा भी कम अवधि के लिए रह पाए हैं। डॉ सिन्हा के बाद इस पद पर शिशु रोग विभाग के डॉक्टर सरोज कुमार फिलहाल उपाधीक्षक के पद पर हैं। एक तरह से कहें, तो शिशु रोग विभाग के ही डॉप्रो बिनोद कुमार सिंह अधीक्षक और डॉ सरोज कुमार उपाधीक्षक के पद पर हैं। अब देखना है कि डॉ बिनोद को अवधि विस्तार मिलता है या फिर इस कुर्सी पर कोई अन्य

मंगल तालाब से निकाला गया 15 टन कचरा

ट्रैश स्किमर से की जा रही शहर के तालाबों की सफाई, छठ के बाद अब हुई सफाई

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

शहर के तालाबों की सफाई एवं सौंदर्यीकरण के लिए पटना नगर निगम द्वारा पहल की जा रही है। गंगा नदी के बाद शहर के तालाबों की विशेष सफाई भी ट्रेश स्कीमर के माध्यम से की जा रही है। गौरतलब है कि 25 दिसंबर से विशेष अभियान के तहत ट्रैश स्किमर द्वारा मंगल तालाब की निरंतर सफाई की जा रही है। अब तक लगभग 15 टन कचरा मंगल तालाब से निकाला जा चुका है। गौरतलब है कि पटना नगर निगम द्वारा यह सुनिश्चित किया जा रहा कि जो भी वाटर बॉडीज है, उनकी सफाई लगातार की जाए। इसी कड़ी में मशीनीकृत सफाई के माध्यम से इन्हें स्वच्छ बनाए रखने का प्रयास किया जा रहा है। गंगा घाटों के पानी की सफाई के साथ शहर के प्रमुख तालाबों की भी सफाई की जा रही है। मंगल तालाब से इसकी शुरूआत की गई है। इसके बाद सभी अंचल में इसे भेजा जाएगा। सवाल यह है कि कार्तिक छठ के दौरान मंगल तालाब की सफाई की गई थी। इसके बाद अब जबकि प्रकाश पर्व शुरू हो रहा है, तब इसकी सफाई करने की सुध निगम प्रशासन ने ली है। यदि तालाब से 15 टन कचरा निकल गया है तो जाहिर सी बात है कहीं ना कहीं इसमें लापरवाही है। समय पूर्व यदि इसकी सफाई कराई जाती, तो शायद इतना कचरा न निकला होता। नगर निगम के द्वारा मंगल तालाब के चारों ओर सड़क व तालाब के किनारा की सफाई के लिए सफाई मित्र और पर्यवेक्षक की नियुक्ति भी की गई है। आखिर इतने लंबे समय से पानी के ऊपर जमे काई और किनारे में रहे गंदगी की सुध आखिर छठ के बाद क्यों याद आई, जबकि गंगा नदी में लगातार इस मशीन की मदद से सफाई अभियान चलाए जाते देखा जा रहा है। यही नहीं, अब भी मंगल तालाब के चारों ओर किनारे पर देखा जाए, तो गंदगी दिख जाएगी।

आग लगने से किसान के चार बीघा फसल जलकर हुए राख

मसौढ़ी ।भगवानगंज थाना क्षेत्र के पंसारी गांव में गुरुवार की रात अचानक धान भरे नेवारी में आग लगने से पंसारी गांव निवासी किसान बलीराम यादव के चार बीघा फसल जलकर राख हो गए। इस घटना में लगभग पांच से सात लाख रुपये की क्षति का अनुमान लगाया जा रहा है ।इस घटना के बाद पीड़ित परिवार काफी सदमे में है। पीड़ित किसान ने बताया खलिहान में अचानक आग लगने की शोर सुनकर पहुंचे तो देखा कि पूंज जल रहा है ।आग की लपट देख लोग बाल्टा, तसला लेकर दौड़ पड़े। बोरिंग चलाकर आग पर काबू पाने की कोशिश गयी लेकिन पुंज जलने से नहीं बचाया जा सका। काफी मशक्कत के बाद आग पर काबू पाकर अन्य पुंज को जलने से बचाया गया है। पीड़ित किसानों ने बताया कि आज्ञात घटना का कारण पता नहीं चल सका है।

कंगन घाट पर बनेगा पांच मंजिला मल्टी वाहन पार्किंग : विकास आयुक्त

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

कंगन घाट व तख्तश्री हरिमंदिर जी पटना साहिब के विकास की योजना पर कार्य किया जाएगा। इसे लेकर शुक्रवार को विकास आयुक्त प्रत्यय अमृत पटना साहिब पहुंचे। उनके साथ पर्यटन विभाग के सचिव लोकेश कुमार सिंह, पर्यटन विकास निगम के प्रबंध निदेशक नंदकिशोर और सेवानिवृत एमडी केशव रंजन भी थे। निरीक्षण के दौरान अधिकारियों ने तख्तश्री हरिमंदिर जी पटना साहिब भी गए। यहां दरबार तख्तश्री कमेटी के अध्यक्ष जगजोत सिंह सोही, महासचिव इन्द्रजीत सिंह, कनीय उपाध्यक्ष, सुमित सिंह कलसी, अधीक्षक दलजीत सिंह, परविन्द सिंह विकास आयुक्त ने बताया कि कंगन घाट पर मल्टी लेवल पार्किंग का निर्माण किया जाएगा। यह पांच मंजिला होगा। कंगन घाट पर स्थित पर्यटन सुविधा केंद्र हरिमंदिर जी प्रबंधक कमेटी के जिम्मे होगा। कंगन के आकार का निशान साहिब भी कंगन घाट पर लगाया जाएगा। तख्तश्री हरिमंदिर जी पटना साहिब के अशोक राजपथ से लगते मुख्य द्वार पर पर्यटन सूचना केन्द्र का विस्तार होगा। वहां पर एलईडी से प्रकाश पुंज के संबंध में जानकारी दी जाएगी। जीविका व बिहार के हस्तशिल्प का काउंटर लगाने की भी योजना है। इसके अलावा भी अन्य विकास कार्य कराए जाएंगे। कंगन घाट से चौक थाना मोड़ के बीच सड़कों को और चौड़ीकरण कराने की योजना

अब घरों के छत और अपार्टमेंट में भी होगी फल, फूल और सब्जी की खेती : मंगल

शहरी क्षेत्रों में फार्मिंग को बढ़ावा देने के लिए बनाई गई फार्मिंग बेड योजना

- पहले फेज में पटना, गया, भागलपुर और मुजफ्फरपुर में चलाई जाएगी योजना

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

सूबे के कृषि मंत्री मंगल पांडेय ने मीठापुर स्थित कृषि भवन में विभागीय अधिकारियों के साथ एक समीक्षा बैठक की। बैठक में उन्होंने चालू वित्तीय वर्ष में राज्य में चलाई जा रही विभिन्न कृषि योजनाओं की समीक्षा की और संबंधित पदाधिकारियों को आवश्यक दिशा - निर्देश दिए। श्री पांडेय ने मौजूद पदाधिकारियों से चालू वित्तीय वर्ष में चलाई जा रही बागवानी विकास कार्यक्रमों के प्रगति की अद्यतन जानकारी ली। कृषि विभाग द्वारा राज्य में चल रही उद्यानिक फसलों की व्यवसायिक खेती को बढ़ावा देने से संबंधित योजना, वित्तीय वर्ष 2024-25 में राज्य योजना अंतर्गत मखाना विकास योजना, मधुमक्खी पालन एवं मधु उत्पादन कार्यक्रम योजना, मुख्यमंत्री बागवानी मिशन अंतर्गत आम विकास योजना समेत कई योजनाओं की समीक्षा कृषि मंत्री ने की। श्री पांडेय ने कहा कि राज्य के हर किसानों तक कृषि विभाग द्वारा चलाई जा रही योजनाओं को पहुंचाना हमारा लक्ष्य है, ताकि हमारे राज्य के किसान खुशहाल और समृद्ध बन सकें। कृषि योजनाओं का पूरा लाभ राज्य के किसानों को मिले इसके लिए कृषि विभाग लगातार प्रयत्नशील है। उन्होंने राज्य स्कीम मद से छत पर बागवानी अंतर्गत गमलों एवं फार्मिंग बेड योजना पर विशेष जोर देते हुए कहा कि शहरी क्षेत्रों में घर के छत पर फल, फूल एवं सब्जी की उपज को बढ़ावा देने के उद्देश्य से चलाई जा रही इस योजना की जानकारी ज्यादा से ज्यादा लोगों तक पहुंचाई जाए। लोगों तक इसका लाभ पहुंचाने के लिए सूबे के चार जिलों में कम कीमत में पौधों समेत गमलों की आपूर्ति सुनिश्चित की जाए। योजना का लाभ राजधानी के पटना सदर, दानापुर, फुलवारी एवं खगौल तथा भागलपुर, गया एवं मुजफ्फरपुर जिले के शहरी क्षेत्र के लोग फिलहाल ले सकते हैं।

छत पर 300 वर्ग फीट जगह हो उठा सकते हैं लाभ

इस योजना में वैसे व्यक्ति जिनके पास अपना घर हो अथवा अपार्टमेंट में फ्लैट हो और जिसके छत पर 300 वर्ग फीट जगह हो लाभ उठा सकते हैं। वहीं स्वयं के मकान की स्थिती में छत पर 300 वर्ग फीट खाली स्थल जो किसी भी हस्तक्षेप से स्वतंत्र हो तथा अपार्टमेंट की स्थिती में अपार्टमेंट की पंजीकृत सोसाईटी से अनापत्ति प्रमाण पत्र प्राप्त करने पर इस योजना का लाभ उठाया जा सकता है। योजना में प्रति इकाई 300 वर्ग फीट का इकाई लागत 48 हजार 574 एवं अनुदान 75 प्रतिशत अर्थात 36430.50 तथा शेष 12143.50 रुपए लाभार्थी द्वारा देय होगा। कृषि मंत्री ने समीक्षा बैठक में नलकूप योजना, बीज मसाले एवं सहजन योजना, राज्य योजना अंतर्गत सब्जी विकास योजना तथा प्याज भंडारण संरचना और मखाना भंडार गृह निर्माण सहित कई योजनाओं की भी समीक्षा की। जलवायु अनुकूल कृषि कार्यक्रम, हाल ही में शुरू की गई ड्रोन दीदी योजना, वर्षा आधारित कृषि योजनाओं का पौधा संरक्षण एवं उपादान समेत बिहार राज्य जैविक मिशन अंतर्गत चल रही योजनाओं के प्रगति की भी जानकारी कृषि मंत्री ने ली। वहीं निजी सिंचाई कूप निर्माण योजना प्रधानमंत्री कृषि योजना सहित अन्य कल्याणकारी कृषि योजनाओं का युद्ध स्तर पर कार्यान्वयन का निर्देश कृषि मंत्री ने मौजूद पदाधिकारियों को दी। समीक्षा बैठक में कृषि विभाग के सचिव संजय अग्रवाल, बिहार राज्य बीज निगम के एमडी आलोक रंजन घोष, विशेष सचिव वीरेंद्र यादव, कृषि मंत्री के आप्त सचिव अमिताभ सिंह सहित कई अधिकारी और पदाधिकारी मौजूद रहे।

बिहार के समग्र विकास के शिल्पकार हैं नीतीश कुमार : राजीव

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

जदयू के राष्ट्रीय सचिव सह राष्ट्रीय प्रवक्ता राजीव रंजन प्रसाद ने कहा कि मुख्यमंत्री नीतीश कुमार बिहार के समग्र विकास के शिल्पकार हैं। उन्होंने कहा कि लालू प्रसाद यादव और राबड़ी देवी के शासनकाल के दौरान विकास के सभी पैमाने पर पिछड़े बिहार को वर्तमान समय में विकास की बुलंदियों पर पहुंचाने का श्रेय मुख्यमंत्री नीतीश कुमार को जाता है। पार्टी के राष्ट्रीय प्रवक्ता ने कहा कि माननीय मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने बिहार में सड़कों का जाल बिछाया। लालू प्रसाद यादव और राबड़ी देवी के शासनकाल 2004-05 में जहां पथ निर्माण विभाग का व्यय मात्र 362.174 करोड़ रुपए था, वो वित्तीय वर्ष 2023-24 में 17 गुणा बढ़कर 6403.38 करोड़ हो गया। राज्य में सड़कों की कुल लंबाई की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि वर्तमान में राज्य में राष्ट्रीय उच्च पथ की लंबाई 6140 किलोमीटर, राज्य उच्च पथ की लंबाई 3638 किलोमीटर एवं वृहद जिला पथ की लंबाई 16 हजार 181 किलोमीटर है। साल 2005 से तुलना करते हुए उन्होंने कहा कि उस समय राज्य उच्च पथ दो लेन की कुल लंबाई मात्र 51.67 किलोमीटर थी जबकि मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के शासनकाल में राज्य उच्च पथ की लंबाई 3638 किलोमीटर में से 2588 किलोमीटर दो लेन, 362 किलोमीटर दो लेन से अधिक हैं एवं शेष 747 किलोमीटर दो लेन से कम है जिसकी दो लेन मानक संरचना में उन्नयन की कार्रवाई प्रगति पर है। उन्होंने कहा कि राज्य में बड़े पैमाने पर उत्कृष्ट सड़कों, पुल-पुलियों, वैकल्पिक मार्गों का निर्माण कराया गया है, जिसके चलते बिहार की आम जनता आज मात्र 5 घंटे में बिहार के किसी कोने से राजधानी पटना पहुंचने में कामयाब हो पा रही है। उन्होंने कहा कि आज ग्रामीण क्षेत्रों में भी सभी जगहों पर बारहमासी सड़कों का जाल बिछाया गया है। गांवों को बारहमासी संपर्कता प्रदान करते हुए इसे मुख्य सड़क से जोड़ने के प्रति मुख्यमंत्री नीतीश कुमार सरकार की प्रतिबद्धता का पता इस बात से पता चलता है कि ग्रामीण कार्य विभाग का जो बजट साल 2007-08 में 1389.53 करोड़ रुपए था वो साल 2023-04 में बढ़कर 13,138.69 करोड़ रुपया हो गया। राज्य सरकार के संकल्पों के चलते अबतक कुल 1 लाख 16 हजार 782 किलोमीटर ग्रामीण सड़कों का निर्माण पूरा किया गया है तथा 12 हजार 778 किलोमीटर ग्रामीण सड़कों का कार्य प्रगति पर है।

नीतीश कुमार की शागिर्दी के लिए सभी बेचैन: नवल

पटना। नीतीश कुमार में कुछ तो खास है जिसके चलते सब उनकी शागिर्दी के लिए बेचैन रहते हैं, उनकी रणनीति और जनाकर्षण के आगे नतमस्तक रहते हैं, खासकर राजद के लोग। इसलिए कि नीतीश उस पारसमणी की तरह हैं जिसके संपर्क में आने पर लोहा भी सोना बन जाता है। सारे बिहारवासी जानते हैं कि नीतीश कुमार की पूंजी कोई जातीय समीकरण या सांप्रदायिक ध्रुवीकरण नहीं है बल्कि असली पूंजी विकास और सुशासन के प्रति उनकी प्रतिबद्धता है। उनकी ईमानदारी और उनकी नीयत है। लोगों ने एक निःस्वार्थ और निर्लिप्त संत की तरह उन्हें बिहार को आगे ले जाने की धुन में मगन देखा है। लालू यादव की तरह न धन जोड़ने की लिप्सा न परिवार को आगे बढ़ाने की कोई ललक। इसीलिए नीतीश कुमार को बिहार की सभी जातियों और वर्गों का समर्थन है।

पूर्व पीएम डॉ. मनमोहन सिंह के निधन पर भाजपा ने जताया शोक

देश ने एक दूरदर्शी नेता और कुशल अर्थशास्त्री खो दिया है : दिलीप

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश कार्यालय में शुक्रवार को पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह जी को भावपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित की गई। इस अवसर पर प्रदेश अध्यक्ष एवं राजस्व तथा भूमि सुधार मंत्री डॉ. दिलीप जायसवाल, उपमुख्यमंत्री सम्राट चौधरी, विजय सिन्हा एवं बिहार भाजपा के अन्य पदाधिकारियों ने मौन व्रत धारण कर उनके योगदान को स्मरण किया। डॉ. दिलीप जायसवाल ने कहा, डॉ. मनमोहन सिंह जी का निधन देश के लिए अपूरणीय क्षति है। वह एक कुशल अर्थशास्त्री, विद्वान और विनम्र राजनेता थे, जिन्होंने देश की प्रगति में अहम भूमिका निभाई। उनकी सादगी, विद्वता और कर्तव्यनिष्ठा हमेशा प्रेरणादायक रहेंगी। डॉ. जायसवाल ने दिवंगत आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना करते हुए शोक संतप्त परिवार के प्रति अपनी संवेदनाएं व्यक्त कीं। उन्होंने कहा, डॉ. मनमोहन सिंह जी का जीवन राष्ट्र सेवा और आर्थिक सुधारों का अद्वितीय उदाहरण है। भाजपा परिवार उनकी महान सेवा और योगदान को हमेशा स्मरण करेगा। इस दौरान उपमुख्यमंत्री सम्राट चौधरी और विजय सिन्हा ने भी पूर्व प्रधानमंत्री के योगदान को याद किया और उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की। भाजपा कार्यकर्ताओं एवं पदाधिकारियों ने राष्ट्रहित में उनके आदर्शों को आत्मसात करने का संकल्प लिया और दो मिनट का मौन रखकर डॉ. मनमोहन सिंह जी के प्रति सम्मान प्रकट किया।

पूर्व पीएम डॉ मनमोहन सिंह के निधन पर राजनीतिक दलों ने जताया शोक

दूरदर्शी नेता और महान अर्थशास्त्री थे मनमोहन सिंह : संजय

देश के पूर्व प्रधानमंत्री डॉ मनमोहन सिंह के निधन पर जदयू के राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष सह राज्यसभा सांसद संजय कुमार झा ने गहरी शोक-संवेदना व्यक्त की। उन्होंने कहा कि डॉ मनमोहन सिंह के निधन की खबर अत्यंत दुखद और देश के लिए अपूरणीय क्षति है। वो एक दूरदर्शी नेता और महान अर्थशास्त्री थे। डॉ सिंह का कुशल नेतृत्व और उनके द्वारा देशहित में किए गए परिवर्तनकारी सुधार हमेशा स्वर्ण अक्षरों में अंकित रहेंगे। आगे उन्होंने कहा कि डॉ सिंह की सरलता और सहजता भावी पीढ़ियों के लिए प्रेरणास्रोत है। ईश्वर से दिवंगत आत्मा की शांति और उनके प्रियजनों को कठिन समय में संबल प्रदान करने की प्रार्थना करते हैं।

देश ने एक महान अर्थशास्त्री को खो दिया है : उमेश

पटना। देश के पूर्व प्रधानमंत्री एवं महान अर्थशास्त्री डॉ मनमोहन सिंह के निधन पर जनता दल यूनाईटेड की ओर से गहरा शोक व्यक्त किया गया। पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष उमेश सिंह कुशवाहा ने शुक्रवार को बयान जारी कर कहा कि डॉ मनमोहन सिंह के रूप में देश ने एक महान अर्थशास्त्री और जनसेवा के प्रति समर्पित नेता को खो दिया है। बतौर वित्त मंत्री भारत के आर्थिक सुधारों में उनकी भूमिका अविस्मरणीय है। प्रधानमंत्री के रूप में भी उन्होंने देश के विकास को नई गति प्रदान की। जदयू परिवार की ओर से मैं परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि दिवंगत आत्मा को अपने श्रीचरणों में स्थान दें एवं शोक संतप्त परिवारजनों को दुख सहन की शक्ति प्रदान करें। शोक व्यक्त करने वालों में मुख्य रूप से विधानपार्षद सह कोषाध्यक्ष ललन कुमार सर्राफ, विधानपार्षद संजय कुमार सिंह उर्फ गांधी जी, प्रदेश महासचिव सह मुख्यालय प्रभारी स्थापना चंदन कुमार सिंह, प्रदेश महासचिव अरूण कुमार सिंह, प्रकोष्ठ प्रभारी, प्रो नवीन आर्य चंद्रवंशी, प्रदेश महासचिव मनीष कुमार एवं वासुदेव कुशवाहा सहित अन्य वरीय नेतागण उपस्थित रहे।

राष्ट्र की प्रगति में उनके योगदान को हमेशा याद रखा जाएगा : श्रवण

पटना। पूर्व प्रधान मंत्री डॉ मनमोहन सिंह के निधन पर ग्रामीण विकास मंत्री श्रवण कुमार ने गहरा शोक व्यक्त किया है। अपने शोक संवेदना में श्रवण कुमार ने कहा है कि स्व मनमोहन सिंह के निधन से मर्माहत हूँ। वे एक सादगी, सौम्यता एवं विनम्रता के प्रतीक थे। दुनिया के प्रतिष्ठित संस्थानों से शिक्षा लेने और सरकार के शीर्ष पदों पर रहने के बाद भी उनका व्यक्तित्व बेहद सरल था। भारतीय रिजर्व बैंक में गवर्नर से लेकर देश के वित्त मंत्री और प्रधान मंत्री के रूप में स्व सिंह ने देश की शासन व्यवस्था में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया। उन्होंने कठिन समय के दौरान भारत की अर्थव्यवस्था के पुनर्निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हुए, भारतीय अर्थव्यवस्था को नयी दिशा दी तथा देश को वैश्विक मंच पर मजबूत किया। राष्ट्र की इस प्रगति में उनके योगदान को हमेशा याद रखा जाएगा। श्रवण कुमार ने आगे बताया कि स्व सिंह जी के निधन से राष्ट्र ने एक महान देशभक्त, एक असाधारण विद्वान, एक अपरंपरागत राजनीतिज्ञ एवं एक प्रख्यात अर्थशास्त्री एवं एक प्रतिष्ठित राजनेता खो दिया है, जिससे राष्ट्र के लिए रिक्तता उत्पन्न हो गई है। मंत्री ने मृतक की आत्मा की शांति हेतु ईश्वर से प्रार्थना की है तथा दुःख की इस घड़ी में शुभचिंतकों एवं परिवार के सदस्यों को धैर्य धारण करने की शक्ति प्रदान करने हेतु ईश्वर से प्रार्थना की है।

आर्थिक उदारीकरण के लिए याद किए जाएंगे मनमोहन सिंह : सम्राट

उप मुख्यमंत्री चौधरी ने पूर्व प्रधानमंत्री के निधन पर शोक व्यक्त किया

पटना। उपमुख्यमंत्री सम्राट चौधरी ने पूर्व प्रधानमंत्री डॉ मनमोहन सिंह के निधन पर संवेदना व्यक्त करते हुए अपने सभी कार्यक्रम स्थगित कर दिए हैं। उन्होंने कहा कि 1990 के दशक में भारतीय अर्थव्यवस्था के उदारीकरण और विकास में निजी क्षेत्र की भूमिका का मार्ग प्रशस्त करने के लिए महान अर्थशास्त्री डाक्टर मनमोहन सिंह का ऐतिहासिक योगदान सदा याद रखा जाएगा। उपमुख्यमंत्री विजय सिन्हा ने जताया शोक पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह के निधन पर उपमुख्यमंत्री विजय सिन्हा ने व्यक्त की संवेदना बिहार के उपमुख्यमंत्री विजय सिन्हा ने पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह के निधन पर गहरा शोक व्यक्त करते हुए कहा कि देश ने एक महान अर्थशास्त्री और दूरदर्शी राजनेता खो दिया है। श्री सिन्हा ने कहा, डॉ. मनमोहन सिंह का जीवन सादगी, ज्ञान और सेवा का प्रतीक था। उन्होंने देश की आर्थिक प्रगति और नीतिगत स्थिरता में जो योगदान दिया, उसे हमेशा याद रखा जाएगा। उनकी सहजता और कर्मठता हर व्यक्ति के लिए प्रेरणा है। उनका निधन राष्ट्र के लिए अपूरणीय क्षति है। डिप्टी सीएम ने दिवंगत आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना की और शोक संतप्त परिवार के प्रति अपनी गहरी संवेदनाएं व्यक्त कीं।

देश ने एक कर्मठ व ईमानदार नेता खो दिया : लालू

पटना। बिहार प्रदेश राष्ट्रीय जनता दल के प्रवक्ता एजाज अहमद ने बताया कि पूर्व प्रधानमंत्री डॉ मनमोहन सिंह के निधन का समाचार सुनकर बिहार प्रदेश राष्ट्रीय जनता दल के अध्यक्ष जगदानंद सिंह के निदेशार्नुसार पार्टी का झंडा उनके सम्मान में आधा झुका दिया गया और शोक सभा करके उनके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की गई। राष्ट्रीय जनता दल के राष्ट्रीय अध्यक्ष लालू प्रसाद ने कहा कि डॉ मनमोहन सिंह जी के नेतृत्व वाली यूपीए सरकार के कार्यकाल में रेलवे का कायाकल्प मैंने किया और उसमें उनका पूरा सहयोग मिला। रेल यात्रियों की सुविधा का ध्यान रखते हुए नई ट्रेन दी और रेलवे का किराया कम करने के साथ साथ यात्री सुविधाओं के लिए जो भी कदम उठाए, उसमें मनमोहन सिंह जी का पूरा-पूरा समर्थन और साथ मिला। उनके कार्यकाल में साथ बिताए हुए संस्मरण और बातों को याद करते हुए लालू प्रसाद ने काफी दुखी मन से कहा कि देश ने एक कर्मठ, ईमानदार और विकास की सोच रखने वाला नेता खो दिया है,यह हमारे लिए व्यक्तिगत रूप से बड़ी क्षति है। नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी प्रसाद यादव ने कहा कि उनके विजन और सोच के सभी कायल थे और मनमोहन सिंह जी हमेशा देश में विकास के आयाम को मजबूत होते हुए देखना चाहते थे और सभी वर्गों और क्षेत्र को समान रूप से आगे बढ़ने का मौका उन्होंने अपने कार्यकाल में दिया।

प्रदेश कांग्रेस मुख्यालय पर श्रद्धांजलि सभा का हुआ आयोजन

- प्रदेश कांग्रेस नेताओं ने माल्यार्पण अर्पित कर दी श्रद्धांजलि

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

पूर्व प्रधानमंत्री एवं कांग्रेस पार्टी के वरिष्ठ नेता डॉ मनमोहन सिंह के निधन पर प्रदेश कांग्रेस मुख्यालय सदाकत आश्रम में श्रद्धांजलि सभा का आयोजन कर कांग्रेस नेताओं द्वारा उनके तस्वीर पर पुष्पांजलि अर्पित कर शोक व्यक्त किया गया। श्रद्धांजलि सभा की अध्यक्षता पूर्व प्रदेश अध्यक्ष प्रो रामजतन सिन्हा ने की। श्रद्धांजलि सभा में प्रदेश कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष प्रो रामजतन सिंहा ने कहा कि मनमोहन सिंह को उनके सामाजिक, राजनीतिक और वैश्विक योगदान के लिए कई प्रतिष्ठित पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। 2004 से 2014 तक वें देश के प्रधानमंत्री के रूप में लगातार दो बार अपनी जिम्मेदारियों का बखूबी निर्वहन किए। इस दौरान देश को कई बार आर्थिक उलझनों से बाहर निकाला। इससे पहले उन्होंने साल 1991 में, पूर्व प्रधानमंत्री पीवी नरसिम्हा राव की सरकार में वित्त मंत्री के रूप में भारतीय अर्थव्यवस्था को नया रूप दिया। उन्होंने उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण की नीतियों को अपनाया। इन नीतियों ने देश की अर्थव्यवस्था को वैश्विक बाजार के लिए खोल दिया। पद्म विभूषण से सम्मानित राजनेता के व्यक्तित्व से सभी को प्रेरणा लेने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि वरिष्ठ नेता राहुल गांधी ने उन्हें अपना मार्गदर्शक बताया और उनके निधन को देश के लिए अपूरणीय क्षति बताया। पुष्पांजलि के पश्चात कांग्रेस नेताओं ने दो मिनट का मौन दिवंगत प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह के लिए रखा और अपनी संवेदनाएं प्रकट की। पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह के निधन पर प्रदेश कांग्रेस मुख्यालय में आयोजित श्रद्धांजलि सभा में प्रदेश कांग्रेस कमिटी के पूर्व अध्यक्ष प्रो0 रामजतन सिन्हा के अलावे पूर्व मंत्री अफाक आलम, संजीव प्रसाद टोनी, प्रेमचन्द्र मिश्रा, ब्रजेश पाण्डेय, निर्मल वर्मा, राजेश राठौड़, लाल बाबू लाल, ब्रजेश प्रसाद मुनन, डा. अजय कुमार सिंह, विनय वर्मा, प्रो. अम्बुज किशोर झा, आनन्द माधव, डा. संजय यादव, कुमार आशीष, ज्ञान रंजन, डॉ. स्नेहाशीष वर्द्धन पाण्डेय, निधि पाण्डेय, शशि रंजन, मंजीत आनन्द साहू, रीता सिंह, राज छविराज, मृणाल अनामय, सुदय शर्मा, मोहम्मद कामरान, सुधीर शर्मा, हीरा सिंह बग्गा ,रवि कुमार, विमलेश तिवारी, निशांत करपटने सहित अन्य कांग्रेसजन मौजूद थे।

प्रेम बिना परम धाम मिलना असंभव है : प्रकाश नंद महाराज

पटना। श्रीकृष्ण प्रणामी मंदिर सेवा धाम मेरता राजस्थान दुरा आयोजित एकता महोत्सव एवं महामति प्राण नाथ जी महाराज 350वष पूर्व आगमन पर 108तारतम सागर पाठ महायज्ञ एवं श्री भागवत कथा महायज्ञ एवं वाणी कथा सुबह चर्चा करते हुए महंत श्री108महत प्रकाश नन्द महाराज ने कहा प्रेम बिना परम धाम मिलना असंभव है। दुसरे पहर कथा सुनाते महंत सुरेश चंद्र शास्त्री महाराज ने कहा कि राष्ट को नाश मुक्त समाज बनाएं। हम सभी को नशा मुक्त समाज बनाने का संकल्प लेना चाहिए। हर घर में योग करना चाहिए। हमें शाकाहारी बनना चाहिए। इस अवसर पर महंत प्रभु दयाल महाराज ने भी अपने विचार व्यक्त किए। इस अवसर भागवत कथा सुनाते हुए महाराज श्री हेमन्त भंडारी ने कहा कि श्री कृष्ण अवतार लिया। पापी कंस अभिमान दुर किया। श्री कृष्ण साक्षात परब्रह्म परमात्मा है, मंच संचालन कर रहे श्री अनिरुद्ध जी महाराज ने भी अपने वाणी सुनकर सुंदर साथ को आनंद प्रदान किया गया। इस अवसर पर भजन गायक हर्षत भाई पटेल ने महामति प्राण नाथ के वाणी गाकर सभी सुंदर साथ को आनंद प्रदान किया। इस अवसर पर श्री चावलाजी अन्य सन्त महंत आगमन हुआ है।

बापू के भजन पर हंगामा करना राष्ट्रपिता का अपमान : भाकपा

पटना। भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के राज्य सचिव रामनरेश पाण्डेय ने कहा कि भाजपा के बड़े नेताओं की मौजूदगी में बापू के प्रिय भजन रघुपति राघव राजा राम गाने पर हंगामा करना और लोक गायिका देवी से माफी मंगवाना राष्ट्रपिता का अपमान है। भाकपा इस घटना का निंदा करती है और मुख्यमंत्री नीतीश कुमार से दोषी व्यक्ति के खिलाफ सख्त कार्रवाई करने की मांग करती है। भाजपा के लोग लगातार राष्ट्रपिता महात्मा गांधी और अम्बेडकर का अपमान कर रहे हैं। गांधी और अम्वेडकर लोगों दिल में बसे हुए हैं। बिहार की जनता गांधी और अम्वेडकर का अपमान बर्दाश्त नहीं करेगी। भाकपा राज्य सचिव ने कहा कि बिहार वामपंथियों और समाजवादियों की धरती है। बिहार में भाजपा वैशाखी के सहारे है।

सरस मेला में 8505 शीट्स नक्शों की बिक्री हुई

पटना। सरस मेले में लगा राजस्व एवं भूमि सुधार विभाग का स्टॉल मेला घूमने आए लोगों के बीच आकर्षण का प्रमुख केन्द्र बना रहा। पूरे मेले के दौरान यानि 12 दिसंबर से 26 दिसंबर तक विभाग के स्टॉल पर लगातार लंबी-लंबी कतारें लगीं। यहां आए लोगों ने मुख्य रूप से अपने गांव-जवार के राजस्व नक्शों की खरीद की तथा अपनों को देने के लिए तोहफे के रूप में भी इसे क्रय किया। मेला के दौरान कुल 3018 लोगों ने काउंटर पर आकर 8505 शीट्स यानि नक्शों की खरीद की और भू-अभिलेख एवं परिमाप निदेशालय को 1275750.00 रूपयों का भुगतान किया। विभाग के स्टॉल पर पूरे राज्य के डिजिटाइज्ड नक्शों के अलावे विभाग की ऑनलाइन सेवाएं भी उपलब्ध कराई गई थीं जहां मामूली शुल्क लेकर इन सेवाओं के लिए आवेदन दिया जा सकता था। इससे पूर्व गांधी मैदान में ही लगे पुस्तक मेले में भी राजस्व एवं भूमि सुधार विभाग ने अपना स्टॉल लगाया था। साथ ही सोनपुर मेले में भी लगा विभागीय स्टॉल इन राजस्व नक्शों के कारण आम लागों के बीच खूब लोकप्रिय हुआ था। 19 नवंबर से 14 दिसंबर तक चले सोनपुर मेले में कुल 5396 रैयत राजस्व एवं भूमि सुधार विभाग के स्टॉल पर राजस्व नक्शों के लिए पहुंचे। उनके द्वारा कुल 12681 नक्शों की खरीद की गई जिससे निदेशालय को कुल 1902150.00 रूपयों की प्राप्ति हुई। जबकि गांधी मैदान मे ही लगे पुस्तक मेले में जो 17 दिसंबर तक चला में कुल 1369 लोगों द्वारा 3947 नक्शों की खरीद की गई। विभाग के काउंटर पर सीएस, आरएस, चकबंदी एवं म्युनिसिपल सर्वे नक्शा उपलब्ध किया गया था। इन नक्शों को 150 रुपए प्रति शीट का भुगतान करके प्राप्त किया जा सकता था। छोटे गांव का नक्शा एक शीट में जबकि बड़े गांव का नक्शा एक से अधिक शीट में उपलब्ध था। राजस्व नक्शों को ए शून्य आकार के बड़े पेपर पर प्रिंट किया जाता है। इसमें प्लॉट का आकार ऑन स्केल होता है। इसकी मदद से रैयत अपनी जमीन की मापी करा सकता है। इसलिए इस नक्शे की बहुत मांग होती है। राजस्व नक्शे ऑनलाइन भी उपलब्ध हैं। इसे भू अभिलेख एवं परिमाप निदेशालय की वेबसाइट पर जाकर और डोर स्टेप डिलीवरी ऑफ रेभेन्य मैप बटन को क्लिक कर वहां दिए गए निर्देशों का पालन कर घर बैठे प्राप्त किया जा सकता है।

नकारात्मक राजनीति के पर्याय बन चुके हैं नेता प्रतिपक्ष : प्रभाकर

पटना। भाजपा के प्रदेश प्रवक्ता प्रभाकर कुमार मिश्र ने नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी यादव पर जमकर निशाना साधते हुए कहा कि ये नकारात्मक राजनीति के पर्याय बन चुके हैं। अपने स्वार्थ के अलावा तेजस्वी को कुछ दिखाई नहीं देता। श्री मिश्र ने शुक्रवार को प्रेस विज्ञप्ति जारी कर कहा कि जिसका पढ़ाई-लिखाई से कभी कोई मतलब नहीं रहा, वह आदमी प्रदर्शनकारी बीपीएससी अभ्यर्थियों की बात को कैसे समझ सकता है। धरना-प्रदर्शन में शामिल होने और हवा-हवाई बातें करने से न तो तेजस्वी बड़ा नेता बन जाएंगे और न ही 2025 में अपनी पार्टी को जीत दिला पाएंगे। जनहित और राष्ट्रहित के लिए सत्य के साथ खड़ा रहना राजनीति में सफलता पाने की पहली शर्त है। लेकिन, तेजस्वी ने लोगों को गुमराह करने का रास्ता अपना लिया है। यह रास्ता उन्हें राजनीतिक पराभव की ओर ले जायेगा। श्री मिश्र ने कहा कि राजद सहित महागठबंधन के सभी घटक दल अपनी सियासी जमीन तलाश रहे रहे हैं, इसलिए आजकल ये धरना स्थलों पर भटकते देखे जाते हैं। बीपीएससी अभ्यर्थियों का धरना स्थल मानो विपक्षी नेताओं का तीर्थस्थल बन गया है।

अंगिका को भाषा का रूप प्रदान किया परमानंद पाण्डेय ने

राजनीति में साहित्यिक हस्तक्षेप थे डा शंकर दयाल सिंह

- दोनों साहित्यिक विभूतियों को साहित्य सम्मेलन ने दी काव्यांजलि

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

अंगिका भाषा और साहित्य के उद्धारकों में महाकवि परमानंद पाण्डेय का स्थान श्रेष्ठतम है। अंगप्रदेश की इस बोली को पाण्डेय जी ने भाषा का रूप प्रदान किया। इन्हें अंगिका का दधीचि साहित्यकार माना जाता है। दूसरी ओर हिन्दी के यशस्वी साहित्यकार डा शंकर दयाल सिंह राजनीति में एक सुदृढ़ साहित्यिक हस्तक्षेप थे। यह बातें शुक्रवार को बिहार हिन्दी साहित्य सम्मेलन में दोनों महान हिन्दी-सेवियों की जयंती पर आयोजित समारोह और कवि-सम्मेलन की अध्यक्षता करते हुए, सम्मेलन अध्यक्ष डा अनिल सुलभ ने कही। डा सुलभ ने कहा कि पाण्डेय जी ने अंगिका का व्याकरण लिखा। अंगिका का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन सात सौ पृष्ठों में लिखा गया उनका महान ग्रंथ है। डा सुलभ ने कहा कि शंकर दयाल जी अपने समय के अत्यंत लोकप्रिय और ज़िंदादिल साहित्यकार थे। वे उन्मुक्त ठहाकों के लिए जाने जाते थे। उनके पास आते ही लोग अपनी पीड़ा भूल जाते थे। वे, राजनीति की तपती धूप में साहित्य की घनी छांव थे। उनमें राजनीति की धूप और साहित्य की छांव विशेष उल्लेखनीय है। उन्होंने अपने साहित्यिक और स्वतंत्रता-सेनानी पिता कामता प्रसाद सिंह काम द्वारा स्थापित प्रकाशन संस्थान पारिजात प्रकाशन को एक बड़े साहित्यिक-केंद्र के रूप में प्रतिष्ठित किया। वे बिहार हिन्दी साहित्य सम्मेलन के अर्थमंत्री भी रहे। डा परमानन्द पाण्डेय के साहित्यकार पुत्र ओम् प्रकाश पाण्डेय प्रकाश ने अपने पिता की स्मृतियों को संजोते हुए उनके व्यक्तित्व और कृतित्व की विस्तारपूर्वक चर्चा की और कहा कि पाण्डेय जी संस्कृत, हिन्दी, फारसी, ऊर्दू और अंग्रेजी समेत अनेक भाषाओं के निष्णात विद्वान थे। उनके भीतर ऐसी आध्यात्मिक शक्तियाँ थी कि उनका स्पर्श आराम देता था। जब कभी ज्वर से मैं पीड़ित होता था, अपने स्पर्श से वे हमारे रोग हर लेते थे। सम्मेलन की उपाध्यक्ष डा मधु वर्मा, वरिष्ठ साहित्यकार गोपाल भारतीय, प्रो आनन्दमूर्ति, डा मनोज गोवर्द्धनपुरी, वरिष्ठ पत्रकार डा अंजनी राज पाण्डेय तथा सूर्या प्रत्यक्षा ने भी अपने विचार व्यक्त किए। इस अवसर पर आयोजित कवि-सम्मेलन का आरंभ वरिष्ठ कवि गोपाल भारतीय वाणी-वंदना से किया। वरिष्ठ कवि प्रो सुनील कुमार उपाध्याय, शुभचंद्र सिन्हा, डा अर्चना त्रिपाठी, ई अशोक कुमार, पं गणेश झा, जय प्रकाश पुजारी, शंकर शरण आर्य, सूर्य प्रकाश उपाध्याय, सूबेदार नन्द किशोर साहू आदि कवियों और ने भी अपनी रचनाओं का पाठ किया। मंच का संचालन कवि ब्रह्मानन्द पाण्डेय ने किया। सम्मेलन के प्रशासी पदाधिकारी सूबेदार नन्दन कुमार मीत, चंद्रशेखर प्रसाद, रवींद्र कुमार, राजू राज, डौली कुमारी, महेश प्रसाद आदि प्रबुद्धजन समारोह उपस्थित थे।

पूर्व मध्य रेल

ई–ऑक्शन सूचना सं. :– Com/DNR/Pay & Use/ 24

मंडल रेल प्रबंधक (वाणिज्य), पूर्व मध्य रेल, दानापुर मंडल द्वारा भारत के राष्ट्रपति के लिए एवं उनकी ओर से निम्न कार्य हेतु ई–ऑक्शन आमंत्रित किया जाता है :– **क्रम सं (1) कार्य का नाम, व अवधि :** पूर्व मध्य रेल, दानापुर मंडल के बख्तियारपुर, किउल, फतुहा, हाथिदह, बड़हिया और गुलजारबाग रेलवे स्टेशन पर स्थित पे एंड यूज टॉयलेट कॉम्पलेक्स का तीन (03) वर्षों की अवधि के लिए अलग–अलग संचालन एवं रख–रखाव का अनुबंध। **(2) साइट की स्थिति:** (01) बख्तियारुपर रेलवे स्टेशन के प्लेटफार्म सं०–01 पर स्थित। (02) किउल रेलवे स्टेशन के प्लेटफार्म सं०–3/4 दिल्ली इंड की ओर स्थित। (03) फतुहा रेलवे स्टेशन के प्लेटफार्म सं०–01 पर स्थित एफ.ओ.बी. के नजदीक द्वितीय श्रेणी प्रतीक्षालय में स्थित। (04) हाथिदह रेलवे स्टेशन के प्रतिक्षालय हॉल में स्थित। (05) बड़हिया रेलवे स्टेशन के प्लेटफार्म सं०–01 के दिल्ली इंड की ओर स्थित दो नम्मा शौचालय कॉम्पलेक्स। (06) गुलजारबाग रेलवे स्टेशन के प्लेटफार्म सं०–01 पर स्थित। **(3) अनुबंध की अवधि :** तीन (03) वर्ष **(4) कैटेलॉग संख्या :** Com-PnU- JAN-25 **(5) लॉट संख्या/श्रेणी :** 1. AA/1:PnU-DNR-BKP-Toi-14-24–1 (Pay and Use-Toilets) 2. AA/2:PnU-DNR- KIUL-Toi-88-24–1(Pay and Use-Toilets) 3. AA/3:PnU–DNR-FUT-Toi-24-24–2(Pay and Use-Toilets) 4. AA/4:PnU-DNR-HTZ-Toi-29-24–1(Pay and Use-Toilets) 5. AA/5:PnU-DNR-BRYA-Toi-30-24–1 (Pay and Use-Toilets) 6. AA/6:PnU-DNR-GZH-Toi-26-24–2 (Pay and Use-Toilets) **(06) ई–ऑक्शन की तिथि व समय :** दिनांक 09.01.2025 को 12:00 बजे से 13:20 बजे तक (प्रारंभिक कूलिंग ऑफ की अवधि 30 मिनट एवं लगातार लॉट का समापन अंतराल 10 मिनट है।) **(07) वेबसाईट जहाँ ई–ऑक्शन से संबंधित पूर्ण विवरण उपलब्ध है: www.ireps.gov.in.**

मंडल रेल प्रबंधक (वाणिज्य), दानापुर
पीआर/1770/डीएनआर/सीओएमएल/एन/24–25/60

पूर्व मध्य रेल

खुली निविदा सूचना

ऑन लाईन ई–निविदा (खुली) निविदा आमंत्रित सूचना संख्या ईएल/50/दानापुर/खुली/39/ 2024–25

मंडल रेल प्रबंधक, पूर्व मध्य रेल दानापुर भारत के राष्ट्रपति की ओर से दानापुर मंडल में उन संवेदकों से जिनके पास वैध विद्युत लाइसेंस जो राज्य/केन्द्र सरकार के लाईसेंसिंग बोर्ड द्वारा जारी किया गया हो और वे निविदा पत्र में वर्णित अन्य शर्तों को पूरा करते हों, उनसे निम्नलिखित कार्यों हेतु ऑन लाईन ई–निविदा (खुली) निविदा आमंत्रित करते हैं। **निविदा संख्या : ईएल/50/दानापुर/खुली/39/ 2024–25, क्र.सं. :** 1, **कार्य का नाम :** पाटलिपुत्र रेल परिसर, दीघा में 11 केवी/0.433 केवी कॉम्पैक्ट प्रकार के सब–स्टेशन प्रदान करके बिजली आपूर्ति व्यवस्था में सुधार और अन्य प्रकाश व्यवस्था में सुधार।, **क्र.सं. :** 2, **अनुमानित लागत :** ₹ 12,52,67,770.14/–, **क्र.सं. :** 3, **अग्रधन राशि :** ₹ 7,76,300/–, **क्र.सं. :** 4, **निविदा जमा करने की तिथि एवं समय :** 15.01.2025 को 12.00 बजे तक निर्धारित है।, **क्र.सं. :** 5, **उपरोक्त सभी निविदा की वेबसाईट, नोटिस बोर्ड और कार्यालय :** क्रिस वेबसाईट **http://www.ireps.gov.in** वरीय मंडल बिजली इंजीनियर/विद्युत/सामान्य का कार्यालय, मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय भवन, पूर्व मध्य रेल, दानापुर। **नोट :** (1) विवाद की स्थिति में अंग्रेजी नोटिस मान्य होगा। (2) यदि जरूरी हो, तो शुद्धि–पत्र उपरोक्त वेबसाईट पर 15 दिन पहले तक अपलोड होगा।

मंडल रेल प्रबंधक (विद्युत/सा.), पूर्व मध्य रेल, दानापुर
पीआर/01777/डीएनआर/इजीइएन/टी/24–25/44

पूर्व मध्य रेल

ऑन लाईन ई–निविदा (खुली) निविदा आमंत्रित सूचना संख्या ईएल/50/दानापुर/खुली/40–2024–25

मंडल रेल प्रबंधक, पूर्व मध्य रेल दानापुर भारत के राष्ट्रपति की ओर से दानापुर मंडल में उन संवेदकों से जिनके पास वैद्य विद्युत लाईसेंस जो राज्य/केन्द्र सरकार के लाईसेंसिंग बोर्ड द्वारा जारी किया गया हो और वे निविदा पत्र में वर्णित अन्य शर्तों को पूरा करते हों उनसे निम्नलिखित कार्य हेतु **ऑन लाईन ई–निविदा** (खुली) निविदा आमंत्रित करते हैं। **निविदा संख्या: ईएल/50/दानापुर/खुली/40/ 2024–25, कार्य का नाम :** दानापुर मंडल में एआरए, डीएनआर, पीएनबीई, आरजेपीबी, बीकेपी, एमकेए, किउल, जेएजे, जेएचडी और आरजीडी स्टेशनों के परिसंचारी क्षेत्र के लिए हाइब्रिड सौर प्रकाश व्यवस्था का प्रावधान। **अनुमानित लागत :** रू 2,19,69,072/–, **अग्रधन राशि :** रू 2,59,900/–, **निविदा जमा करने की तिथि एवं समय:** 17.01.2025 को 12.00 बजे तक निर्धारित है। **उपरोक्त सभी निविदा की वेबसाइट, नोटिस बोर्ड और कार्यालय :** क्रिस वेबसाईट **http://www.ireps.gov.in** वरीय मंडल बिजली इंजीनियर (सा०) का कार्यालय, मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय भवन, पूर्व मध्य रेल, दानापुर।

नोट – (1) विवाद की स्थिति में अंग्रेजी नोटिस मान्य होगा। (2) यदि जरूरी हो तो शुद्धि–पत्र उपरोक्त वेबसाईट पर 15 दिन पहले तक अपलोड होगा।

मंडल रेल प्रबंधक (विद्युत/सा०), दानापुर
पीआर/1776/डीएनआर/ईजीईएन/टी/24–25/44

पूर्व मध्य रेल

ई-निविदा सूचना

मंडल रेल प्रबन्धक (इंजी0)/पूर्व मध्य रेल/समस्तीपुर कृते भारत के राष्ट्रपति की ओर से नीचे लिखे गये कार्यों के लिए अनुभवी एवं वित्तीय क्षमता रखने वाले निविदादाताओं से भारतीय रेल के आई.आर.ई.पी.एस. वेब पोर्टल पर खुली ई–निविदा के रुप में आमंत्रित की जाती है:–
क्र.सं.: 1, **निविदा सूचना सं.:** टी.सी.–178–2024–एस.पी.जे., **कार्य का नाम:** वरिष्ठ अनुभाग अभियंता/कार्य/दक्षिण/सम. के अधिकार क्षेत्र में अवस्थित कॉलोनी, गोदाम घाट कॉलोनी के टाईप–IV एवं टाईप–V बंगला के बाउंड्रीवाल का मरम्मत एवं विस्तार।, **निविदा लागत (रुपये में):** 22453735.77, **बयाने की राशि (रुपये में):** 262300.00, **कार्य की समाप्ति अवधि:**12 माह
क्र.सं.: 2, **निविदा सूचना सं.:** टी.सी.–179–2024–एस.पी.जे., **कार्य का नाम:** समस्तीपुर में ओ.टी.ए. के लिए नए अधिकारी विश्रामगृह 1 से 16 और ललित कला केन्द्र, सिविल पूल, अधिकारी ट्रांजिट हाउस 9 से 16 और अधिकारी ट्रांजिट हाउस 17 से 20 एवं पुराने ट्रांजिट हाउस 1 से 8 में शौचालय, बाथरूम आदि सहित परिसर एवं सूईट की सफाई, लिनेन पर्दो की सफाई आदि जिसमें नए ओटीए एवं पुराने ओटीएच (ए एवं बी) शामिल हैं।, **निविदा लागत (रुपये में):** 8917674.27, **बयाने की राशि (रुपये में):** 178400.00, **कार्य की समाप्ति अवधि:**24 माह
क्र.सं.: 3, **निविदा सूचना सं.:** टी.सी.–180–2024–एस.पी.जे., **कार्य का नाम:** समस्तीपुर में 17 अदद स्वचालित बैक्टीरियोलॉजिकल उपचार संयंत्र की आपूर्ति, स्थापना एवं परीक्षण।, **निविदा लागत (रुपये में):** 18550000.00, **बयाने की राशि (रुपये में):** 242800.00, **कार्य की समाप्ति अवधि:**12 माह
(1) आई.आर.ई.पी.एस. वेब पोर्टल पर ई –निविदा के रुप में निविदा प्राप्त करने की अन्तिम तिथि एवं समय :– 17.01.2025 को 12.00 बजे तक। **(2) ई–निविदा खुलने की तिथि एवं समय :–** 17.01.2025 को 12.00 बजे के बाद। **(3)** वेबसाईट का विवरण जहाँ से निविदा एवं निविदा प्रपत्र की विस्तृत जानकारी प्राप्त की जा सकती है :– वेबसाईट: **www.ireps.gov.in.** उपरोक्त निविदा से संबंधित यदि कोई भी संशोधन/परिवर्तन किया जाता है तो उसकी सूचना समाचार पत्रों में प्रकाशित नहीं किया जाएगा बल्कि वेबसाईट पर अपलोड कर दिया जाएगा।

वरिष्ठ मंडल इंजीनियर/समन्वय
पूर्व मध्य रेल/समस्तीपुर
पीआर/01778/एसपीजे/इंजी./टी/24–25/60

संक्षिप्त खबरें

मुख्यमंत्री अब 5 को आएंगे मुजफ्फरपुर,नया कार्यक्रम हुआ जारी

मुजफ्फरपुर।मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की प्रगति यात्रा को लेकर शुक्रवार को मंत्रिमंडल सचिवालय विभाग ने नया शेड्यूल जारी कर दिया है। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार अपनी प्रगति यात्रा के क्रम में 27 दिसंबर को मुजफ्फरपुर आने वाले थे। पूर्व प्रधानमंत्री डाक्टर मनमोहन सिंह के निधन पर राष्ट्रीय शोक के कारण उनका यह कार्यक्रम स्थगित हो गया। अब उनका 5 जनवरी को मुजफ्फरपुर और 6 जनवरी को वैशाली में प्रगति यात्रा का कार्यक्रम निर्धारित किया गया है। यह जानकारी जिला जनसंपर्क कार्यालय से जारी प्रेस विज्ञप्ति में दी गई है।बताते चलें कि शुक्रवार 27 दिसंबर को मुख्यमंत्री के कार्यक्रम को लेकर मुसहरी प्रखंड के नरौली पंचायत में सारी तैयारी पूरी की जा चुकी थी।

अमित शाह का पुतला फूंका

कल्याणपुर, समस्तीपुर। प्रखंड मुख्यालय के आगे भारत सरकार के गृह मंत्री अमित शाह का पुतला फूका गया। माले प्रखंड सचिव दिनेश कुमार की अध्यक्षता कार्यकताओं की एक बैठक को संबोधित करते कहा कि भारत सरकार के गृह मंत्री अमित शाह ने लोकसभा में बाबा साहेब भीमराव अंबेडकर के संबंध में आपत्तिजनक शब्द का प्रयोग किया। पटना में बीपीएससी अभ्यर्थियों बाढ़ पटना में हुई लाठी चार्ज की। घोर निंदा की गई। प्रखंड मुख्यालय के आगे गृह मंत्री का पुतला दहन करते हुए नारेबाजी की गई। मौके पर रणजीत राम सुखलाल यादव, दशरथ दास धीरेंद्र झा बैद्यनाथ यादव शहीद दर्जनों कार्यकर्ता मौजूद थे।

सत्त विकास लक्ष्य प्राप्ति के लिए बैठक का आयोजन

बेनीपुर(दरभंगा)।पीरामल फाउंडेशन के सहयोग से ग्राम पंचायत प्लैनिंग एंड फैसिलिटेशन टीम की बैठक शुक्रवार को मुखिया नूतन चौधरी की अध्यक्षता में हुई। पंचायत स्तर पर नीति आयोग के सभी थीम एवं पंचायत स्तर पर आवश्यक कार्यों का चर्चा किया गया। स्वस्थ्य पंचायत, महिला अनुकूल पंचायत, सैनिटेशन एंड हाइजीन, वाटर सफिशिएंट विलेज जीरो ड्रॉप आउट फ्री पंचायत पर विशेष चर्चा किया गया। आंगनबाड़ी सेविका, आशा ने भी अपने समस्याओं के बारे में बारीकी से अपनी बात को रखा। सभी विषयों पर मुखिया ने अपनी सहमति बनाई। वार्ड सदस्य के माध्यम से वार्ड सभा का आयोजन एवं विस्तृत रोड मैप को लेकर के बात की गई। इस दौरान उपमुखिया शौकत अली अंसारी, पंचायत सचिव संजय कुमार, पंचायत कार्यपालक सजीव कुमार, पीरामल फाउण्डेशन से प्रशांत कुमार दास, श्रवण कुमार, आशा दीदी, सेविका दीदी, रोजगार सेवक आदि उपस्थित थे।

मंत्री ने शिविर में लिया भाग

कल्याणपुर, प्रखंड के वासुदेव पुर पंचायत भवन परिसर में शुक्रवार को बिहार सरकार के सुचना प्रसारण मंत्री सह स्थानीय विधायक महेश्वर हजारी ने पहुंचकर प्रखंड के वासुदेवपुर में विभिन्न विभागों के द्वारा शिविर लगाया गया। भारत के पुर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह की आकस्मिक निधन होने पर मंत्री ने श्रद्धांजलि देते हुए एक मिनट का मौन रखा गया। श्रद्धांजलि सभा में सदर अनुमंडल पदाधिकारी दिलीप कुमार, प्रखंड विकास पदाधिकारी देवेंद्र कुमार, अंचल पदाधिकारी शशि रंजन, मनरेगा पीओ महेश कुमार भगत, स्थानीय मुखिया चंदन कुमार पुर्व मुखिया चंद्रगुप्त शर्मा, जदयू के प्रखंड अध्यक्ष राजकुमार सिंह युवा प्रखंड अध्यक्ष सामंत कुमार, चंद्र प्रकाश गुड्डू, भाजपा के पुर्व मुखिया संघ अध्यक्ष विजय शर्मा, अखिलेश ठाकुर, पूर्व मुखिया रघुनंदन पासवान, सीपीएम के भोला राय राघवेंद्र राय जनवादी नौजवान सभा के जिला सचिव उमेश शर्मा, सहित अन्य ग्रामीण मौजूद थे।

अटल की जयंती पर संकल्प सभा की सारी तैयारी पूरी

मुजफ्फरपुर।आगामी 29 दिसंबर को कांटी क्षेत्र के पानापुर हाई स्कूल मैदान में पूर्व प्रधानमंत्री स्वर्गीय अटल बिहारी वाजपेई जी के जयंती के मौके पर आयोजित संकल्प सभा की सारी तैयारी पूरी कर ली गई है। संकल्प सभा में शामिल होने के लिए क्षेत्र के सभी 173 गांव के कार्यकर्ताओं के घर तक निमंत्रण पहुंचा दिया गया है। कार्यक्रम के संयोजक पूर्व मंत्री अजीत कुमार ने संकल्प सभा मे दस हजार से अधिक कार्यकर्ता व समर्थको का शामिल होने का दावा किया है।शुक्रवार को पत्रकारों से बातचीत करते हुए पूर्व मंत्री अजीत कुमार ने कहा कि उक्त संकल्प सभा का उद्घाटन भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष व राजस्व एवं भूमि सुधार मंत्री दिलीप जायसवाल करेंगे।

दरभंगा में पटना हाई कोर्ट बेंच की स्थापना को लेकर सीएम से मिले सांसद

प्रात :किरणसंवाददाता

दरभंगा।दरभंगा में पटना हाई कोर्ट की बेंच की स्थापना किया जाना जरूरी है। बिहार के भौगोलिक स्थिति को देखते हुए आमजनों की सुविधा के लिए इसके स्थापना हो जाने से लोगो को आर्थिक रूप से बचत के साथ साथ समय और अन्य संसाधनों की काफी बचत होगी। बिहार के सीएम नीतीश कुमार ने इस पर शीघ्र पहल करने का आश्वासन दिया है जिसके लिए उनकी जितनी प्रशंसा की जाए वह कम है। दरभंगे सांसद सह लोकसभा में भाजपा सचेतक डा गोपाल जी ठाकुर ने पटना स्थित एक अणे मार्ग स्थित मुख्यमंत्री आवास में सीएम नीतीश कुमार से मिलने के बाद उपरोक्त बातें कही हैं। सांसद डा ठाकुर ने सीएम नीतीश कुमार जी के मिथिला क्षेत्र दिए गए योगदानों की चर्चा करते हुए कहा कि दरभंगा सहित पूरे मिथिला में विकास की गंगा बह रही है। एयरपोर्ट, एम्स, दरभंगा शहर के आरोबी, जैसे मुद्दों पर हो रहे विकास कार्यों के बदौलत दरभंगा और मिथिला का विकास देश के मानचित्र पर स्थापित किया जा रहा है। इन विकास कार्यों के लिए बिहार के सीएम नीतीश कुमार के योगदानों की जितनी चर्चा की जाय वह कम है। वास्तविक रूप से बिहार के सीएम नीतीश कुमार विकास कार्यों के लिए पर्यायवाची शब्द बन चुके हैं। सासंद डा ठाकुर ने सीएम नीतीश कुमार से भेंट के दौरान उनके प्रति आभार प्रकट करते हुए कहा कि दरभंगा में एम्स निर्माण तथा एयरपोर्ट के लिए जमीन का अधिग्रहण कर देश के यशश्वी प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के हाथों शिलान्यास होने में सीएम नीतीश कुमार की महती भूमिका रही है जिसके लिए साढ़े करोड़ मिथिलावासियों के ह्रदय में सीएम सदैव जीवंत रहेंगे। सीएम से भेंट के दौरान सांसद डा ठाकुर ने विभिन्न मुद्दों पर उनका ध्यान आकृष्ट कराते हुए कहा कि दरभंगा में आईआईटी , एनआईटी, निफ्ट, सैनिक स्कूल, केंद्रीय विद्यालय , जैसे मुद्दों के लिए शीघ्र पहल शुरू करने का आग्रह करते हुए कहा कि दरभंगा मिथिला क्षेत्र की अघोषित राजधानी मानी जाती है इसलिए अब यहां इस तरह की उच्चतर संस्थानों का होना जरूरी है। सांसद डा ठाकुर ने सीएम श्री नीतीश से डा कामेश्वर सिंह संस्कृत विश्वविद्यालय को केंद्रीय विश्वविद्यालय का दर्जा तथा मिथिला संस्कृत शोध संस्थान के कायाकल्प करने का आग्रह करते हुए कहा कि इन मुद्दो के समाधान करने के लिए आश्वस्त किया है। सांसद डा ठाकुर ने बाढ़ से क्षतिग्रस्त भुभौल गाँव तथा वहां मची तबाही से भविष्य में इस तरह की विनाश से बचने के लिए समाधान का आग्रह करते हुए कहा कि कोशी नदी में गाद के भर जाने के कारण पश्चिम कोशी तटबंध को ऊंचा किए जाने को आवश्यक बताते हुए कहा कि इस तटबंध को ऊंचा कर गंडोल तक टू लेन सड़क बनाया जाना अति आवश्यक है।

2025 में सीएम बनेंगे तेजस्वी यादव, नीतीश कुमार का भी आशीर्वाद होगा शामिल : भाई वीरेंद्र

समस्तीपुर, प्रात : किरण संवाददाता

बिहार के लोगों ने मन बना लिया है कि वर्ष 2025 में तेजस्वी प्रसाद यादव सीएम बनेंगे और उनके सीएम बनने में नीतीश कुमार का भी आशीर्वाद होगा। उक्त बातें बिहार विधानसभा लोक लेखा समिति के सभापति सह राजद के वरीय नेता भाई वीरेंद्र ने अतिथि गृह में प्रेस वार्ता को संबोधित करते हुए कही। उन्होंने कहा कि नीतीश जी को सोते वक्त यदि यह सपना आ रहा है कि वे सांप्रदायिक व नफरत की राजनीति करने वाले का साथ दे रहे तो वे समाजवादी खेमा के लोग हैं तो महागठबंधन के साथ चले आवें। उनके लिए महागठबंधन का दरवाजा खुला हुआ है। राजद विधायक भाई वीरेंद्र ने ने सीएम नीतीश कुमार को महागठबंधन में आने का ऑफर देते हुए कहा है कि राजनीति में कुछ भी संभव है। राजनीति में कोई हमेशा के लिए दोस्त और दुश्मन नहीं होता है। राजनीति परिस्थिति का खेल है। हो सकता है बिहार में फिर से खेला हो जाए। अगर नीतीश कुमार सांप्रदायिक ताकतों को छोड़ कर आएंगे तो हम उनका स्वागत करेंगे। एक सवाल के उत्तर देते हुए भाई वीरेंद्र ने कहा कि एक समय नीतीश कुमार खुद कहा करते थे कि बीजेपी का मतलब होता है बड़का झूठा पार्टी है इसलिए राजनीति में न तो दोस्त स्थाई होता है और न दुश्मन। उन्होंने कहा कि वे लोक लेखा समिति के सभापति होने के नाते जिले के सभी विभागों का लेखा से संबंधित समीक्षा कर ने पहुंचा हूं। समस्तीपुर दसवां जिला है जहां मैं पहुंचा हूं। मैं राष्ट्रीय जनता दल का वर्कर हूं इसलिए आप लोगों से भी वार्ता कर रहा हूं। भाई वीरेंद्र ने आगे कहा कि पूरे बिहार में नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी प्रसाद यादव यात्रा कर रहें हैं। हर घर हर दरवाजे पर कार्यकताओं को जाने का निर्देश प्राप्त है। हर किसी यह बताने का प्रयास कर रहें हैं कि लोकतंत्र व संविधान का निर्माण में बाबा साहब भीमराव आंबेडकर का योगदान है। आरएसएस व भाजपा के लोग उन्हें अपमानित कर रहें हैं। आरएसएस और जनसंघ के लोग आजादी के पूर्व भी अंग्रेजों का ही साथ दिया तथा उनके लिए मुखबिरी का कार्य करते थे। उन्होंने भाजपा पर हमला बोलते हुए कहा कि सभी जानते हैं कि नोटबंदी के दौर में प्रत्येक जिला में भाजपा का भवन किस तरह से बन गया। गरीब, किसान व वंचित समाज तबाह हो गये। इन लोगों का एक ही मकसद रहता है ।

मनमोहन सिंह के निधन पर कांग्रेस कमिटी सहित कई संगठनों ने शोक जताया

प्रात : किरण संवाददाता

दरभंगा।प्रख्यात अर्थशास्त्री एवं पूर्व प्रधानमंत्री डा मनमोहन सिंह के निधन पर विद्यापति सेवा संस्थान ने शुक्रवार को शोक जताया। शोक संवेदना व्यक्त करते हुए संस्थान के महासचिव डा बैद्यनाथ चौधरी बैजू ने कहा कि डा मनमोहन सिंह भारतीय अर्थव्यवस्था को वैश्विक मानचित्र पर स्थापित करने वाले प्रमुख व्यक्तियों में से एक थे। उनकी विद्वता का आधार उनकी अद्वितीय शैक्षणिक पृष्ठभूमि थी। यही कारण था कि जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में उन्होंने अद्वितीय प्रतिभा का परिचय दिया।इस अवसर पर कमलाकांत झा, कार्यकारी अध्यक्ष डा बुचरू पासवान, प्रो जीवकांत मिश्र, मीडिया संयोजक प्रवीण कुमार झा, डा महेंद्र नारायण राम, प्रो विजय कांत झा, विनोद कुमार झा, पंकज कुमार ठाकुर, डा गणेश कांत झा, दुर्गा नंद झा, प्रो चंद्रशेखर झा बूढ़ा भाई, डा महानंद ठाकुर, आशीष चौधरी, पुरुषोत्तम वत्स, मणिभूषण राजू आदि ने भी डा मनमोहन सिंह के निधन पर शोक जताया। जिला कांग्रेस कार्यालय में जिलाध्यक्ष सीताराम चौधरी की अध्यक्षता में आयोजित श्रद्धांजलि सभा में कांग्रेस कार्यकताओं ने उनके चित्र पर पुष्प अर्पित कर उन्हें श्रद्धांजलि दी। इस मौके पर जिलाध्यक्ष सीताराम चौधरी ने कहा कि डां. मनमोहन सिंह का निधन कांग्रेस ही नही, बल्कि पूरे देश के लिए अपूरणीय क्षति है, उन्होंने कहा कि मनमोहन सिंह बोलने पर नही ठोस काम करने पर विश्वास रखते थे। श्रद्धांजलि सभा मे उपस्थित डां.नागेश्वर पंजियार, पुर्व मेयर अजय जालान, डिप्टी मेयर नाजिया हसन, जिला मीडिया प्रभारी मो.असलम, मनोज भारती, प्रो. उदयशंकर मिश्र, दयानंद पासवान, परमानंद झा, सरफराज अनवर, सैयद तनवीर अनवर, शुशील कुमार सिंह, उदितनारायण चौधरी, जयशंकर प्रसाद चौधरी, प्रो. शिवनारायण पासवान, डां. सुरेश राम, हसमत अंसारी, प्रिंस परवेज, अकबर खां, विशाल कुमार, बसंत झा, कैलाशचंद्र झा, रविप्रकाश चौधरी, राहुल कुमार कर्ण, रविप्रकाश चौधरी, मो.मुदस्सिर आदि उपस्थित थे।

विधायक ने किया राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर स्मृति पुस्तकालय का उद्घाटन

विभूतिपुर, प्रात : किरण संवाददाता

प्रखंड के टभका वार्ड 09 में मंटून चौधरी के घर से कमली दास के घर तक सड़क में पीएससी कार्य का शिलान्यास एवं राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर स्मृति पुस्तकालय का उद्घाटन स्थानीय विधायक अजय कुमार ने किया। इस अवसर एक सभा हुई। अध्यक्षता अवकाश प्राप्त शिक्षक ललित प्रसाद ठाकुर एवं संचालन प्रधानाध्यापक प्रियरंजन ठाकुर ने किया। समारोह को संबोधित करते हुए विधायक ने कहा की राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर के विरासत को आगे बढ़ाने के लिए पुस्तकालय की स्थापना हुई है यह पुस्तकालय ज्ञानवर्धन का केंद्र बने इसके लिए और भी जो कुछ करने की जरूरत होगी वह किया जाएगा। पुस्तकालय का सफल संचालन के लिए लोगों को समर्पित होकर समय देना होगा और अपने अपने भूमिका निभानी होगी। समारोह को साहित्यकार सह वरिष्ठ पत्रकार चाँद मुसाफिर, प्रो०अवध किशोर ठाकुर करनल, मृत्युंजय ठाकुर, स्थानीय मुखिया विजय चौधरी, पार्टी जिला सचिव मंडल सदस्य महेश कुमार, पूर्व जिला परिषद रामदेव राय, मिथिलेश सिंह, विनय भूषण, पूर्व मुखिया दिलीप राय, संजय कुमार, डॉक्टर विष्णु देव प्रसाद सिंह आदि ने संबोधित किया।

प्राचीन कला केन्द्र की डिप्टी रजिस्ट्रार के निधन से शोक की लहर, जेविसीएटी में वर्चुअल संवेदना सभा आयोजित

समस्तीपुर, प्रात : किरण संवाददाता

प्राचीन कला केन्द्र चंडीगढ की डिप्टी रजिस्ट्रार चंद्रा कटियारमल उर्फ एस नाइक बिमारी से जूझते-जूझते आखिरकार जिन्दगी की जंग हार गई और परमसत्ता में स्वरलीन हो गई। अहले सुबह उनके निधन की सूचना प्रसारित होते ही जिले भर के संगीत सेवियों में शोक की लहर दौड गई। इसी क्रम में ओईनी स्थित जगमोहन विद्यापति कॉलेज ऑफ आर्ट कॉलेज के सचिव डॉ संजय कुमार राजा के नेतृत्व में संवेदना सभा का आयोजन किया गया। जिसमें वक्ताओं ने स्मृति शेष एस नाईक के निधन को प्राचीन कला केन्द्र परिवारा केलिए अपूर्णीय क्षति करार दिया। इस अवसर पर प्राचीन कला केन्द्र के क्षेत्रीय प्रभारी अभिषेक कुमार ने केन्द्र के सचिव सजल कोसर के हवाले से कहा कि लगभग 4 दशकों से पीकेके परिवार के एक अभिन्न अंग के रूप में उनके योगदान और समर्पण को शब्दों में मापा या वर्णित नहीं किया जा सकता है। आज हमने केंद्र के सबसे महत्वपूर्ण और विश्वसनीय स्तंभों में से एक को खो दिया है। उनका स्वर्गवास परिवार के लिए भी बहुत बड़ी त्रासदी है। यह बहुत दुखद और ह्रदय विदारक है। वहीं डॉ राजा ने कहा कि उनका निधन मेरे लिए व्यक्तिगत क्षति है। बेहद सहनशील, स्नेहिल, सरल, सौम्य, गंभीर, हंसमुख और अनुशासन प्रिय श्रीमति नाईक कुशल प्रशासक भी थी। दूसरे शब्दों में कहें तो वे प्राचीन कला केन्द्र की धुरी थी। उनके निधन से उत्पन्न शुन्य को भर पाना बेशक सरल नहीं होगा। इस दौरान दरभंगा से प्राचीन कला केन्द्र के क्षेत्रीय प्रभारी पटना अभिषेक कुमार, मनीष कुमार, के अलावा बडी संख्या में केन्द्राधीक्षकों ने अपनी संवेदना व्यक्त करते हुए स्मृति शेष नाईक को श्रद्धांजलि दी। जिसमें प्रख्यात बांसुरी वादक डॉ वेद प्रकाश आर्य, शकरपूरा से प्रख्यात ताल मर्मज्ञ पंडित रामनरेश राय, खगडिया से पंडित गणेश पाल, रोसडा से रामबालक निराला, पटना से विजय कुमार मिश्रा, समस्तीपुर से अनीता कुमारी, लक्ष्मण कुमार, रामस्वारथ ठाकुर मतवाला, रौशन कुमार, मंगलेश कुमार, डॉ सुनील कुमार सिंह, अंजना शर्मा, मीनू कुमारी, साक्षी ऋतु, सुमित कुमार सुमन, पंडित विनय कुमार झा शामिल थे।

जन शिकायतों को सर्वोच्च प्राथमिकता में रखकर त्वरित निष्पादन करें अधिकारी:डीएम

प्रात :किरणसंवाददाता

मधुबनी जिलाधिकारी अरविन्द कुमार वर्मा के द्वारा शुक्रवार को समाहरणालय स्थित अपने कार्यालय कक्ष में आयोजित जनता के दरबार में जिलाधिकारी कार्यक्रम में जिले के सुदूर क्षेत्रो से आए हुए परिवादियो से मुलाकात कर उनकी शिकायतो को सुनते हुए संबंधित अधिकारियो को त्वरित निष्पादन का निर्देश दिया गया ।गौरतलब हो कि प्रत्येक सप्ताह शुक्रवार को जनता दरबार में जिलाधिकारी कार्यक्रम के आयोजन के मौके पर जिलाधिकारी सभी परिवादियो से मुलाकात करते है और उनकी शिकायतो के निपटारे के लिए संबंधित अधिकारियो को निर्देश भी देते है इस परिप्रेक्ष्य में शुक्रवार, 27 दिसंबर को कुल 71 परिवादी अपनी शिकायतों के साथ जिलाधिकारी से मिले.प्रखंड कार्यालय राजनगर निवासी रंजू देवी द्वारा प्रधानमंत्री आवास योजना के सूची में नाम होने के बावजूद लाभ नही मिलने से संबंधित शिकायत किया गया।

ग्राम महीनाथपुर निवासी जीवछ चौपाल द्वारा उनके पिता के नाम से मिलने वाला पर्चा वाला जमीन से नाम काटने से संबंधित शिकायत किया गया।प्रखंड लौकही निवासी देवीलाल मंडल द्वारा आवास उपलब्ध कराने से संबंधित आवेदन दिया गया।अनुश्रवण एजेंसी निर्मल कुमार द्वारा महीनो से लंबित पेयजल योजना मरम्मती कार्य का लंबित भुगतान करवाने से संबंधित शिकायत किया गया।वार्ड नंबर 09 नगर निगम निवासी मनोज कुमार महतो द्वारा नल जल योजना में अनुरक्षक भत्ता न मिलने से संबंधित शिकायत किया गया।ग्राम पोस्ट भवानीपुर निवासी राजेश कुमार झा द्वारा उनके निजी जमीन पर उनके परिजन के द्वार अवैध कब्जा कर लिया गया है जिसे हटवाने से संबंधित शिकायत किया ।जिलाधिकारी द्वारा आए हुए सभी परिवादियों से बारी-बारी से शिकायते सुनी गई और उनके परिवाद के निवारण हेतु संबधित अधिकारियों को आवश्यक निर्देश भी दिए गए. जिलाधिकारी ने कई प्राप्त शिकायतो के आलोक में संबंधित पदाधिकारियो को फोन कर जन शिकायतों को सर्वोच्च प्राथमिकता में रखकर त्वरित निष्पादन करने का निर्देश दिया।-उक्त अवसर पर उपविकास आयुक्त दीपेश कुमार अपर समाहर्ता आपदा संतोष कुमार आदि उपस्थित थे।

नेहरा थाना क्षेत्र के दो मंदिरों में हुई लाखों की चोरी

प्रात :किरणसंवाददाता

मनीगाछी(दरभंगा)। नेहरा थाना क्षेत्र की राघोपुर दक्षिणी पंचायत के गोढ़ियारी गांव स्थित बजरंगबली मंदिर एवं चम्पापट्टी रजवाड़ा स्थित रामजानकी मंदिर का 26/27 दिसम्बर की रात चोरों ने ताला तोड़कर लाखों रुपए मूल्य के सामानों एवं जेवरातों की चोरी कर ली। इस संबंध में बजरंगबली मंदिर के पुजारी बैद्यनाथ दास ने बताया कि चोरों ने भगवान का चाँदी मुकुट 3 पीस, सोना चाँदी के 500 ग्राम के जेवरात, घड़ीघंटा 6 पीस,भगवान का पार्सद,फूल के थाली-लोटा-प्लेट व अन्य बर्तन कुल 50 किलोग्राम,एल ई डी 52 ईंच का एवं 12 हजार नगद राशि की चोरी कर ली है। वहीं रामजानकी मंदिर के पुजारी कारी यादव ने बताया कि चोरों ने मंदिर के दोनों गेंटों का ताला तोड़कर भगवान के मुकुट चाँदी का 4 पीस वजन 5 सौ ग्राम, टीका व अन्य जेवरात चाँदी का वजन 5 सौ ग्राम का, फू का बर्तन 20 किलोग्राम, बैट्री 2 पीस,दान पेटी का राशि व नगद 25 हजार रुपए का चोरी चोरों के कर ली है। सूचना पाकर थानाध्यक्ष राज किशोर राय पुलिस बल के साथ घटनास्थल पर पहुंचे और दोनों मंदिरों का जायजा लिया। तथा इसकी जानकारी वरीय पदाधिकारियों को दी। सूचना पाकर एस डी पी ओ बेनीपुर आशुतोष कुमार,पुलिस निरीक्षक बहेड़ा राज कुमार मंडल ने भी घटनास्थल का दौरा कर वस्तुस्थिति की जानकारी ली। इस संबंध में थानाध्यक्ष राजकिशोर राय ने बताया कि घटनास्थल पर एफ एस एल, तकनीकी सेल एवं खोजी कुत्ते की टीम को बुलाया गया था। सभी टीमों के पदाधिकारियों ने घटनास्थल से आवश्यक साक्ष्यों को भी संग्रहित किया है। इसका उद्भेदन शीघ्र ही कर लिया जाएगा। ज्ञात हो कि इससे पहले भी दोनों मंदिरों से सोलर लाइट एवं मोटर की चोरी हो चुकी है।

पूर्व प्रधानमंत्री डॉ मनमोहन सिंह के निधन जगहों पर शोकसभा आयोजित

विभूतिपुर, प्रात : किरण संवाददाता

प्रखंड अंतर्गत अलग-अलग जगहों पर भारत के पूर्व प्रधानमंत्री एवं प्रख्यात अर्थशास्त्री डॉ मनमोहन सिंह के निधन पर शोकसभा आयोजित की गई। एक ओर जहां प्रखंड कांग्रेस कार्यालय कल्याणपुर के प्रांगण में प्रखंड अध्यक्ष कपिलेश्वर कुंवर की अध्यक्षता में डॉ मनमोहन सिंह के निधन पर पर शोक सभा आयोजित की गई। जहां सर्वप्रथम उपस्थित लोगों ने उनके तैल चित्र पर पुष्प माला अर्पित कर श्रद्धांजलि दी एवं उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर विस्तार से प्रकाश डाला। मौके पर चंद्रभूषण सिंह, संजीव कुमार ठाकुर, मणि शंकर चौधरी, भोला प्रसादअरुण, रमेश कुंवर, राधाकांत चौधरी सहित दर्जनों कार्यकर्ता मौजूद थे। वहीं दूसरी ओर विभूतिपुर आदर्श चौक पर शेखर प्रसाद सिंह की अध्यक्षता में शोकसभा आयोजित की गई। वहीं बीआरएनकेएस महाविद्यालय कल्याणपुर के प्रांगण में प्राचार्य सूर्य देव प्रसाद सिंह की अध्यक्षता में शोकसभा आयोजित की गई। जहां उपस्थित महाविद्यालय के सभी कर्मियों ने 2 मिनट का मौन धारण कर दिवंगत आत्मा की शांति के लिए ईश्वर से कामना किया। वही पैराडाइज पब्लिक स्कूल के प्रांगण में भी पूर्व प्रधानमंत्री सह प्रख्यात अर्थशास्त्री मन मोहन सिंह के निधन पर शोकसभा आयोजित कर श्रद्धांजलि दी गई।

सरकार पुनः परीक्षा की गारंटी करें अन्यथा होगा बड़ा आंदोलन : आइसा

विभूतिपुर, प्रात : किरण संवाददाता

दरभंगा।बीपीएससी में हुए पेपर लीक के खिलाफ आइसा आर वाई ए के राज्यव्यापी आह्वान पर कॉमरेड भोगेंद्र झा चौक पर मुख्यमंत्री नीतीश कुमार का पुतला दहन किया गया। पुतला दहन की अध्यक्षता आर वाई ए नेत्री ओणम सिंह ने किया। वही इस अवसर पर आर वाई ए राज्य सह सचिव संदीप कुमार चौधरी ने कहा कि जब पूरे देश और दुनिया में क्रिसमस का जश्न मनाया जा रहा था तब बिहार में भाजपा जदयू की डबल इंजन सरकार बिहार के छात्र नौजवानों पर लाठियां बरसा रही थी। श्री चौधरी ने कहा कि छात्रों पर लाठी चार्ज करने वाले अधिकारी पर करवाई किया जाय। वही आइसा नेता प्रिंस राज ने कहा कि बिहार इस वक्त शिक्षा और परीक्षा माफियाओं के गिरफ़्त में है। समय पर डिग्री न मिलना, कॉलेज में शिक्षक न होना, परीक्षा में धांधली, पैसे पर बिकती नौकरी और डिग्री बिहार में आम चलन बनता जा रहा है। वहीं आर वाई ए नेत्री ओणम कुमारी ने कही कि आइसा आर वाई ए छात्र युवाओं के इस आंदोलन के साथ खड़ा है। हम बिहार सरकार की इस हिंसात्मक कार्रवाई का कड़ी शब्दों में निंदा करते हैं। बेहतर शिक्षा और पारदर्शी व्यवस्था हर नागरिक का अधिकार है और इसे सुनिश्चित कराना सरकार की जिम्मेदारी है। सोनू कुमार की आत्महत्या, बिहार की डबल इंजन सरकार पर धब्बा है। यह एक सांस्थानिक हत्त्या है। इस अवसर पर गजेंद्र नारायण शर्मा, केशरी कुमार यादव, वरुण कुमार यादव, दिलीप कुमार यादव, ओणम सिंह, मिथिलेश पासवान, अमरजीत पासवान, राजू कर्ण, सिद्धू कुमार चौधरी, पप्पू खान, कलीम नद्दाफ, धनराज साह, ब्रह्मदेव यादव, प्रखण्ड सचिव दिलीप यादव, अध्यक्ष मोहम्मद नजर शाहिल, कॉपीलेश्वर यादव, पवन यादव, रामश्रृंगार यादव, मोहम्मद समीर, लक्ष्मण पासवान, कुर्बान नद्दाफ, फोगनी सदाय सहित कई लोग शामिल थे

युवा नेता सुजीत कुमार यादव ने 2026 पंचायत चुनाव के लिए जनता के समक्ष पड़वा बेलही पंचायत से दावेदारी पेश की

विभूतिपुर, प्रात : किरण संवाददाता

मधुबनी जयनगर के युवा नेता सुजीत कुमार यादव ने आगामी बिहार पंचायत चुनाव 2026 के लिए प्रखंड क्षेत्र के पड़वा बेलही पंचायत से मुखिया पद पर अपनी उम्मीदवारी की घोषणा की है। उन्होने पंचायत के जनता के समक्ष आगामी चुनाव हेतु दावेदारी प्रस्तुत करते हुए घोषणा की है कि डेढ़ वर्ष बाद होने वाले बिहार पंचायत चुनाव 2026 में वे मुखिया पद पर जनता का आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए चुनाव लड़ने की घोषणा की है। सुजीत कुमार यादव जयनगर के खैरामठ गाव निवासी युवा नेता हैं और कग्रेस के ओबीसी सेल(पिछड़ा वर्ग प्रकोष्ठ) के बिहार प्रदेश सचिव हैं। इसके अतिरिक्त वे पार्टी में जवाहर बाल मंच के मधुबनी जिला अध्यक्ष भी है। वे पूर्व में भी 2016 और 2021 के बिहार पंचायत चुनाव में पंचायत समिति सदस्य पद पर चुनाव लड़ चुके है। अब देखना दिलचस्प होगा कि वे 2026 में इस पंचायत के मतदाताओ को कितना प्रभावित कर पाते हैं और उन्हे मतदाताओ का कितना साथ और आशीर्वाद मिल पाता है।2026 में नए आरक्षण रोस्टर से होगा पंचायत चुनाव-बिहार में वर्तमान ग्राम पंचायत निर्वाचन अधिनियम 2006 के अनुसार आरक्षण रोस्टर दो कार्यकाल(10 वर्षों) के लिए लागू होता है और हरेक 10 वर्ष पर रोस्टर अनुरूप आरक्षण बदलाव जरूरी है। बिहार में पिछली बार 2016 के ग्राम पंचायत निर्वाचन में आरक्षण रोस्टर का निर्धारण किया गया था जिसके अंतर्गत दो चुनाव(2016 और 2021) हो चुका है और इसका कार्यकाल 2026 तक है। अब 2026 का जो चुनाव होगा वह नए आरक्षण रोस्टर का निर्धारण करके होगा। इसके अंतर्गत जो आरक्षित सीटे है, उन्हे ओपन/सामान्य किया जा सकता है या अन्य आरक्षण कोटे में शिफ्ट किया जा सकता है। बिहार में स्थानीय चुनावों(ग्राम पंचायतों और नगर निकायों) में 2006 से ही 50% महिला आरक्षण भी लागू है यानि हर आरक्षण कोटे के अंदर भी महिलाओ को 50% आरक्षण दिया गया है।जयनगर प्रखंड के पड़वा बेलही पंचायत की बात करें तो यहा मुखिया पद पर पिछले 20 वर्षों(4 टर्म) से आरक्षण लागू है, इसमे दो टर्म(2006 और 2011) अनुसूचित जाति के लिए आरक्षित था तो दो टर्म(2016 और 2021) अति पिछड़ा वर्ग के लिए 2026 में आरक्षण रोस्टर पुनर्निर्धारण में इस पंचायत को सामान्य(ओपन) किया जायेगा या सामान्य(ओपन) महिला किया जा सकता है। सामान्य यानि ओपन कैटेगरी में कोई भी चुनाव लड़ सकते है वही सामान्य महिला में किसी भी वर्ग की महिला चुनाव लड़ सकती है। वही इस पंचायत में सरपंच पद पर भी दो टर्म से अति पिछड़ा आरक्षण है जिसे सामान्य या सामान्य महिला किया जा सकता है। पंचायत समिति सदस्य पद महिला आरक्षित है जिसे अति पिछड़ा या अनुसूचित जाति महिला किया जा सकता है। वही जयनगर प्रखंड अंतर्गत दो जिला परिषद क्षेत्रो में भी अति पिछड़ा महिला आरक्षण है जिसे अनुसूचित जाति महिला या सामान्य किया जा सकता है। बिहार में स्थानीय चुनावों हेतु अनुसूचित जाति को 16%अति पिछड़ा को 20%अनुसूचित जनजाति को 02% और हर वर्ग के भीतर भी 50% महिलाओं के लिए सीटे आरक्षित है।

उत्तर - पश्चिम बिहार मे अगले 24 घंटे में बूंदाबांदी की सम्भावना

प्रात : किरण संवाददाता

मुजफ्फरपुर। उत्तर -पश्चिम बिहार के कुछ जिलों में अगले 12से 24 घंटे के भीतर हल्की बूंदाबांदी हो सकती है। वैसे आम तौर पर मौसम शुष्क रहने की सम्भावना है। यह जानकारी ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, कृषि मौसम विभाग जलवायु परिवर्तन पर उच्च अध्ययन केन्द्र डा० राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय द्वारा 28 दिसम्बर से 1 जनवरी तक के लिए जारी मौसम पूवार्नुमान में दी गई है। मौसमीय वेधशाला के आकलन के अनुसार पिछले तीन दिनों का औसत अधिकतम एवं न्यूनतम तापमान क्रमशः 25.5 एवं 9.7 डिग्री सेल्सियस रहा। औसत सापेक्ष आर्द्रता 90 प्रतिशत सुबह ने एवं दोपहर में 47 प्रतिशत, हया की औसत गति 4.4 कि०मी० प्रति घंटा एवं दैनिक वाष्पन 14 मि०मी० तथा सूर्य प्रकाश अवधि औसतन 4.6 घन्टा प्रति दिन रिकार्ड किया गया तथा 5 रो०गी० की गहराई पर भूमि का औरात तापमान सुबह में 14.6 एवं दोपहर में 259 जिग्री सेल्सियस रिकार्ड किया गया। इस अवधि में मौसम शुष्क रहा तथा सुबह में हल्का कुहासा देखा गया। अगले 5 दिनों के लिए जारी पूवार्नुमान की अवधि में अधिकतम तापमान सामान्य से 4-5 डिग्री सेल्सियस अधिक रह सकता है, और यह तापमान 27-28 डिग्री सेल्सियस के आसपास बने रहने की सम्भावना है। न्यूनतम तापमान 13-14 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। पूवार्नुमानित अवधि में औसतन 4-8 कि०मी० प्रति घंटा की रफ्तार से पुरवा हवा चलने की संभावना है। किसानों को सलाह दी गई है किबिलम्ब से बोई गयी गेहूँ की फसल जो 21 से 25 दिनों की हो गयी हो 30 किलो नेत्रजन प्रति हेक्टेयर की दर से उपरिवेशन करें। गेहूँ की बुआई के 30 से 35 दिनों के बाद की अवस्था जिसने (महाली सिंचाई के बाद) गेहूं की फसल में कई प्रकार के खर-पतवार उग आते है।

संक्षिप्त खबरें

शराबी पुत्र को मां ने करवाया गिरफ्तार

जमुई [झाझा] एक मां ने अपने शराबी पुत्र की करतूत से परेशान होकर थाना में उसके खिलाफ लिखित शिकायत दर्ज करवाते हुए उसे गिरफ्तार करवाया है। सोहजाना कि रहने वाली सावित्री देवी ने दर्ज आवेदन में बताया कि मेरा पुत्र विशाल कुमार शराब के नशे में धुत होकर घर में हमेशा क्लेश करते हुए अपने ही दो भाइयों में से इस भाई को जान मारने या फिर खुद आत्महत्या कर पूरे परिवार को फंसा देने की धमकी देता है। वही पीड़िता के द्वारा पुलिस को सूचना देते हुए पुत्र को गिरफ्तार करवाया।

अवैध बिजली चोरी करते पकड़े गए 5 लोगों पर प्राथमिकी हुई दर्ज

जमुई [झाझा] अवैध तरीके से बिजली चोरी कर घरेलू परिसर में उपयोग किये जाने वालों के खिलाफ विद्युत आपूर्ति प्रशाखा झाझा के कनीय विद्युत अभियंता आदित्य कुमार के द्वारा अलग अलग क्षेत्र में छापेमारी करते हुए कुल पांच लोगो को पकड़े जाने के बाद उसके खिलाफ थाना में प्राथमिकी दर्ज कराया है। कनीय विद्युत अभियंता ने दर्ज आवेदन में बताया कि महापुर गांव में प्रदीप कुमार, बसंत माझुरी को अवैध तार मेन लाइन में अलग से तार जोड़कर बिजली का उपयोग कर रहा था।

संयम-सादगी और ज्ञान का अद्भुत प्रकाश स्तंभ थे डॉ. मनमोहन सिंह

मनमोहन सिंह आर्थिक उन्नति के थे सूत्रधार, और संयम से किया आर्थिक सुधार

प्रात : किरण संवाददाता

जमुईः- आर्थिक सुधार के जनक और भारत के पूर्व प्रधानमंत्री डॉ मनमोहन सिंह के निधन पर गहरा दुःख व्यक्त करते हुए केकेएम कॉलेज के स्नातकोत्तर अर्थशास्त्र विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. (प्रो.) गौरी शंकर पासवान ने कहा कि डॉ. मनमोहन सिंह आर्थिक क्रांति के सूत्रधार एवं संयम, सादगी और ज्ञान का अद्भुत प्रकाश स्तंभ थे। वे जाने माने अर्थशास्त्री, भारतीय राजनीति के अद्वितीय नेता और भारत के कुशल प्रधानमंत्री थे। प्रधान मंत्री के रूप में उनका कार्यकाल भारत के विकास के लिए मिल का पत्थर साबित हुआ। उनका व्यक्तित्व बहुत ही सौम्य, विनम्र और संयमित था। डॉ. मनमोहन सिंह के 92 वर्ष की उम्र में निधन से भारत ने एक सच्चे नेता, महान विचारक और विनम्र व्यक्तित्व को खो दिया है। उनके जाने से जो शून्यता उत्पन्न हुई है, उसे भरना असंभव है। लेकिन उनकी स्मृतियां विचार और सिद्धांत हमें सदैव मार्गदर्शन करती रहेंगी। अपनी ज्ञान और नेतृत्व से देश को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाया। उनके नेतृत्व में भारतीय अर्थव्यवस्था को मजबूती मिली। 1991 में देश संकट में था तब उन्होंने वित्त मंत्री के रूप में आर्थिक सुधारो की शुरूआत की। उनका राजनीतिक जीवन ईमानदारी, पारदर्शिता, दूरदर्शिता और निःस्वार्थ सेवा का उदाहरण था। ऐसे महान देशभक्त और वैश्विक स्तर के अर्थशास्त्री डॉ.मनमोहन सिंह को जीते जी तो किसी सरकार ने भारत रत्न अलंकार से नहीं नवाजा,किंतु वर्तमान केंद्र सरकार से मांग है कि मरणोपरांत देश का सर्वोच्च सम्मान भारत रत्न से उन्हें अलंकृत करे तथा उनके जन्म दिन 26 सितंबर को ह्रराष्ट्रीय विकास दिवसह्न के रूप में मनाने की उद्घोषणा करे.यही उनके प्रति सबसे अच्छी और सच्ची श्रद्धांजलि होगी। प्रो.पासवान ने ज्ञान के प्रकाश और प्रतीक स्व. मनमोहन सिंह को शत-शत नमन कर उन्हें श्रद्धा सुमन अर्पित की और कहा कि अटल थे वो जिनका ना कोई जवाब था, भारत मां के सच्चे बेटे वो अद्भुत नवाब था। ईश्वर से प्रार्थना है कि उस महान पुरुष की आत्मा को शांति प्रदान करें और शोकाकुल परिवार को दुःख सहन करने की शक्ति दे।

केकेएम कॉलेज के राजनीतिक विज्ञान के असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ अजीत कुमार भारती ने पूर्व प्रधानमंत्री स्वर्गीय मनमोहन सिंह के आकस्मिक निधन पर गहरा शोक व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि डॉ. मनमोहन सिंह आर्थिक विचारक के साथ-साथ एक महान राजनीतिज्ञ भी थे। उन्होंने कठिन परिस्थितियों में भी संयम बनाए रखा और देश की प्रगति के लिए निरंतर कार्यरत रहे। ऐसे भारत के विभूति को मेरा कोटि-कोटि नमन है। स्व.मनमोहन सिंह जी का व्यक्तित्व हमेशा भारतीयों के दिलों में जीवित रहेगा। उनके विचार और आदर्श हमें आगे बढ़ने की प्रेरणा देते रहेंगे। ईश्वर से कामना है कि उनकी आत्मा को शांति प्रदान करें। उन्होंने कहा कि- उनकी कविता में राष्ट्र की गूंज थी हर पंक्ति में स्वाभिमान था, उनकी वाणी थी दीपक जैसी जो9 हर तिमिर में दर्पण सामान था।

डॉ भीमराव अंबेडकर संविधान के निर्माता एवं जन के भगवान भी थे :आसा

प्रात : किरण संवाददाता

मुंगेर। भारतीय संविधान के सर्वधानिक अधिनियमों का उल्लंघन करता है तो वह भारतीय नागरिक नहीं बल्कि एक अपराधी माना जाएगा ' डॉक्टर भीमराव अंबेडकर दलितों के महान नेता थे जबकि उन्होंने पूरा जीवन दलित उत्थान के लिए लगा दिया ' आसा पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव विनय कुमार उर्फ गुड्डु साह ने कहा की राजनीतिक लाभ की चाहत में विवाद उत्पन्न हो रहा है ! जबकि डॉक्टर अंबेडकर आशा व्यक्त करते थे कि हिंदू धर्म अस्पृश्यता और जाति व्यवस्था से छुटकारा पा सकता है। यही कारण था कि उन्होंने दलितों के मंदिरों में प्रवेश करने जैसी आंदोलन सहित सुधारवादी पहलुओं का समर्थन किया।

डॉ आंबेडकर के विचारों को खंडित कर बोलना भारतीयों के लिए दुर्भाग्यपूर्ण है ' उन्होंने केवल अपने वकालत नहीं की बल्कि समानता ,स्वतंत्रता और बंधुत्व के लोकतांत्रिक मूल्यों की भी वकालत की।

डॉ आंबेडकर के कारण ही देश में स्थाई ताकत, बुद्धि और साहस प्राप्त कर सकता है ' किसी भी देश का संविधान सबसे पवित्र ग्रंथ माना जाता है। जो राष्ट्र का पथ प्रदर्शक होता है जबकि संविधान के तहत और सांसद चलता है और भगवान के शरण में मोक्ष की प्राप्ति होती है।

सोनो पुलिस की बड़ी कार्रवाई, अवैध बालु लदा तीन जुगाड़ गाड़ी सहित एक ट्रेक्टर वाहन जब्त

प्रात : किरण संवाददाता

जमुई / सोनो : शुक्रवार की सुबह सोनो पुलिस द्वारा किया गया छापामारी अभियान में बालु लदा एक ट्रेक्टर वाहन के साथ तीन जुगाड़ गाड़ी को जप्त करने मे सफलता हासिल की गई है ।सोनो थाना एस आई विशाल कुमार सिंह ने जानकारी देते हुए बताया कि सोनो पुलिस द्वारा लगातार अवैध कारोबारियों मे शराब एवं बालु के खिलाफ शख्ती के साथ कार्यवाई किया जा रहा है ।

गुप्त सुचना के आधार पर सोनो थाना क्षेत्र के दुधकसोई गाँव से सटे बहियार से अवैध उत्खनन कर बालु लेकर जा रहे एक लाल कलर की ट्रेक्टर वाहन तथा सोनो थाना से सटे बरनार नदी के घाट से अवैध उत्खनन कर बालु लदा तीन जुगाड़ गाड़ी को जप्त कर लिया गया है ।श्री सिंह ने बताया कि इस छापामारी अभियान में खनन विभाग की टीम एवं सोनो थाना के पुलिस की टीम संयुक्त रुप से शामिल थे ।ज्ञात हो कि सोनो पुलिस द्वारा किया गया इस छापामारी अभियान से अवैध कारोबारियों मे भय का माहौल बनी हुई है ।

ऑनलाइन हाजिरी में छेड़छाड़ करने वाले पर होगी कार्रवाई

प्रात : किरण संवाददाता

गिद्धौर। ई-शिक्षाकोष (ऐप) पर जिले के सरकारी स्कूलों के शिक्षकों की ऑनलाइन हाजिरी अनिवार्य है, लेकिन कई शिक्षक ऑनलाइन उपस्थिति सिस्टम को भी गच्चा दे रहे हैं। हाजिरी के लिए एक ही फोटो को कई बार अपलोड करने की भी बात सामने आई है। ऑनलाइन हाजिरी बनाने के दौरान शिक्षकों द्वारा छेड़छाड़ करने का मामला सामने आने के बाद शिक्षा विभाग ने इसे गंभीरता से लिया है। ऐसे शिक्षकों को सेवा मुक्त करने का भी एक्शन विभाग के द्वारा लिया जा सकता है। इसके साथ ही उनकी गतिविधियों को सेवा पुस्तिका में भी दर्ज किया जाएगा। इसको लेकर विभाग के निदेशक (प्रशासन)-सह-अपन सचिव सुबोध कुमार चौधरी ने जिला शिक्षा पदाधिकारी को जांच कर कार्रवाई का निर्देश दिया है। जारी पत्र में उन्होंने कहा है कि शिक्षकों द्वारा ई-शिक्षकोष एप के जरिए ऑनलाइन उपस्थिति 1 सितंबर से बनाई जा रही है। शिक्षकों के लिए ऑनलाइन अनिवार्य है कि उन्हें विद्यालय परिसर के 500 मीटर के भीतरी उपस्थिति दर्ज करनी है और ई- शिक्षाकोष मोबाइल ऐप पर परिसर के 500 मीटर के भीतर का लाइव फोटोग्राफ खींचकर अपलोड करना है।विभाग द्वारा शिक्षकों की ऑनलाइन हाजिरी के डाटाबेस के विश्लेषण में पाया गया है कि कुछ शिक्षकों ने ऑनलाइन उपस्थिति प्रणाली में धोखाधड़ी की है। अपलोड किया गया फोटोग्राफ की जांच के दौरान पाया गया है कि कई शिक्षकों ने एक ही फोटोग्राफ बार-बार कई दिनों तक अपलोड किया है।

व्याप्त भ्रष्टाचार के खिलाफ प्रखंड कार्यालय में नव युवक संघ ने दिया धरना

प्रात : किरण संवाददाता

जमुई [झाझा] शुक्रवार को नव युवक संघ के द्वारा व्याप्त भ्रष्टाचार के खिलाफ प्रखंड सह - अंचल सहित विभिन्न विभागों में भ्रष्टाचार चरम पर है ।जिसपर नियंत्रण डबल इंजन की सरकार में नहीं है । आम-अवाम त्राहिमाम में हैं ।उक्त बातें झाझा प्रखंड कार्यालय परिसर में आयोजित एक दिवसीय धरना को संबोधित करते हुए धरना की अगुवाई कर रहे समाजिक कार्यकर्ता गौरव सिंह राठौर ने कही।उन्होंने केंद्र व राज्य सरकार को घेरते हुए कहा कि सत्ता में बैठे नेताओं को जनसमस्याओं से निपटने की क्षमता कम हो गई है ।कई भूमिहीन लोग हैं जिन्हें आज तक भूमि नसीब नहीं हो सका है कई महीनो से अंचल कार्यालय का चक्कर लगाने को मजबूर है लेकिन उनकी पीड़ा कोई भी सुनने को तैयार नहीं है आगे उन्होंने कहा की दाखिल खारिज में भी अवैध कब्जा करवाने का काम किया जा रहा है व परिसर में दलालों का अड्डा बना रहता है इसकी भी सीसीटीवी से जांच करने की मांग की। जन संघर्ष मोर्चा के संयोजक विनोद यादव उर्फ फुटल कपार ने कहा की झाझा प्रखंड क्षेत्र में कई लोग भूमिहीन है उन सभी लोगों को जल्द से जल्द पर्चा दिया जाए, राशन कार्ड से वंचित लोगों को शिविर लगाकर कार्ड वितरण कराया जाए, प्रधानमंत्री आवास योजना से जो वंचित हैं उन्हें योजना का लाभ दिलाया जाए, दाखिल खारिज के नाम पर अवैध वसूली को बंद किया जाए, दलालों द्वारा दाखिल खारिज में अवैध दखल कब्जा बंद किया जाए, जन समस्या को उठाने वाले व्यक्ति पर मुकदमा करना बंद करे नहीं तो आने वाले समय में बेहद बड़े पैमाने पर अंचल कार्यालय में प्रदर्शन व घेराव किया जाएगा।मौके पर एमडी मेराज अंसारी, अरुण कुमार पंडित, पूर्ण किशोर शर्मा, संतोष कुमार, हलीमा खातून, कालो देवी ,पार्वती देवी,सिटी देवी,बेली देवी,कुसुम देवी,अनमोल सेनतुरी, हिना देवी,अजित हरिजन,नीमा देवी सहित कई लोग धरना में शामिल थे।

बीडीओ ने जरूरतमंदों के बीच किया कंबल वितरण

कई वृद्ध को ठंड से मिलेंगे राहत

प्रात : किरण संवाददाता

जमुई ई०अलीगंजः- प्रखंड क्षेत्र में बढ़ती ठंड से राहत पहुंचाने को लेकर सरकारी योजना के तहत शुक्रवार को ई०अलीगंज प्रखंड मुख्यालय में जरूरतमंद लोगों के बीच प्रखंड विकास पदाधिकारी अभिषेक भारती के द्वारा कंबल का वितरण किया गया ।राज्य सरकार की ओर से वृद्ध, निर्धन, दिव्यांग, भूमिहीन, असहाय व कुष्ठ रोगियों के परिवारों के बीच कंबल का वितरण किया जाना है. बीडीओ ने प्रखंड के सभी 13 पंचायतों का दौरा कर सामाजिक सुरक्षा योजना के तहत आवंटित कंबल जरूरतमंदों के बीच वितरित किया जा रहा है बीडीओ ने जानकारी देते हुए कहा कि सरकार द्वारा योजनांतर्गत प्रखंड में बढ़ती ठंड के मद्देनजर कंबल उपलब्ध कराया जा रहा है. जिसमें प्राथमिकता के आधार पर कंबल का वितरण किया जाना है. सबसे पहले कुष्ठ रोगियों की पहचान कर कंबल का वितरण किया जा रहा है. उन्होंने बताया कि कुष्ठ रोगियों को चिन्हित कर उनके घर पर कंबल आवंटन के आधार पर कंबल पहुंचाया जा रहा है. साथ हीं जरूरतमंद लोगों के बीच प्रखंड मुख्यालय परिसर में भी कंबल का वितरण किया गया।

गंगरा पंचायत के वार्ड एक में अर्द्धनिर्मित सात निश्चय का जल नल योजना

बीते तीन वर्षों से अधर में लटका है सरकार का यह महत्वाकांक्षी योजना

प्रात : किरण संवाददाता

गिद्धौर। सरकार सात निश्चय योजना के तहत नल जल योजना पार्ट टू के तहत निचले पायदान पर विकास की लकीर खींचने की हर मुमकिन कवायद कर रही है, तो वहीं दूसरी ओर इससे इतर प्रखंड क्षेत्र में ऐसे योजनाओं में बरती गयी अनियमितता से यहां विकास का मार्ग अवरुद्ध हो गया है। वहीं सात निश्चय योजना के तहत इस जल नल योजना से शुद्ध पेयजल का सपना गंगरा पंचायत के वार्ड वासियों का सपना ही बनकर रह गया है। जिसकी ताजा उदाहरण गंगरा से गिद्धौर जाने वाले बाईपास रेलवे स्टेशन सड़क के किनारे वार्ड नंबर 01 अंतर्गतन लाखों रुपये की लागत से अर्द्धनिर्मित पड़े इस नल जल योजनाको देखकर इसका साफ अंदाजा लगाया जा सकता है। बताते चलें कि गंगरा पंचायत में बीते तीन वर्षों से अधिक समय से अधूरे पड़े यहां इस नल जल योजना के स्ट्रक्चर को देख ग्रामीण वार्ड वासियों ने अब इस योजना से लाभान्वित होने की आस छोड़ दी है, प्रखंड के पदाधिकारियों के लापरवाह रवैये एवं योजना में बरती गयी उदासीनता से यह योजना खटाई में पड़ रह गयी है। इधर वार्ड नंबर एक में अधर में पड़े इस जल नल योजना के कारण क्षेत्र में इस भीषण गर्मी में पेयजल समस्या झेल रहे गंगरा पंचायत के वार्ड संख्या 01 रेलवे स्टेशन कॉलोनी के दर्जनों ग्रामीणों ने तीन वर्षों से अधूरे पड़े इस योजना के निर्माण कार्य को पूर्ण करने को लेकर कई बार पदाधिकारियों का ध्यान समस्या को ले आकृष्ट कराया है, लेकिन योजना के संधारण से जुड़ा कार्य यहां सिफर ही है।ग्रामीण कहते है कि प्रखंड क्षेत्र के विभिन्न इलाकों में भी सात निश्चय से जुड़ी योजनाओं की जमीनी स्तर पर जांच की तो सरकार के इस महत्वपूर्ण सात निश्चय योजना से जुड़े घालमेल का खुलासा हो जाएगा। लोगों ने पेयजल से जुड़ी इस समस्या के निदान को ले जिले के बरीय अधिकारियों से व्यवस्था में सुधार को ले पहल करने की मांग की। ताकि गंगरा वार्ड एक के ग्रामीणों को शुद्ध पेयजल मय्यसर हो सके। कहते हैं पंचायती राज पदाधिकारी इस संदर्भ में पंचायती राज पदाधिकारी अपराजिता सुमन ने कहा कि जल नल योजना पीएचईडी को हस्तांतरित कर दिया गया है, मामला संज्ञान में आया है पीएचईडी से समन्वय स्थापित कर योजना सुचारू करवाने का हर संभव प्रयास किया जाएगा।

ससुराल वालों ने विवाहिता और उसके मायके वालों के साथ की मारपीट

प्रात : किरण संवाददाता

जमुई [झाझा] एक विवाहिता महिला ने अपने पति सहित ससुराल के अन्य सदस्यों पर मारपीट करने एवं घर से बाहर निकाल दिए जाने का मामला थाना में दर्ज कराई है। बैजलपुरा गांव को रहने वाली काजल कुमारी ने दर्ज आवेदन में बताया कि वर्ष 2022 में आशीष दास से शादी हुआ जिसके बाद मेरे पति, ससुर किष्टो दास, सास उमा देवी एवं ससुराल के सदस्य मेरे पिता से बुलेट गाड़ी और सोने का चैन की मांग करने लगा जिसको देने में मेरे पिता असमर्थ हुए। तभी पता चला कि मेरे पति शिवानी कुमारी नाम की एक युवती से शादी कर लिया। गुरुवार को जानकारी मिलने पर मैं, मेरी मां सावित्री देवी, बहन अर्पणा कुमारी, भाई प्रमोद के साथ ससुराल पहुंची और दूसरी शादी किए जाने का विरोध हमलोगों ने किया तो उसी बात को लेकर पति सहित ससुराल के अन्य सदस्यों हमलोगों के साथ लाठी, डंडा, पत्थर से मारपीट करते हुए घायल कर दिया। पीड़िता की शिकायत दर्ज होने के बाद पुलिस नामजद लोगों के खिलाफ कार्रवाई करने में जुट गई है ।

जननी बाल सुरक्षा योजना के तहत प्रसव के बाद लाभुक महिलाओं को दी जाने वाली राशि के नियम का किया गया संशोधन

प्रात : किरण संवाददाता

जमुई [झाझा] जननी बाल सुरक्षा योजना के तहत प्रसव के बाद लाभुक महिलाओं को दी जाने वाली राशि के नियम संशोधन किया गया इसके तहत अब 1 जनवरी 2025 से नए नियम के तहत प्रसव के बाद महिलाओं के खाते में 48 घण्टे के अंदर सरकार की ओर से दी जाने वाली राशि उसके खाते में पहुंच जाएगी। नए नियम के तहत अब प्रसव के बाद लाभुक महिलाओं को सरकारी अस्पताल का चक्कर ज्यादा नही लगाना पड़ेगा और उनके खाते में 48 घण्टे में राशि प्राप्त हो जाएगा जानकारी देते अस्पताल के स्वास्थ्य प्रबन्धक सुभाषचंद्र ने बताया कि नए संसोधन के तहत गर्भवती महिला को प्रसव से पूर्व सरकारी अस्पताल में जांच के लिए आना होगा। प्रसव के समय पूरा विवरण अस्पताल को गर्भवती महिला के द्वारा दी जाएगी। जिसके बाद प्रसव होने के बाद 48 घण्टे तक उसे अस्पताल में रहना होगा। आशा प्रसूता का सम्पूर्ण डाटा एकत्रित करने के बाद एएनएम और सीएचओ क माध्यम से जेबीएसवाई डीबीटी पोर्टल पर अपलोड किया जाएगा जिसके बाद प्रसूता के दी जाने वाली बैंक खाता में ऑनलाइन पेमेंट कर दिया जाएगा। आगे उन्होंने बताया कि इस सम्बध में जीएनएम को प्रशिक्षण भी दिया जाएगा।

रेलवे की ओर से लगाया गया रेलकर्मी व उनके परिवार के बीच निःशुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर

प्रात : किरण संवाददाता

जमुई [झाझा] शुक्रवार को रेलवे पॉली क्लीनिक में निःशुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर का आयोजन किया गया। रेलकर्मियों एवं उनके परिवार के स्वास्थ्य को बेहतर बनाये रखने को लेकर ।जिसमे 300 से भी ऊपर रेलकर्मी व उनके परिजन ने शिविर में पहुंचकर अपना अपना स्वास्थ्य जांच करवाया जिसमे एचवीपी सवाईकल कैंसर से बचने के लिए 16 महिला मरीज को टीका लगाया गया।रेलकर्मी व उनके परिवार का स्वास्थ्य जांच करने के बाद उनके बीच निःशुल्क दवा वितरण किया गया साथ ही साथ उन्हें कई तरह के परामर्श भी दिया और उन्हें खान पान का सही तरीका और पौष्टिक आहार लेने के लिए सलाह दिया गया। एडीएमओ डॉक्टर विशाल राठौड़ ने शिविर को लेकर बताया कि रेलकर्मियों के बीच इस तरह का शिविर हमेशा डिविजन क्षेत्र में रेलवे के वरीय पदाधिकारी के आदेशानुसार होते रहता है। जिसमे सभी तरह की जांच रेलकर्मी व उनके परिवार का किया जाता है। सुबह निर्धारित समय 10 बजे सुबह से ही रेलकर्मियों उनके परिजनों की भीड़ रेलवे पॉली क्लीनिक में जुट गई जो निर्धारित समय संध्या चार बजे तक आयोजित किया गया। जिसमें दानापुर डिवीजन से आये एक महिला और एक पुरूष डॉक्टर के साथ अन्य 10 स्वास्थ्य कर्मी ने पॉली क्लीनिक के डॉक्टर एवं अन्य स्वास्थ्य कर्मी के साथ मिलकर रेलकर्मी और उनके परिवार का स्वास्थ्य जांच किया गया। शिविर में पॉली क्लीनिक के एडीएमओ डॉक्टर विशाल राठौड़, डॉक्टर वंदना ने रेलकर्मी व उनके परिवार के सदस्यों का बीपी, शुगर, ईसीजी, वजन, खून जांच के अलावे एचवीपी सवाईकल कैंसर से बचने के लिए 9-45 वर्ष की लड़कियों एवं महिलाओं को टीका भी लगाया गया। मौके पर डॉक्टर हिमाद्रि मोहन सहित अन्य रेलवे स्वास्थ्य कर्मी मौजूद थे।

70 वीं बीपीएससी परीक्षा रद्द करने को लेकर तारापुर छात्र राजद ने विरोध जताया

प्रात : किरण संवाददाता

तारापुर (कोर्ट)।70 वीं बीपीएससी परीक्षा रद्द करने को लेकर तारापुर छात्र राजद ने मुख्यमंत्री नीतीश कुमार का पुतला दहन करके विरोध जताया है ।

बीपीएससी छात्रों का मुख्य मांग है कि सभी 912 परीक्षा केंद्र को रद्द करना चाहिए ना कि सिर्फ एक परीक्षा केंद्र को उन्होंने कहा कि अगर परीक्षा प्रश्न पत्र लिक नहीं हुआ तो सिर्फ एक बीपीएससी बापू परीक्षा केंद्र के ही रद क्यों किया गया। हालांकि बीपीएससी ने कहा था कि कोई प्रश्न पत्र लिक नहीं हुआ है इस मौके पर छात्र राजद के कार्यकर्ता अंकित कुमार सूरज कुमार अनिकेत कुमार प्रणब कुमार आशीष कुमार आयुष कुमार इत्यादि छात्र मौजूद थे।

भाजपा के नकुल विश्वकर्मा बने लक्ष्मीपुर प्रखंड के मंडल अध्यक्ष

प्रात : किरण संवाददाता

जमुई ।जिले लक्ष्मीपुर प्रखंड मुख्यालय में अवस्थित जन प्रतिनिधि भवन के प्रांगण में प्रकाश कुमार भगत राष्ट्रीय परिषद सदस्य भाजपा के गरिमामय उपस्थिति में नकुल विश्वकर्मा को सर्वसम्मति से प्रखंड मंडल अध्यक्ष मनोनीत किया गया। वहीं कार्यक्रम को संबोधित करते हुए श्री भगत ने बताया कि लक्ष्मीपुर मंडल अध्यक्ष पद के लिए तीन नाम प्रदेश कमेटी को भेजा गया। जिसमें से नकुल विश्वकर्मा को मंडल अध्यक्ष पद पर चयनित किया गया। शुक्रवार 27 दिसम्बर को 4:00 अपराह्न को पूर्व मंडल अध्यक्ष प्रशांत कुमार साह के अध्यक्षता में आयोजित कार्यक्रम में प्रकाश कुमार भगत ने लक्ष्मीपुर प्रखंड मंडल अध्यक्ष पद पर नकुल विश्वकर्मा नाम की घोषणा की।जिसे उपस्थित दर्जनों कार्यकताओं ने सहस्त्र स्वीकार किया और नये मंडल अध्यक्ष को फूल माला पहनाते हुए मिठाई खिलाकर स्वागत किया। वहीं नये मंडल अध्यक्ष नकुल विश्वकर्मा ने लोगों और कार्यकताओं को संबोधित करते हुए कहा कि जो दायित्व हमें मिला है उसे इमानदारी पूर्वक निर्वहन करूंगा। लक्ष्मीपुर प्रखंड में भाजपा का परचम लहराने हेतु आप सबों का सहयोग अपेक्षित है।इस अवसर पर संजीव कुमार सिंह उपाध्याय जिला किसान मोर्चा, पंकज सिंह उर्फ बब्लू सिंह,डाबो चौरसिया, पंकज सिंह, ओमप्रकाश सिंह, प्रमोद साह,नवल किशोर साह,कुमोद कुमार एवं अन्य भाजपा कार्यकर्ता उपस्थित थे।

आधुनिक राष्ट्र के आर्थिक नीतियों के शिल्पकार थे पूर्व प्रधानमंत्री डॉक्टर मनमोहन सिंह : सपा

प्रात : किरण संवाददाता

मुंगेर। देश के पूर्व प्रधानमंत्री महान अर्थशास्त्री डॉ मनमोहन सिंह के निधन से मर्माहत सर्वदलीय संघर्ष जिला मुख्यालय स्थित सीपीआई कार्यालय श्रद्धांजलि निवेदित की और उन्हें आधुनिक भारत का शिल्पकार कहा ।राजद जिला अध्यक्ष त्रिलोकी नारायण शर्मा की अध्यक्षता में एक आयोजित कार्यक्रम का शुभारंभ डॉ मनमोहन सिंह के तैल चित्र पर माल्यार्पण एवं पुष्पांजलि से हुआ जिसका संचालन सर्व दलीय संघर्ष समिति के संयोजक सह सपा जिला अध्यक्ष पप्पू यादव कर रहे थे ।मौके पर उपस्थित विभिन्न दल के नेताओं ने कहा कि डॉ मनमोहन सिंह भारत के अद्भुत राष्ट्र नायक और आधुनिक भारत के आर्थिक नीतियों के शिल्पकार थे नेताओं ने कहा कि डॉक्टर साहब के पांच फैसले शिक्षा का अधिकार सूचना का अधिकार मनरेगा राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा भूमि अधिग्रहण कानून देश के लिए आज अहम साबित हुआ है नेताओं ने कहा कि देश को अपने आर्थिक नीतियों से आर्थिक मंदी से निकलने वाले राष्ट्र नायक का निधन देश के लिए अपूर्णीय क्षति है और भारतीय राजनीति की इस रिक्तता की भरपाई भविष्य में संभव नहीं है। श्रद्धांजलि सभा में डॉ मनमोहन के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर चर्चा करते हुए श्रद्धांजलि निवेदित करने वाले प्रमुख नेताओं में राजद के प्रदेश महासचिव प्रमोद कुमार यादव भाकपा माले के वरिष्ठ नेता अशोक कुमार सिंह एनसीपी शरद के जिला अध्यक्ष मो जाविर हुसैन की सीपीआई के वरिष्ठ नेता दिलीप कुमार जन सुराज के वरिष्ठ नेता दिनेश कुमार सिंह जाप के जिला अध्यक्ष पप्पी कुमार उर्फ पप्पू यादव कांग्रेस नेता मो तारीक एआरएफ के मो साकेब सीपीआई के जिला सचिव सजीवन सिंह राजद के जिला उपाध्यक्ष आदर्श कुमार राजा सपा के प्रधान महासचिव मनोज कुमार मधुकर मो आजम शिव कुमार शर्मा गणेश पोद्दार राजद के वरिष्ठ नेता असर्फी यादव मनोज क्रांति राजेश कुमार शर्मा मनीष यादव दिनेश साहू रामानंद यादव में शामिल थे।

विकसित बिहार 2047 के लिए सर्वे कार्य शुरू

गिद्धौर। बिहार लोक प्रशासन एवं ग्रामीण विकास संस्थान के निदेर्शानुसार विकसित बिहार 2047 डॉक्यूमेंट विजन के लिए आंगनबाड़ी द्वारा सर्वे कार्य किया जा रहा है।इसके लिए आवश्यक डेटा जुटाया जा रहा है,जिसमें प्रखंड के कुल आबादी का 15 प्रतिशत लोगों से उनकी राय लेकर ऑनलाइन भेजा जाना है।विजन डॉक्यूमेंट का उद्देश्य नागरिकों के आकांक्षाओं और प्राथमिकताओं के अनुरूप वर्ष 2030,2035 और 2047 तक विकास की रणनीति तैयार करना है।इसमें न्याय के साथ विकास के सिद्धांत का पालन किया जाएगा।

कुंडी गांव में आग लगने से धान की पुआल जलकर हुआ राख

प्रात : किरण संवाददाता

संग्रामपुर (मुंगेर)। प्रखंड के कटिहारी पंचायत के कुंडी गांव में आग लगने से धान की पुआल के टाल में किसान को भारी नुकसान सामना करना पड़ा है। बताया जाता है कि कुंडी गांव के किसानों के 10 बीघा धान जल कर राख हो गया है। कुंडी गांव के किसान सकलदेव यादव, राधे यादव, मिथिलेश यादव का काफी नुकसान हो गया वही कटिहारी के समाज सेवक रंजीत रघुनंदन यादव सुजीत राजीव तथा मुखिया पति सुरेश यादव का कहना हुआ कि इसी कुंडी बस्ती में सिर्फ धान का ही फसल होता है वह भी किसान का नुकसान हो जाए तो सरकार से चाहते हैं कि इन्हें मुआवजा मिलना चाहिए क्योंकि इस कुंडी ग्राम में सिर्फ धान की खेती होती है धान के अलावा कुछ भी नहीं होता है अगर धान की फसल नुकसान हो गया तो सरकार की ओर से मुआवजा मिलना चाहिए।

सम्पादकीय

भारतीय राजनीति के नीलकंठ थे डॉ. मनमोहन सिंह

भारत के पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह अपनी जीवन यात्रा पूरी कर अनंत यात्रा पर निकल गए। डॉ. मनमोहन सिंह देश के 13 वें प्रधानमंत्री थे और दस साल तक देश के प्रधानमंत्री रहे। डॉ. मनमोहन सिंह के प्रति मेरा मन हमेशा से श्रद्धा से भरा रहा ,क्योंकि सही अर्थों में वे देश के मौन सेवक थे। मौन ही उनका आभूषण था और मौन ही उनका हथियार भी था। देश और दुनिया ने उन्हें कभी चीखते-चिल्लाते न सदन में देखा और न किसी रैली में। एक पत्रकार के रूप में मुझे डॉ. मनमोहन सिंह से मिलने का अवसर आज से कोई तीन दशक पहले तब मिला था जब वे देश के वित्त मंत्री थे।ग्वालियर के सांसद और केंद्रीय मंत्री स्वर्गीय माधव राव सिंधिया उन्हें लेकर ग्वालियर आये थे । उन्होंने बरई गांव में ग्रामीण हाट जैसी एक परियोजना का उद्घाटन किया था। उन्हें पहली बार मप्र चैंबर आफ कामर्स के सभागार में सुनने का मौका मिला था। विद्वत्ता उनके सम्भाषण से ही नहीं बल्कि उनके स्वभाव और आचरण से टपकती थी। वे एक खास लय में मुस्कराते थे। वे विनोदी भी थे लेकिन उनका विनोद भी शालीनता की चाशनी में लिपटा रहता था। देश का सौभाग्य रहा कि उसे डॉ. मनमोहन सिंह जैसे विद्वान अर्थशास्त्री का नेतृत्व मिला। कोई माने या न माने लेकिन देश और दुनिया की तारीख में डॉ. मनमोहन सिंह भारत में आर्थिक सुधारों के जनक रहे। मुझे लगता है कि वे राजनीति के लिए बने ही नहीं थे ,लेकिन उनका प्रारब्ध उन्हें राजनीति में खींच लाया। कांग्रेस ने उनकी योग्यता को पहचाना और देश हित में उन्हें राजनीतिक मंच पर सबसे शीर्ष पद पर खड़ा कर दिया ,अन्यथा वे तो एक अध्यापक थे ,राजनीति से उनका कोई लेना-देना था ही नहीं। देश के विभाजन की विभीषिका पर आज जो लोग लम्बे-चौड़े भाषण देते हैं उन्हें शायद ये पता भी नहीं होगा कि डॉ. मनमोहन सिंह ने इस त्रासदी को अपने बचपन में ही भुगता था,लेकिन वे इससे टूटे नहीं ,बिखरे नहीं। देश के विभाजन के बाद सिंह का परिवार भारत चला आया। पंजाब विश्वविद्यालय से उन्होंने स्नातकोत्तर स्तर की पढ़ाई पूरी की। बाद में वे पीएच. डी.करने कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय गये। डॉ. सिंह ने आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय से डी. फिल. भी किया। वे केवल प्राध्यापक ही नहीं बल्कि लेखक भी थे।उनकी पुस्तक ह्य इंडियाज एक्सपोर्ट ट्रेंड्स एंड प्रोस्पेक्ट्स फॉर सेल्फ सस्टेंड ग्रोथ ह्यह्न भारत की अन्तमुर्खी व्यापार नीति की पहली प्रामाणिक आलोचना मानी जाती है। डॉ.मनमोहन सिंह ने अर्थशास्त्र के अध्यापक के तौर पर अपनी पहचान बनाई और ख्याति अर्जित की। वे पंजाब विश्वविद्यालय और बाद में प्रतिष्ठित दिल्ली स्कूल ऑफ इकनामिक्स में प्राध्यापक रहे। वे संयुक्त राष्ट्र व्यापार और विकास सम्मेलन सचिवालय में सलाहकार भी रहे और वे दो बार जेनेवा में साउथ कमीशन में सचिव भी रहे। उनकी विद्वत्ता को पहचानकर तत्कालीन कांग्रेस सरकार ने उन्हें आर्थिक सलाहकार बनाया ।बाद में वे योजना आयोग के उपाध्यक्ष, रिजर्व बैंक के गवर्नर, प्रधानमन्त्री के आर्थिक सलाहकार और विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के अध्यक्ष जैसे अनेक महत्वपूर्ण पदों पर भी रहे। देश के तत्कालीन प्रधानमंत्री पी वी नरसिंहराव ने मनमोहन सिंह को 1991में वित्त मंत्रालय का स्वतंत्र प्रभार सौंप दिया। उस वक्त डॉ.मनमोहन सिंह संसद के किसी भी सदन के सदस्य नहीं थे। उन्हें उसी साल असम से राज्यसभा के लिए चुना गया।सही अर्थों में भारत को विश्वगुरु बनाने की नींव डॉ. मनमोहन सिंह ने ही रखी। उन्होंने ही भारत की अर्थव्यवस्था को दुनिया की तीसरी बड़ी अर्थव्यवस्था बनाने का मार्ग प्रशस्त किया। भारतीय अर्थव्यवस्था को विश्व बाजार के साथ जोड़ने का श्रेय डॉ. मनमोहन सिंह को ही है। भारत की अर्थव्यवस्था जब घुटनों के बल चल रही थी,और प्रधानमंत्री पी. वी. नरसिम्हा राव को भयंकर आलोचनाओं का शिकार होना पड़ा रहा था। आज का सत्ता पक्ष तब विपक्ष में था और उन्हें नए आर्थिक प्रयोग से सावधान कर रहा था। लेकिन मात्र दो वर्ष बाद ही डॉ. मनमोहन सिंह की सूझबूझ से आलोचकों के मुँह बंद हो गए। उदारीकरण के बेहतरीन परिणाम भारतीय अर्थव्यवस्था में नजर आने लगे। मजे की बात ये है कि डॉ. मनमोहन सिंह ने प्रधानमंत्री बनने का सपना कभी नहीं देखा। उनके नाम पर कांग्रेस ने कभी कोई चुनाव नहीं लड़ा ,किन्तु वे न केवल एक बार प्रधानमंत्री बने बल्कि लगातार दो बार प्रधानमंत्री बने।

महान अर्थशास्त्री असरदार सरदार डॉ मनमोहन सिंह

देश के पूर्व प्रधानमंत्री डॉ मनमोहन सिंह का निधन हो गया है, राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, सहित पूरे देश सहित पूरी दुनिया के उनके शुभचिंतकों ने शोक व्यक्त किया है। डॉ मनमोहन सिंह का जाना भारतीय राजनीति में एक बड़ा नुकसान है। डॉ साहब जब आप पीएम थे तब मुल्क आपके साथ न्याय नहीं कर सका, आपको वो इज्जत नहीं दे सका जिसके आप हकदार थे। 2014 में एक इंटरव्यू में आपने कहा था, मेरा पूरा विश्वास है कि मौजूदा मीडिया और संसद में मौजूद विपक्षी पार्टियों की तुलना में इतिहास मेरे प्रति ज्यादा दयालु होगा मुझे लगता है इतिहास आपके साथ न्याय करेगा। अलविदा डॉ साहब ये मुल्क आपको डिजर्व नहीं करता था। डॉ मनमोहन सिंह दो बार प्रधानमंत्री जरूर बने लेकिन वे कभी भी खुद को राजनेता नहीं मानते थे, पार्टी के आदेश पर जीवन में सिर्फ.एक बार लोकसभा का चुनाव लड़े, लेकिन हार गए। मनमोहन सिंह को बहुत अच्छी तरह से पता था कि उनका राजनीतिक जनाधार नहीं है। उन्होंने कहा था, राजनेता बनना अच्छी बात है, लेकिन लोकतंत्र में राजनेता बनने के लिए आपको पहले चुनाव जीतना पड़ता है, और मैं चुनाव नहीं जीत सकता इसलिए मैं खुद को नेता नहीं मानता। फि र उन्होंने चुनाव से तौबा कर ली। डॉ मनमोहन सिंह ने एक दशक अधिक समय तक अभूतपूर्व बढ़ोतरी और विकास का नेतृत्व किया। डॉ. मनमोहन सिंह के नेतृत्व में, भारत ने अपने इतिहास में सबसे अधिक बढ़ोतरी दर देखी, जो औसतन 7.7% रही और लगभग दो ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनी, 1971 में डॉ. मनमोहन सिंह वाणिज्य मंत्रालय में आर्थिक सलाहकार के रूप में शामिल हुए। 1972 में उनकी नियुक्ति वित्त मंत्रालय में मुख्य आर्थिक सलाहकार के रूप में हुई। उन्होंने वित्त मंत्रालय के सचिव; योजना आयोग के उपाध्यक्ष; भारतीय रिजर्व बैंक के अध्यक्ष; प्रधानमंत्री के सलाहकार; विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के अध्यक्ष के रूप में कार्य किया। पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह 1982 से 1985 तक भारतीय रिजर्व बैंक के गवर्नर थे। उनके कार्यकाल के दौरान बैंकिंग क्षेत्र से संबंधित व्यापक कानूनी सुधार किए गए और भारतीय रिजर्व बैंक अधिनियम में एक नया अध्याय जोड़ा गया और शहरी बैंक विभाग की स्थापना की गई। आरबीआई में अपने कार्यकाल के बाद, उन्होंने वित्त मंत्री नियुक्त होने से पहले कई पदों पर काम किया। वित्त मंत्री के रूप में उनका कार्यकाल इस तथ्य के लिए उल्लेखनीय था कि उन्होंने भारत में उदारीकरण और व्यापक सुधारों की शुरूआत की। डॉ. मनमोहन सिंह ने 1991 से 1996 तक भारत के वित्त मंत्री के रूप में कार्य किया जो स्वतंत्र भारत के आर्थिक इतिहास में एक निर्णायक समय था। आर्थिक सुधारों के लिए व्यापक नीति के निर्धारण में उनकी भूमिका को सभी ने सराहा है। भारत में इन वर्षों को उनके व्यक्तित्व के अभिन्न अंग के रूप में जाना जाता है। अर्थशास्त्र के जानकार कहते हैं कि डॉ मनमोहन सिंह अगर 1991 में वित्तमंत्री नहीं बने होते तो शायद भारत कभी भी आर्थिक आपातकाल से बाहर नहीं आता। बतौर वित्तमंत्री मनमोहन सिंह ने आर्थिक दर को जो आयाम दिया जिसके कारण आज भी भारत को फायदा होता है। वित्तमंत्री, प्रधानमंत्री आएंगे, जाएंगे लेकिन मनमोहन सिंह जी जैसा अर्थशास्त्र का जानकार उनके जैसा विद्वान शायद ही इस मुल्क को मिले इसलिए ही डॉक्टर मनमोहन सिंह को अर्थशास्त्र का आर्किटेक्ट कहा जाता है। डॉ मनमोहन सिंह जी को अब तक के भारतीय लोकतांत्रिक व्यवस्था में सबसे बेहतर वित्तमंत्री के रूप में याद रखा जाएगा। वहीं प्रधानमंत्री के रूप में उनके पहले कार्यकाल को स्वर्णिम अक्षरों में लिखा जाएगा। आरटीआई, मनरेगा, फूड सिक्योरिटी बिल, परमाणु समझौता जैसे महान सुधारों के लिए याद किया जाएगा। दुनिया के सबसे बड़े मुल्क अमेरिका के प्रभावशाली राष्ट्रपति बराक ओबामा ने कहा था कि डॉक्टर मनमोहन सिंह जी जब बोलते हैं तो पूरी दुनिया सुनती है। हालांकि बहुत कम बोलते हैं लेकिन जितना भी बोलते हैं, कमाल बोलते हैं। पूरी दुनिया उनकी अर्थशास्त्र की जानकारी और उनके ज्ञान से प्रभावित रही है कैंब्रिज, ऑक्सफोर्ड, जैसे बड़े-बड़े विश्वविद्यालय में डॉक्टर मनमोहन सिंह के व्याख्यान भविष्य में विद्यार्थियों के लिए मार्गदर्शन का काम करेंगे। ये मुकाम डॉक्टर मनमोहन सिंह की विद्वता को दशार्ता है, शायद इस मुल्कों को दोबारा ऐसा विद्वान प्रधानमंत्री मिले।

फुटपाथों और सड़कों पर अतिक्रमण, चलना हुआ मुश्किल

आजकल हम देखते हैं कि बड़ी संख्या में स्ट्रीट वेंडर्स ने व्यस्त बाजार के पास नो-वेंडिंग जोन में स्टॉल लगा रखे हैं। इनके लिए नो-वेंडिंग जोन की स्थापना सुचारू यातायात प्रवाह सुनिश्चित करने और सार्वजनिक व्यवस्था बनाए रखने के लिए की जा सकती है। हालाँकि, इनमें से कई विक्रेता अपने परिवार, जिसमें बुजुर्ग माता-पिता और स्कूल जाने वाले बच्चे शामिल हैं, को पालने के लिए पूरी तरह से अपनी कमाई पर निर्भर हैं। हालांकि इनके लिए स्थानीय दुकानदारों के संघ शिकायतें भी दर्ज करवाते हैं कि विक्रेता भीड़भाड़ पैदा कर रहे हैं और उनके व्यवसाय को अनुचित रूप से प्रभावित कर रहे हैं। लेकिन विक्रेताओं की आर्थिक कमजोरी को समझते हुए इसके लिए मानवीय समाधान जरूरी है।

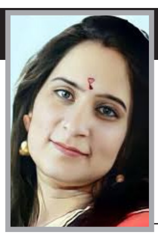

प्रियंका सौरभ
लेखिका

मुख्य बाजारों, चौक-चौराहों, गलियों में दुकानदारों और रेहड़ी-फड़ी वालों की ओर से किया गया अतिक्रमण दिनोंदिन बढ़ता ही जा रहा है। परिणामस्वरूप शहर के बाजारों में वाहन चलाना तो दूर पैदल चलना भी मुश्किल हो गया है। स्ट्रीट वेंडर्स, जो अपने जीवनयापन के लिए अपने व्यापार पर निर्भर हैं, ने हर एक व्यस्त बाजार के पास निर्दिष्ट नो-वेंडिंग जोन पर अतिक्रमण कर लिया है, जिससे यातायात बाधित हो रहा है और स्थानीय दुकानदारों की ओर से शिकायतें आ रही हैं। सार्वजनिक व्यवस्था, निष्पक्ष व्यावसायिक प्रथाओं और विक्रेताओं की आर्थिक कमजोरी के बीच संतुलन बनाना एक नैतिक और प्रशासनिक चुनौती है। स्ट्रीट वेंडर दुनिया भर की शहरी अर्थव्यवस्थाओं का एक अभिन्न अंग हैं, जो सार्वजनिक स्थानों पर कई तरह की वस्तुओं और सेवाओं तक आसान पहुँच प्रदान करते हैं। भले ही स्ट्रीट वेंडर्स को अनौपचारिक माना जाता है, लेकिन वे शहरी अर्थव्यवस्थाओं में महत्त्वपूर्ण योगदानकर्ता हैं। इस 21वीं सदी में ज्यादातर लोग स्ट्रीट वेंडर हैं। अनौपचारिक अर्थव्यवस्था निगरानी अध्ययन ने उन तरीकों का खुलासा किया है, जिनसे स्ट्रीट वेंडर अपने समुदायों को मजबूत बना रहे हैं: स्ट्रीट वेंडिंग रोजगार सृजन, उत्पादन और आय सर्जन में एक प्रमुख भूमिका निभाती है। स्ट्रीट वेंडर्स को कार्यस्थल पर जनता, पुलिस कर्मियों, राजनेताओं और स्थानीय उपद्रवियों से कई समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। आर्थिक रूप से कमजोर व्यक्ति जीवनयापन के लिए वेंडिंग पर निर्भर हैं। विक्रेताओं द्वारा की गई प्रतिस्पर्धा और भीड़भाड़ के कारण नुकसान का दावा करना उनकी मजबूरी है। व्यस्त बाजार में यातायात का सुचारू प्रवाह और सार्वजनिक सुरक्षा की आवश्यकता भी जरूरी है। विक्रेताओं के लिए मानवीय और टिकाऊ समाधान की वकालत सार्वजनिक व्यवस्था बनाए रखने और न्यायसंगत शासन सुनिश्चित करने का कार्य है। स्ट्रीट वेंडर अपने परिवार का भरण-पोषण करने के लिए वेंडिंग पर निर्भर हैं। हालाँकि, उनकी उपस्थिति से भीड़भाड़ होती है और सार्वजनिक व्यवस्था बाधित होती है। ट्रैफि क प्रवाह और सार्वजनिक सुरक्षा बनाए रखते हुए उनकी आजीविका की रक्षा के लिए एक संतुलन की आवश्यकता है। दुकानदार विक्रेताओं को उनकी कम लागत और अनौपचारिक संचालन के कारण अनुचित प्रतिस्पर्धा के रूप में देखते हैं। हालाँकि, विक्रेता अक्सर आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों से सम्बंधित होते हैं। समाधान में समानता की रक्षा करनी चाहिए और यह सुनिश्चित करना चाहिए कि दुकानदारों के हितों को अनुचित रूप से नुकसान न पहुँचाया जाए। जबकि आर्थिक विकास एक संपन्न शहर के लिए महत्त्वपूर्ण है, सामाजिक कल्याण नीतियों को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि स्ट्रीट वेंडर जैसे कमजोर समूहों को असंगत कठिनाई का सामना न करना पड़े। निष्पक्ष और न्यायपूर्ण नीतियों में आर्थिक विकास और हाशिए पर पडे समुदायों के कल्याण दोनों को एकीकृत किया जाना चाहिए। कई विक्रेता अपने परिवारों के लिए कमाने वाले होते हैं, जो बुजुर्ग आश्रितों और स्कूल जाने वाले बच्चों का भरण-पोषण करते हैं। बिना किसी विकल्प के उन्हें विस्थापित करने से उनकी सामाजिक-आर्थिक स्थितियाँ खराब हो सकती हैं, जिससे निर्णय लेने में करुणा आवश्यक हो जाती है। निर्णय पारदर्शी और समावेशी होने चाहिए, जिसमें सभी हितधारकों की चिंताओं का समाधान हो। किसी भी समूह को बाहर रखने से अशांति फैल सकती है और प्रशासन की निष्पक्ष रूप से शासन करने की क्षमता पर भरोसा कम हो सकता है। शहरों की आबादी समय के साथ लगातार बढ़ती जा रही है। इसके चलते वाहनों की संख्या भी बढ़ रही है और रोजगार के लिए लोगों का बाहर आने का सिलसिला भी बढ़ता जा रहा है लेकिन शहरों में इन समस्याओं का निदान करने के लिए प्रशासनिक स्तर पर जो पहल होनी चाहिए थी, वह नहीं हो पाई है। अतिक्रमण के खिलाफ चलाए गए अभियान के बाद शहरों में पार्किंग और रेडी-फड़ी जोन बनाए जाने की बात सामने आती है, लेकिन वह आज तक जमीन पर दिखाई नहीं देती है। लिहाजा ऐसी समस्याओं का बना रहना स्वाभाविक है। इसके स्थायी समाधान के लिए नो-वेंडिंग जोन में समय-आधारित वेंडिंग शेड्यूल लागू करें ताकि ट्रैफि क प्रवाह को बनाए रखते हुए गैर-पीक घंटों के दौरान विक्रेताओं को अनुमति दी जा सके। सार्वजनिक सुरक्षा सुनिश्चित करने और भीड़भाड़ को कम करने के लिए पीक घंटों के दौरान निगरानी बढ़ाएँ। स्वच्छता और पीने के पानी जैसी आवश्यक सुविधाओं के साथ एक निर्दिष्ट वेंडिंग जोन विकसित करें, यह सुनिश्चित करते हुए कि विक्रेताओं के पास काम करने के लिए एक स्थायी स्थान हो। विक्रेताओं की संख्या को विनियमित करने और भीड़भाड़ को रोकने के लिए एक लाइसेंसिंग प्रणाली शुरू करें। यह दृष्टिकोण विक्रेताओं और दुकानदारों की तत्काल जरूरतों को सम्बोधित करता है और साथ ही भविष्य के लिए एक स्थायी ढाँचा तैयार करता है। यह सार्वजनिक व्यवस्था, आर्थिक निष्पक्षता और दयालु शासन को संतुलित करता है, यह सुनिश्चित करता है कि सभी हितधारकों को सुना और समर्थन दिया जाए। स्ट्रीट वेंडर्स, दुकानदारों और जनता की जरूरतों को सम्बोधित करने के लिए एक संतुलित दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है जो आर्थिक और सामाजिक कल्याण दोनों पर ध्यान केंद्रित करता है।

सभी देशों में अपनी-अपनी परंपराओं के साथ मनाया जाता है नववर्ष

देखा जाय तो अब हर धर्म के लोग, जन्म दिन हो या कोई अन्य उत्सव, केक जरूर काटते हैं और केक कैसे काटते हैं! पहले केक पर मोमबत्ती लगाते है, फिर उसे जलाते हैं, फिर उस मोमबत्ती को खुद फूंक कर बुझा देते हैं और तब केक काटते है। जबकि यह संस्कृति, सनातन संस्कृति के बिल्कुल विपरीत है। क्योंकि सनातन संस्कृति में यदि दीपक जलाया जाए और यदि वह दीपक बुझ जाए, तो इसे अपसगुन माना जाता है और किसी अनजानी अनहोनी होने की ओर इशारा समझा जाता है। लेकिन आज सनातन समाज, अब दीपक जलाने में नहीं, बल्कि उसे बुझाने में अपनी खुशी का पर्याय मानने लगा है। सनातन संस्कृति में ज्योति और प्रकाश का एक खास महत्व होता है।

जितेन्द्र कुमार सिन्हा
लेखक

नववर्ष की खुशी अलग-अलग देशों में अलग अलग तरीकों से सभी धर्मों में और सभी देशों में अपनी-अपनी परंपराओं के साथ मनाया जाता है। भारत एक ऐसा देश है, जहां अलग-अलग जगहों पर अलग-अलग समय में अलग अलग तरिकों से अपनी संस्कृति और परंपराओं के साथ नववर्ष का उत्सव मनाया जाता है। दुनिया के अधिकतर देश पहली जनवरी को नववर्ष मनाते हैं। पहली जनवरी को नववर्ष मनाने के पीछे हजारों साल पुरानी कहानी है। पांच सौ साल पहले अधिकतर ईसाई बाहुल्य देशों में 25 मार्च और 25 दिसंबर को नया साल मनाया जाता था। पहली बार 45 ईसा पूर्व रोमन राजा जूलियस सीजर ने पहली जनवरी से नया साल मनाने की शुरूआत की थी। भारत में हिन्दू कैलेंडर के अनुसार चैत्र मास की शुक्ल प्रतिपदा से हिन्दू नववर्ष का प्रारंभ माना जाता है। इसलिए चैत्र महीने की पहली तारीख यानि चैत्र प्रतिपदा को नया साल मनाया जाता है। इस संबंध में ऐसी मान्यता है कि भगवान ब्रह्मा ने इसी दिन से सृष्टि की रचना प्रारंभ की थी। इसी दिन से विक्रम संवत के नए साल की शुरूआत भी होता है। अंग्रेजी कैलेंडर के अनुसार यह तिथि अप्रैल महीने में आती है। कैलेंडर नववर्ष के आगमन में कई लोग जश्न मनाने की तैयारी करते हैं, तो कई लोग भ्रमणादि की प्लानिंग। वहीं, कुछ लोग नये साल सही ढ़ंग से बीते उसके लिए ग्रह गोचर की जानकारी जानने में हो जाते हैं वयस्थ। वैसे तो 01ली जनवरी को कैलेंडर नववर्ष के रूप में जाना जाता है और इसके लिए सभी लोग 31 दिसम्बर की रात से ही नये वर्ष के आगमन की खुशी मनाने लगते हैं। नववर्ष पर भविष्यवाणी करने वाले विशेषज्ञ ग्रह गोचर की चाल और उससे होने वाले नुकसान और फायदे बताने लगते हैं। इसके साथ ही नुकसान करने वाली ग्रह गोचर को शांत करने के लिए उपाय भी बताते हैं। कुछ विशेषज्ञों ने तो देश, राज्य, देश के प्रधानमंत्री, पार्टियों के संबंध में भी भविष्यवाणी करने लग जाते हैं। जूलियस सीजर ने खगोलविदों के सहयोग से पृथ्वी को सूर्य के चक्कर लगाने की गणना की तो पाया कि पृथ्वी को सूर्य के चक्कर लगाने में 365 दिन और छह घंटे लगते हैं। इसलिए सीजर ने रोमन कैलेंडर को 365 दिन का बनाया था। सीजर ने हर चार साल बाद फरवरी के महीने को 29 दिन का किया जिससे हर चार साल में बढ़ने वाला एक दिन भी शामिल (एडजस्ट) हो सके, इसलिए 46 ईसा पूर्व रोम के शासक जूलियस सीजर गणनाओं के आधार पर कैलेंडर जारी किया जिसमें 12 महीने थे। इस कैलेंडर का नाम जूलियन कैलेंडर रखा गया था। भारत के अन्य राज्यों में उगाडी-तेलगू न्यू ईयर, गुड़ी पड़वा, बैसाखी-पंजाबी न्यू ईयर, पुथंडु-तमिल न्यू ईयर, बोहाग बिहू-असामी न्यू ईयर, बंगाली नववर्ष, गुजराती नववर्ष, विषु- मलयालम नववर्ष, नवरेह- कश्मीरी नववर्ष, हिजरी- इस्लामिक नववर्ष मनाया जाता है। गुड़ी पड़वा (मराठी-पाड़वा) के दिन हिन्दू नव संवत्सरारम्भ माना जाता है। चैत्र मास की शुक्ल प्रतिपदा को गुड़ी पड़वा या वर्ष प्रतिपदा या उगादि (युगादि) कहा जाता है। इस दिन हिन्दू नववर्ष का आरम्भ होता है। ह्यगुड़ीह्न का अर्थ ह्यविजय पताकाह्न होता है। कहते हैं शालिवाहन ने मिट्टी के सैनिकों की सेना से प्रभावी शत्रुओं (शक) का पराभाव किया। इस प्रकार विजय के प्रतीक के रूप में शालिवाहन शक का प्रारंभ इसी दिन से होता है। ह्ययुगप् और ह्यआदिप् शब्दों की संधि से बना है ह्ययुगादिप्। आंध्र प्रदेश और कर्नाटक में ह्यउगादिप् और महाराष्ट्र में यह पर्व ह्यगुड़ी पड़वाह्न के रूप में मनाया जाता है। इसी दिन चैत्र नवरात्रि का प्रारम्भ होता है। ग्रेगोरियन कैलेंडर को इटली, फ्रांस, स्पेन और पुर्तगाल ने 1582 में अपना लिया था, जबकि जर्मनी के कैथोलिक राज्यों यथा स्विट्जरलैंड और हॉलैंड ने 1583 में, पोलैंड ने 1586 में, हंगरी ने 1587 में, जर्मनी एवं नीदरलैंड के प्रोटेस्टेंट प्रदेश और डेनमार्क ने 1700 में, ब्रिटिश साम्राज्य ने 1752 में, चीन ने 1912 में, रूस ने 1917 में और जापान ने 1972 में इस कैलेंडर को अपनाया था। वर्ष 1752 में भारत पर ब्रिटेन का राज था, इसलिए भारत ने भी इस कैलेंडर को 1752 में ही अपनाया था। ग्रेगोरियन कैलेंडर को अंग्रेजी कैलेंडर के नाम से भी जाना जाता है। हिन्दू नववर्ष चैत्र के महीने के शुक्ल पक्ष की प्रथम तिथि (प्रतिपदा) को सृष्टि का आरंभ हुआ था। हमारा नववर्ष चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को शुरू होता है इस दिन ग्रह और नक्षत्र में परिवर्तन होता है। हिन्दी महीने की शुरूआत इसी दिन से होती है। चैत्र मास का वैदिक नाम है-मधु मास। मधु मास अर्थात आनंद बांटता वसंत का महीना। मान्यता है कि इसी दिन ब्रह्माजी ने सृष्टि का निर्माण किया था। इसमें मुख्यतया ब्रह्माजी और उनके द्वारा निर्मित सृष्टि के प्रमुख देवी-देवताओं, यक्ष-राक्षस, गंधर्व, ऋषि-मुनियों, नदियों, पर्वतों, पशु-पक्षियों और कीट-पतंगों का ही नहीं, रोगों और उनके उपचारों तक का भी पूजन किया जाता है। इसी दिन से नया संवत्सर शुरू होता है। इसलिए इस तिथि को ह्यनवसंवत्सरह्य भी कहते हैं। भगवान विष्णु जी का प्रथम अवतार भी इसी दिन हुआ था। चैत्र नवरात्र की शुरूआत इसी दिन से होती है। कैलेंडर नववर्ष (नये साल) के अवसर पर प्रत्येक वर्ष लगभग सभी जगह पर 31 दिसम्बर की आधी रात को जश्न मनाया जाता है। अब तो लगभग सभी धर्म के लोग आधी रात को केक काट कर नववर्ष के आगमन की खुशियां मनाते हैं, केक काटने से पहले सभी बत्तियों को बुझा कर पूरी तरह अंधेरा कर देते है और फिर, अचानक एकसाथ सभी बिजली की स्विच को ऑन कर रोशनी करते हुए सभी लोग चीखने लगते हैं ह्ललंस्त्र्८ ठीध् ी१ह्व, ह्ललंस्त्र्८ ठीध् ी१ह्व, ह्ललंस्त्र्८ ठीध् ी१ह्व। उसके बाद कैलेंडर नववर्ष मनाने वाले लोग जहां शराबबंदी नही है वहां शराब की बोतलें खुलती है और न जाने कितने जीवों की हत्या कर बनाया गया भोजन परोसा जाता है, पटाखे या आतिशबाजी करते हैं। इस प्रकार नये साल (01 जनवरी) के आगमन का स्वागत किया जाता है। सनातन धर्म से यदि इसे देखा जाय तो नये साल का स्वागत हम लोग 31 दिसम्बर की आधी रात (12 बजे) को अंधेरा करके मनाते है; भले ही उसके बाद पटाखे या आतिशबाजी करते हैं। लेकिन नये साल का प्रवेश से कुछ पल पहले पूरी तरह अंधकार किया जाता है। शायद यही वजह है कि हमलोग कही न कही, अंधेरे में भटक गए हैं। हमें सही राह नहीं मिल रहा है। जबकि हमलोग प्रकाश को, ज्ञानपुंज कहते है और अंधकार को अज्ञान। लेकिन आज हम लोग अज्ञानता को ही जाने-अनजाने में गले लगा रहे हैं। आज हमलोग आधुनिक युग के नाम पर कुछ भी करने को तैयार रहते हैं। अब देखा जाय तो उत्सव छोटा हो या बड़ा, हर उत्सव में केक काटने की एक परंपरा बनने लगा है। जबकि सनातन संस्कृति में केक क्या? कुछ भी काटकर खुशी मनाना वर्जित माना गया है।

देशभक्त, महान अर्थशास्त्री एवं सादगीपूर्ण राजनेता मनमोहन सिंह

राकेश अचल

देश के पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह का विदा होना एक भावुक क्षण है। देश के पहले प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू के बाद डॉ. मनमोहन सिंह उन प्रधानमंत्रियों में से दूसरे हैं जो लगातार एक दशक तक प्रधानमंत्री रहे। डॉ मनमोहन सिंह जन्मजात राजनीतिज्ञ नहीं थे। वे मूलतः अर्थशास्त्री थे और उनकी यही विशेषता राजनीति में कांग्रेस के और देश के काम आयी। डॉ मनमोहन सिंह जनता के सामने लच्छेदार भाषण नहीं दे सकते थे, इसलिए वे कभी लोकसभा का चुनाव नहीं जीते। उन्हें कांग्रेस ने हमेशा राज्यसभा भेजकर राजनीति में टिकाये रखा। आप यूं भी कह सकते हैं कि कांग्रेस डॉ. मनमोहन सिंह की वजह से सत्ता में बनी रही। लगातार तीन दशक तक देश की सेवा करने वाले डॉ. मनमोहन सिंह ने 2अप्रैल 2024 को राज्यसभा के साथ ही देश की सक्रिय राजनीति से भी विदाई ले ली थी। डॉ. सिंह की उम्र अभी 92 साल थी। मैंने अपने पत्रकारिता के लम्बे कार्यकाल में डॉ. मनमोहन सिंह जैसा दूसरा कोई नेता नहीं देखा। मैं उनसे एक वित्त मंत्री के रूप में भी मिला और एक प्रधानमंत्री के रूप में भी। दोनों भूमिकाओं में वे केवल और केवल डॉ. मनमोहन सिंह ही रहे। उनके चेहरे पर सदैव एक स्निग्ध मुस्कान मौजूद रही। उनके संवाद में स्वर सधे हुए रह। न कोई उतार न कोई चढ़ाव, न कोई नाटकीयता और न कोई बुनावट। वे स्थितप्रज्ञ राजनीतिज्ञ थे। उन्होंने अपने ऊपर कटु से कटु प्रहार सहे किन्तु कभी विचलित नहीं हुये। उनका विचलन उनकी आँखों में ही झलकता रह गया। उत्तेजना उनकी राजनीति का अंग कभी नहीं बन पायी। भले ही उन्हें उत्तेजित और अपमानित करने की कोशिश विपक्ष ने की हो या उनके अपने दल के नेताओं ने। विपक्ष ने डॉ.मनमोहन सिंह के बारे में संसद के बाहर और भीतर क्या कुछ नहीं कहा? कांग्रेस के नेता राहुल गाँधी ने डॉ.मनमोहन सिंह के सामने क्या कुछ उच्छश्रृंखलता नहीं की? लेकिन डॉ.मनमोहन सिंह खामोश रहे। विपक्ष उन्हें डॉ. मौन सिंह कहकर अपमानित करता रहा किन्तु उनका काम हमेशा बोलता रहा। मुझे लगता है कि मौन ही डॉ. मनमोहन सिंह की असली ताकत थी। आज के नेताओं को उनके स्वभाव और आचरण से सीखना चाहिए। लेकिन डॉ.मनमोहन सिंह बनकर काम करना, देशसेवा करना आसान काम नहीं। गाल बजाना और मौन रहना दो अलग-अलग विधाएँ हैं। डॉ.मनमोहन सिंह के बारे में गूगल देव मुझसे ज्यादा सूचनाएँ रखते हैं, लेकिन मैं अपनी जानकारी और अनुभव से कहता हूँ कि डॉ मनमोहन सिंह होना आसान नहीं। डॉ. मनमोहन सिंह देश के पहले ऐसे प्रधानमंत्री हैं जिनकी उपाधियों को किसी अदालत में चुनौती नहीं दी गयी। अभिजात्य परिवार में जन्में डॉक्टर मनमोहन सिंह ने पंजाब विश्वविद्यालय से स्नातक तथा स्नातकोत्तर स्तर की पढ़ाई पूरी की। वे कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय गये। जहाँ से उन्होंने पीएच. डी. की उपाधि हासिल की। डॉ. सिंह ने आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय से डी. फिल. भी किया। उनकी पुस्तक इंडियाज एक्सपोर्ट ट्रेंड्स एंड प्रोस्पेक्ट्स फॉर सेल्फ सस्टेंड ग्रोथ भारत की अन्तमुर्खी व्यापार नीति की पहली और सटीक आलोचना मानी जाती है। राजनीति में प्रवेश करने से पहले वे अर्थशास्त्री ही बने रहे। डॉ० सिंह अर्थशास्त्र के यशस्वी अध्यापक रहे। वे पंजाब विश्वविद्यालय और बाद में प्रतिष्ठित दिल्ली स्कूल ऑफ इकनामिक्स में प्राध्यापक रहे। इसी बीच वे संयुक्त राष्ट्र व्यापार और विकास सम्मेलन सचिवालय में सलाहकार भी रहे और 1987 तथा 1990 में जेनेवा में साउथ कमीशन में सचिव भी रहे। 1971 में तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गाँधी ने डॉ. सिंह की प्रतिभा को पहचाना और उन्हें वाणिज्य एवं उद्योग मन्त्रालय में आर्थिक सलाहकार के तौर पर नियुक्त किया। इसके तुरन्त बाद 1972 में उन्हें वित्त मंत्रालय में मुख्य आर्थिक सलाहकार बनाया गया। डॉ.मनमोहन सिंह अपनी प्रतिभा के बल पर ही भारतीय रिजर्व बैंक के 15 वें गवर्नर बनाये गए। उन्होंने योजना आयोग के उपाध्यक्ष, रिजर्व बैंक के गवर्नर, प्रधानमन्त्री के आर्थिक सलाहकार और विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के अध्यक्ष के रूप में देश की अविस्मरणीय सेवा की। भारत के आर्थिक इतिहास में हाल के वर्षों में सबसे महत्वपूर्ण मोड़ तब आया जब डॉ. सिंह 1991 से 1996 तक भारत के वित्त मन्त्री रहे।

संक्षिप्त खबरें

आग सेंकने को लेकर दो पक्षों में हुआ विवाद व झड़प

प्रातः किरण, संवाददाता

बेतिया। बैरिया थाना के मियांपुर पंचायत के मधुरबाणा में नहर के पास दो समुदाय के बीच आग सेकने को लेकर आपसी विवाद हुआ तथा इसी क्रम में दोनो तरफ से पत्थरबाजी होने लगा। इस घटना की सूचना मिलने पर बैरिया थानाध्यक्ष मौके पर पहुंच कर दोनो पक्षों को वहां से हटाते हुए लोक शांति स्थापित करते हैं। इसी दौरान एसडीपीओ सदर 02, बीडीओ एवं सीओ बैरिया भी घटनास्थल पर पहुंचते हैं।पुलिस अधीक्षक बेतिया द्वारा भी बैरिया थाना पर पहुंच कर घटना का फीडबैक लिया गया तथा विधि व्यवस्था बनाएं रखने हेतु आवश्यक दिशानिर्देश दिए गए। घटना की गंभीरता को देखते हुए मजिस्ट्रेट, पुलिस पदाधिकारी एवं दफ्ळ को प्रतिनियुक्त किया गया है। घटना में शामिल में दोनो पक्षों से चार लोगों को पुलिस अभिरक्षा में लिया गया है तथा अन्य को पहचान कर बैरिया थाना द्वारा विधिक कारवाई की जा रही है।

बेतिया पुलिस अपराध नियंत्रण एवं लोक व्यवस्था संधारण में सर्वोत्कृष्ट स्तर प्राप्त करने हेतू प्रतिबद्ध हैं।

लूट की घटना निकली झूठी,फाइनेंस कर्मी द्वारा छुपाए गये 40390 रु बरामद

बेतिया। थाना अध्यक्ष को फाइनेंस कमी द्वारा सूचना मिली की भारत फाइनेंस के कर्मी पवन कुमार पिता सुनील कुमार साकीम जमुनापुर चौक थाना पटखौली जिला पश्चिमी चंपारण बगहा के द्वारा क्षेत्र से पैसा कलेक्शन कर कार्यालय लौट रहे थे तो गौनाहा थाना क्षेत्र के पिपरिया चौक से करीब 500 मीटर पहले उजला रंग का अपाचे मोटरसाइकिल पर सवार तो अज्ञात अपराध कर्मी द्वारा पवन कुमार का बाइक रोककर पिस्तौल का भयदिखाकर सैमसंग कंपनी का टैबलेट,बायोमेट्रिक मशीन,मोटरसाइकिल की डिकी में रखा 40390 रूपया लूट लिया गया है। लूट की सूचना प्राप्त होने पर पुलिस पुलिस अधीक्षक पश्चिम चंपारण बेतिया के निदेर्शानुसार अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी नरकटियागंज के नेतृत्व में तकनीकी शाखा एवं गौनाहट थाना के पुलिस पदाधिकारी द्वारा त्वरित कार्रवाई करते हुए घटनास्थल पर जाकर पवन कुमार से पूछताछ किया गया। प्रथम दृश्य सूचना देने वाले कुर्मी पवन कुमार द्वारा बताया जा रहा घटना संदिग्ध प्रतीत हुआ जिसकी पुष्टि फाइनेंस के शाखा पदाधिकारी द्वारा भी की गई इस संबंध में शाखा प्रभारी हरिशंकर पाल के आवेदन के आधार पर गौनाहा थाना कांड संख्या 184/24 दिनांक 25.12.24 अंकित कर पवन कुमार द्वारा गबन के उद्देश्य से छुपा कर रखा गया पवन कुमार के निशान देही पर 40390/00रू एवं टब बरामद किया गया है। पवन कुमार को गिरफ्तार कर विधिक कार्रवाई की जा रही है।

छठ घाट का मुख्यपार्षद ने किया शिलन्यास

परसा नगर पंचायत परसा बाजार वार्ड 4 के शोभेपरसा में 15वीं वित योजना से लगभग 15 लाख के लागत से शुक्रवार को मुखपार्षद ऐसा खातून उपमुख पार्षद नेहा कुमारी व वार्ड पार्षद मुरारी सिंह द्वारा संयुक्त रूप से पूजा अर्चना करने के साथ ही नारियल फोर कर छठ घाट का शिलन्यास किया गया. संबंध में मुख्यपार्षद ऐसा खातून ने बताई की छठ व्रतियों को छठ करने के लिए काफी कठिनाइयां होती थी जिसको लेकर नगर कार्यालय को जानकारी दी गई थी इसके बाद योजना पास की गई.छठ घाट की शिलान्यास किया गया. इस मौके पर दीपक कुमार मोहम्मद अजमुल्लाह अरविंन्द्र कुमार गिरी बीरेंद्र कुमार सिंह अतुल कुमार मनीष कुमार मोहित कुमार नागेशर सिंह शिवकुमार सिंह प्रशंट कुमार शंतोष सिंह प्रिंस कुमार अजित कुमार सिंह समेत दर्जनों की संख्या में ग्रामीण उपस्थित थे इस दौरान इस सराहनीय कार्य के लिए ग्रामीणों ने मुख्य पार्षद वार्ड पार्षद को धन्यवाद दिया।

शिक्षक को खिड़की से गोली मारकर मौत के घाट उतारा

छपरा। पुलिस की लाख चौकसी के बावजूद अपराधियों के मनोबल में कोई कमी नहीं है और आज उन्होंने फिर एक बड़ी घटना को अंजाम दिया है और एक युवक को गोली मारकर मौत के घाट उतार दिया है यह घटना सारण में डोरीगंज थाना क्षेत्र के गोपालपुर निवासी स्वः वकील राय के (22 वर्षीय) पुत्र संजीत कुमार राय को अज्ञात अपराधियों ने घर कमरे के खिड़की से गोली मारकर मौत घाट उतार दिया।इस घटना के बाद डोरीगंज थानाध्यक्ष दिलीप कुमार दलबल के साथ घटनास्थल पहुंचे और मामले की जांच शुरू कर दिया ,मृतक एक प्राइवेट स्कूल शिक्षक था, घटना बीती रात की है। घटना की सुचना पुलिस को दी गई।

महाराजा स्टेडियम में मनाया जायेगा गणतंत्र दिवस विभिन्न विभागों द्वारा निकाली जायेगी आकर्षक झांकी

■ गणतंत्र दिवस को सफलतापूर्वक सम्पन्न कराने हेतु जिलाधिकारी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुयी बैठक

प्रातः किरण, संवाददाता

बेतिया(घनश्याम)। गणतंत्र दिवस समारोह को सफलतापूर्वक सम्पन्न कराने के उद्देश्य से शुक्रवार को समाहरणालय सभाकक्ष में जिलाधिकारी दिनेश कुमार राय की अध्यक्षता में समीक्षात्मक बैठक सम्पन्न हुयी। जिलाधिकारी ने कहा कि गणतंत्र दिवस के अवसर पर मुख्य समारोह का आयोजन स्थानीय महाराजा स्टेडियम में कराया जाना है। गणतंत्र दिवस समारोह को सफलतापूर्वक सम्पन्न कराने हेतु सभी संबंधित विभागों एवं कार्यालयों को अपने-अपने कार्यों का निष्पादन ससमय कराना होगा। उन्होंने कहा कि सभी अधिकारी अपनी-अपनी जिम्मेवारियों को अच्छे से निवर्हन करें। उन्होंने कहा कि झण्डोत्तोलन के पूर्व यह सुनिश्चित हो लिया जाय कि झण्डा सही तरीके से बंधा हो तथा झंडे का रंग अपने स्थान पर हो। महाराजा स्टेडियम अवस्थित मंच को सुसज्जित करने, आगत सज्जनों की बैठने की व्यवस्था, ध्वनि विस्तारक यंत्र अधिष्ठापन, बैरिकेडिंग, साफ-सफाई सहित परेड का पूर्वाभ्यास, शहर के मार्गों की समुचित साफ-सफाई, चौक-चौराहों पर अधिष्ठापित गोलंबरों की साफ-सफाई, रंग-रोगन आदि कार्य सुनिश्चित किया जाय।

उन्होंने निर्देश दिया कि गणतंत्र दिवस के अवसर पर विकासात्मक एवं कल्याणकारी योजनाओं/कार्यक्रमों से संबंधित संक्षिप्त, आकर्षक एवं बेहतरीन झांकी निकालने की व्यवस्था की जाय। इस हेतु जिला ग्रामीण विकास अभिकरण, सर्व शिक्षा अभियान, जिला कृषि कार्यालय, स्वास्थ्य विभाग, उत्पाद विभाग, जीविका परियोजना, आईसीडीएस, कल्याण आदि विभाग/कार्यालय थीम का चयन कर उसकी तैयारी प्रारंभ करें।

उन्होंने निर्देश दिया कि मुख्य समारोह स्थल के मंच की सुदृढ़ व्यवस्था सुनिश्चित करें। समारोह स्थल पर एंबुलेंस सहित चिकित्सक दल एवं पारा मेडिकल स्टॉफ, अग्निशामक दस्ता पूरी तरह से मुस्तैद रहेंगे। साथ ही सुरक्षा व्यवस्था की भी पुख्ता व्यवस्था की जाय।

समीक्षा के क्रम में बताया गया कि झण्डोत्तोलन हेतु समय का निर्धारण कर दिया गया है। 09.00 बजे पूर्वाह्न महाराजा स्टेडियम, बेतिया, 10.30 बजे पूर्वाह्न समाहरणालय प्रांगण, 10.35 बजे पूर्वाह्न विकास भवन परिसर, 10.40 बजे पूर्वाह्न पुलिस अधीक्षक, बेतिया के कार्यालय परिसर, 10.50 बजे पूर्वाह्न अनुमंडल कार्यालय, 11.00 बजे पूर्वाह्न गृह रक्षा वाहिणी कार्यालय परिसर, 11.10 बजे पूर्वाह्न पुलिस केन्द्र, बेतिया, 11.40 बजे पूर्वाह्न महादलित टोला में झण्डोत्तोलन सम्पन्न कराया जाना है।जिलाधिकारी ने निर्देश दिया कि जिला कल्याण पदाधिकारी सहित सभी प्रखंड विकास पदाधिकारी अपने-अपने प्रखंड के महादलित टोलों में झण्डोत्तोलन की तैयारी करेंगे तथा सफलतापूर्वक सम्पन्न करायेंगे।

प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना का क्रियान्वयन पूर्ण पारदर्शी तरीके से कराएं : जिलाधिकारी

प्रातः किरण, संवाददाता

बेतिया। जिला पदाधिकारी दिनेश कुमार राय की अध्यक्षता में शुक्रवार को समाहरणालय सभाकक्ष में प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना की बैठक जिला स्तरीय पदाधिकारियों के साथ सम्पन्न हुई। समीक्षा के क्रम में जिला मत्स्य पदाधिकारी ने बताया कि मत्स्य विभाग के पोर्टल पर प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजनान्तर्गत नया तालाब निर्माण एवं उन्नत इनपुट योजना में विभिन्न वर्गो में 54, रियरिंग तालाब निर्माण में 21, मत्स्य बीज हैचरी अधिष्ठापण में 02, बॉयोफ्लॉक तालाब निर्माण 08, आर्द्रभूमि में अंगुलिका संचयन योजना में 02, लघु अलांकरी संवर्द्ध योजना में 01, मध्यम अलंकारी सवंर्द्ध योजना में 01, सुक्ष्म बायोफ्लॉक योजना में 10, आईस प्लांट में 03, मोटर साईकिल-सह-आईस बॉक्स 09, थ्री व्हीलर-सह-आईस बॉक्स, साईकिल-सह-आईस बॉक्स, जिन्दा मछली विक्रय केन्द्र 03 एवं लघु फिड मील 08, फिश क्यिॉस्क योजना में 03, रैस योजना में 01 एवं मध्यम बॉयोफ्लॉक में 01 आवेदन प्राप्त हुआ है। जिसमें अनुसूचित जाति वर्ग में 07 आवेदन, अनुसूचित जनजाति में 14 आवेदन, महिला वर्ग में 05 आवेदन तथा अन्य वर्ग में 149 आवेदन अन्य वर्ग में प्राप्त हुए है। कुल प्राप्त 157 आवेदनो मे से इच्छुक एवं विभाग द्वारा निर्धारित आवष्यक अहर्ता पूर्ण करने वाले आवेदनो का चयन किया गया। जिला पदाधिकारी ने जिला मत्स्य पदाधिकारी को निर्देश दिया गया कि योजना का क्रियान्वयन एवं अनुश्रवण पूर्ण पारदर्शी तरीके से सुनिश्चित करते हुए जिले के सभी प्रखण्डों में योजनाओं का लाभ दिया जाए। किसी के प्रभाव में आकर लाभुकों का चयन कतई नहीं करें। उन्होंने कहा कि क्रियान्वित योजनाओं की जांच उनके द्वारा स्वयं की जायेगी। उन्होंने निर्देश दिया कि लाभार्थियों का चयन विभागीय दिशा-निदेर्शों का अक्षरशः अनुपालन करते हुए बिल्कुल साफ-सुथरे तरीके से कराना सुनिश्चित करें, जिससे प्रधानमंत्री के महत्वकांक्षी योजना से लाभान्वित होकर जिले के आम लोगां को मत्स्य बीज, मत्स्य उत्पादन, मत्स्य विपणन, मत्स्य भंडारण, मत्स्य प्रसंस्करण, रंगीन मछली उत्पादन एवं मत्स्य आहार उत्पादन आदि व्यवसाय द्वारा सतत गुणवतापूर्ण खाने योग्य मछलियो की उपलब्धता बाजार में सुनिश्चित कराई जा सके।

साथ ही रोजगार के नये अवसर भी सृजित हो। किसानों की आय में वृद्वि तथा जिले को मत्स्य बाहुल क्षेत्र बनाया जा सके।समीक्षा के क्रम में जिला मत्स्य पदाधिकारी ने बताया कि प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना के तहत मछुआरे, मत्स्य पालक, मत्स्य विक्रेता, मत्स्य मजदूर, मत्स्य विकास अभिकरण, स्वयं सहायता समूह, संयुक्त दैयता समूह, मत्स्यजीवी सहयोग समिति, मत्स्य फेडरेशन, मत्स्य उद्यमी, कम्पनियां, मत्स्य उत्पादक समूह/संस्थान, अनुसूचित जाति/जनजाति/महिला/दिव्यांग आदि को लाभान्वित किया जा रहा है।

पुलिस ने भारी मात्रा में विदेशी शराब सहित पांच कारोबारी को किया गिरफ्तार, चार मोटरसाइकिल जब्त

प्रातः किरण, संवाददाता

बेतिया। बैरिया थाना द्वारा भारी मात्रा विदेशी शराब सहित पांच कारोबारियों को धर दबोचा गया है तथा पुलिस ने चार मोटरसाइकिल भी जप्त किया है। उक्त जानकारी देते हुए एसडीपीओ -2 रजनीकांत ने बताया कि पुलिस अधीक्षक बेतिया शौर्य सुमन के निदेर्शानुसार क्रिसमस एवं फर्स्ट जनवरी के मद्देनजर श्रीनगर थाना द्वारा पिछले एक सप्ताह से गंडक नदी के उस पार श्रीनगर,बैजुआ, चैंनपटी घाट, मसान ढाब, राजघाट गोबराही, मंगलपुर एवं ठकराहा बॉर्डर पर लगातार उतर प्रदेश से शराब लाने शराब कारोबारियों के विरुद्ध अभियान चलाया जा रहा था। इसी के परिणाम स्वरूप कल दिनांक 26/12/24 को समय संध्या 5 बजे श्रीनगर थाना द्वारा 5 शराब कारोबारी को 4 मोटरसाइकिल के साथ कुल 90.735 लीटर अंग्रेजी शराब बरामद किया गया।इस मामले में श्रीनगर थाना द्वारा प्राथमिकी दर्ज कर अग्रतर विधिक कारवाई की जा रही है।बेतिया पुलिस का अवैध शराब के विरुद्ध निरंतर अभियान जारी है।

जिलाधिकारी के जनता दरबार में 112 मामलों की हुई सुनवाई

डीएम ने हर मामले को गौर से सुना,कई मामलों का किया ऑन-द-स्पॉट समाधान

प्रात: किरण, संवाददाता

बेतिया। जिलाधिकारी कार्यालय प्रकोष्ठ में शुक्रवार को जनता दरबार का आयोजन किया गया। जिलाधिकारी, श्री दिनेश कुमार राय ने लोगों की समस्याओं एवं शिकायतों को बारी-बारी से सुना। जनता दरबार में कई समस्याओं एवं शिकायतों का ऑन-द-स्पॉट समाधान कराया गया। साथ ही कई मामलों में संबंधित प्रशासनिक एवं पुलिस अधिकारियों को फोन कर समस्याओं का समाधान करने के लिए शीघ्र समुचित कार्रवाई करने का निर्देश दिया गया।

जिलाधिकारी के जनता दरबार में 112 मामले आए। जिन मामलों का समाधान आज नहीं हो सका, उसे संबंधित विभाग/अधिकारियों को भेजते हुए त्वरित गति से नियमानुकूल समाधान कराने हेतु निर्देशित किया गया।जनता दरबार में कई तरह के मामले आए। जिसमें राजस्व, शिक्षा, आपूर्ति, आवास, स्वास्थ्य, से जुड़ी समस्या आदि शामिल हैं। जिलाधिकारी ने हर मामले को बहुत गौर से सुना और नियमानुसार समाधान की दिशा में आवेदन को आगे बढ़ाया।

जिन लोगों के द्वारा अपनी समस्याओं से जिलाधिकारी को अवगत कराया गया उनमें झगरू राम, शमिम अंसारी, नवल कुमार, अमित कुमार, देवनाथ प्रसाद, किशोर सिंह, दशरथ तुरहा, आजाद हुसैन, भाग्यवती देवी, केदार राम, विशाल कुमार, आरती तिवारी, स्नेहलता कुमारी, ओमप्रकाश साह, रामराज राव, प्रभुनाथ तिवारी, कृष्णा कुशवाहा, सुबोध कान्त तिवारी, जगत नरायण शुक्ल, दिनेश कुमार, राघव पाण्डेय, उर्मिला देवी, रागिनी देवी, मालिक पाण्डेय, बिंदा यादव, संतोष दास, डब्लू पाण्डेय, सपन शर्मा आदि के नाम शामिल हैं।

जिलाधिकारी ने डॉ0 अम्बेडकर कल्याण छात्रावास का किया निरीक्षण

बेतिया(घनश्याम)। जिला पदाधिकारी दिनेश कुमार राय ने शुक्रवार को विपिन उच्च माध्यमिक विद्यालय के प्रांगण में अवस्थित डॉ0 अम्बेडकर कल्याण छात्रावास का निरीक्षण किया। जिलाधिकारी ने छात्रों से बातचीत कर उनसे पठन-पाठन एवं अन्य सुविधाओं के संबंध में जानकारी प्राप्त किया। साथ ही संबंधित अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिया।उन्होंने जिला कल्याण पदाधिकारी को विभागीय दिशा-निर्देश के अनुरूप बेहतर तरीके से छात्रवास का संचालन कराने हेतु निर्देशित किया। उन्होंने निर्देश दिया कि बच्चों को गुणवतापूर्ण खाना, पानी, स्वास्थ्य जांच सहित अन्य सुविधाएं ससमय मिले, इस हेतु विशेष ध्यान दिया जाय। निरीक्षण के क्रम में जिलाधिकारी ने छात्रावास की साफ-सफाई, मेस संचालन एवं अन्य व्यवस्थाओं को और बेहतर तरीके से संचालित करने का निर्देश दिया। छात्रावास परिसर में अवस्थित खराब चापाकल को 24 घंटे के अंदर दुरूस्त करने का निर्देश कार्यपालक अभियंता, पीएचईओ को दिया गया।इस अवसर पर जिला कल्याण पदाधिकारी मो0 असलम अली प्रखंड कल्याण पदाधिकारी नवनीत कुमार सहित अन्य अधिकारी उपस्थित थे।

एफएमबी के तहत 03 ग्रुपों को प्रदान की गयी स्वीकृति

बेतिया। जिला पदाधिकारी दिनेश कुमार राय की अध्यक्षता में शुक्रवार को समाहरणालय सभाकक्ष में कृषि यांत्रिकरण के घटक (6) फार्म मेशनिरी बैंक (एफएमबी) के स्वीकृति हेतु जिलास्तरीय कार्यान्वयन समिति की बैठक सम्पन्न हुयी। समिति की बैठक में एफएमबी के 03 लक्ष्य के विरूद्ध प्राप्त आवेदनों का प्रथम आओ, प्रथम पाओ के सिद्धांत पर प्रथम तीन ग्रुप को स्वीकृति प्रदान की गयी। इस योजना के लाभार्थी एफपीओ/आत्मा योजना से गठित ग्रुप के लोग हो सकते हैं।समिति की बैठक को निर्देशित करते हुए जिलाधिकारी, श्री दिनेश कुमार राय ने कहा कि योजनाओं का क्रियान्वयन बेहतर तरीके से कराना सुनिश्चित करें। लाभुकों के चयन में पूर्ण पारदर्शिता बरती जाय। किसी के प्रभाव में आकर लाभुकों का चयन नहीं करें। लाभुकों के चयन में विभागीय दिशा-निदेर्शों का अक्षरशः अनुपालन सुनिश्चित करें। इस कार्य में किसी भी स्तर पर कोताही नहीं बरती जाय। गड़बड़ी करने वालों के विरूद्ध कार्रवाई की जायेगी।उन्होंने निर्देश दिया कि कृषि विभाग द्वारा संचालित विभिन्न योजनाओं का व्यापक प्रचार-प्रसार सुनिश्चित करें ताकि जिले के सभी क्षेत्रों के कृषक लाभान्वित हो सके। उन्होंने निर्देश दिया कि जिन प्रखंडों में लाभुकों का चयन नहीं किया गया है, वहां के कृषकों को भी लाभान्वित करने की दिशा में ठोस कार्रवाई करें। इस अवसर पर अपर समाहर्ता, श्री राजीव कुमार सिंह, जिला कृषि पदाधिकारी, श्री प्रवीण कुमार राय सहित सहायक निदेशक, कृषि अभियंत्रण, कृषि विज्ञान केन्द्र, माधोपुर के वैज्ञानिक, सहायक निदेशक, उद्यान एवं कृषि विभाग के अन्य अधिकारी उपस्थित थे।

सड़क निर्माण में हुए गड़बड़ी का वीडियो वायरल, डीएम ने लिया संज्ञान

प्रातः किरण, संवाददाता

बगहा। 23 दिसंबर को सूबे के मुख्यमंत्री का आगमन वाल्मीकिनगर हुआ था लेकिन आगमन से पूर्व वाल्मीकिनगर में कई लंबित कार्यों को आननफानन में पूरा किया गया।जिसमें वाल्मीकिनगर स्थित 3 आरडी पूल चौक से दरुआबारी तक बहु प्रतीक्षित सड़क के कार्य को भी किया गया है।लेकिन इस कार्य मे भारी अनियमितता की जा रही है। लोगों ने इसका वीडियो बनाकर वायरल कर दिया है। वीडियो में साफ देखा जा रहा है कि एक व्यक्ति द्वारा बन चुके सड़क के बीच से हाथ से गिट्टी को हटाते देखे जा रहे है।गिट्टी के हटते ही नीचे की जमीन दिखने लगती है।वहीं 3 आरडी पूल जहां से सड़क निर्माण कार्य शुरू हुआ है ठीक उसी जगह पर बनी सड़क से गिट्टियां अपने जगह से उखड़कर बिखड़ रही है जिसे संवेदक के सड़क निर्माण कर्मी के द्वारा तारकोल गिराकर उसके ऊपर घुल डालकर खाली हुए जगहों को भरा जा रहा है।कहीं कहीं तो मिट्टी पर रोलिंग कर पीचिंग किया गया है।सूत्रों से मिली जानकारी के मुताबिक वायरल वीडियो के बाबत डीएम ने संज्ञान लिया है और जांच की बात सामने आ रही है।

बतातें चलें कि इस कच्ची सड़क को पक्की सड़क बनाने के लिए समाजसेवियों और ग्रामीणों ने सरकार और अधिकारियों को पत्र लिखकर और आमने सामने मिलकर गुहार कई बार लगाई थी।लेकिन सड़क निर्माण में वायरल वीडियो की माने तो जिस तरह से निर्माण कार्य मे अनियमितता हुई है उसकी जांच होनी चाहिए और चिन्हित कर उन जगहों गड़बड़ी वाले जगहों पर दोबारा से कार्य किया जाना चाहिए ताकि मजबूत सड़क का लाभ लोगों को मिल सके।

श्रद्धालुओं से भरा ई रिक्शा पलटा, चार महिलाए घायल दो की हालत गम्भीर, किया गया रेफर

प्रातः किरण, संवाददाता

बगहा। श्रद्धालुओं से भरा ई रिक्शा धार्मिक स्थल जटाशंकर के समीप अनियंत्रित होकर पलट गया ।जिसमें नेपाल की 4 महिला श्रद्धालुओं को चोटें आई है। जिन्हें वाल्मीकिनगर सरकारी अस्पताल में भर्ती कराया गया है।बतादें की नेपाल से एक श्रद्धालुओं का जत्था अयोध्या दर्शन कर लौट रहा था।ये जत्था वाल्मीकिनगर पहुंचकर वाल्मीकि आश्रम के दर्शन के लिए ई रिक्शा से चले,लेकिन जटाशंकर के करीब वाल्मीकि आश्रम मार्ग पर अनियंत्रित होकर ई रिक्शा पलट गया।डॉ विकास कुमार ने बताया कि चार घायल महिलाओं को भर्ती कराया गया है।जिनमे दो की हालत नाजुक है जिन्हें बेहतर इलाज के लिए बगहा अनुमंडल अस्पताल रेफर कर दिया गया है।वहीं दो महिलाओं को हल्की चोटें आई है।

विजय हजारे ट्रॉफी में हुआ सुहेल अख़्तर अंसारी का चयन

छपरा कार्यालय।सारण जिले के मोहम्मदपुर गांव का शमशुद्दीन अंसारी के बेटा शुहेल अख्तर अंसारी का अरुणाचल सीनियर पुरुष (विजय हजारे ट्राॅफी) टीम के लिए हुआ चेन। शुहेल अख्तर अंसारी अरुणाचल के एकेडमी फॉर क्रिकेटिंग एक्सीलेंस (ऐस) क्लब और ईटानगर क्रिकेट एसोसिएशन (जिला) के लिए लगतर अपने ऑलराउंडर प्रदर्शन के बाद आज उनका चेन बिजय हजारे ट्रॉफी में हुआ है। शुहेल अख्तर अंसारी अपने मेहनत के चलते स्टेप बाय स्टेप अपने जिले और अपने राज्य का नाम रोशन कर रहे हैं .और इटांगर क्रिकेट एसोसिएशन (आईसीए) के सचिव और अरुणाचल क्रिकेट एसोसिएशन के सचिव डोनू शुहेल अख्तर अंसारी को उसका अभ्यास को देख के लगतर मौका देरहे है, शुहेल जो 2022-23 सत्र में अरुणाचल के लिए व23 में अपना ऑलराउंडर प्रदर्शन करके अरुणाचल का सर्वोच्च स्कोरर रहे और उत्तर पूर्व का दूसरा सर्वोच्च स्कोरर रहे और उनको बिहार के खिलाफ अरुणाचल व23 टीम का कैप्टन भी रह चुके हैं और वही 2023-24 में अरुणाचल पुरुष व23 राज्य की एक ट्रॉफी टीम के लिए भी चयन हुआ और उसका चयन हुआ, ओनडे में अच्छा प्रदर्शन के बाद उनको सीके नायडू ट्रॉफी के लिए भी चयन हुआ था और अभी इनका चयन अरुणाचल के सीनियर पुरुष टीम में हुआ है आशा करते हैं शुहेल अख्तर अंसारी अपना मेहनत से अपना परिवार, अपना जिला और अपना राज्य का नाम रोशन करेंगे। और बता दे कि शुहेल सारण जिले के लिए भी बिहार का सबसे बड़ा जिला टूनार्मेंट (हेमन ट्रॉफी)) होता है उसमें भी सारण डिस्ट्रिक्ट के खेले हैं .तो आने वाले मैच के लिए शुभकामनाएं देते हैं।

भाजपा की बैठक हुई संपन्न

प्रातः किरण, संवाददाता

छपरा कार्यालय। सुशील कुमार मोदी स्मृति शोध संस्थान के तत्वावधान में सुशील मोदी की 5 जनवरी को श्री कृष्ण मेमोरियल हॉल पटना मे आयोजित जयंती समारोह की सफलता के लिए तथा सुशील कुमार मोदी को व्यक्तित्व एवं कृतित्व को याद करने के लिये सारण जिला में स्व सुशील कुमार मोदी स्मृति सेवा सप्ताह मनाने के लिए छपरा विधायक डॉ सी ऐन गुप्ता के नेतृत्व में भाजपा जिला कार्यालय में बैठक का आयोजन किया गया, जिसमे डॉ सी एन गुप्ता ने बताया कि बिहार के विकास में मोदी जी का अभूतपूर्ण योगदान रहा है, उनके जयंती के अवसर पर छपरा से काफी लोग उक्त आयोजन में भाग लेंगे एवं छपरा में स्व सुशील कुमार मोदी स्मृति सेवा सप्ताह का आयोजन किया जाएगा जिसमें रक्तदान शिविर,स्वास्थ्य शिविर, विचार गोष्ठी एवं जन कल्याण के अन्य कार्यक्रम होंगे इस बैठक में भाजपा जिला अध्यक्ष रणजीत कुमार सिंह , पूर्व जिला अध्यक्ष रमेश प्रसाद अशोक कुमार सिंह आदि थे।

डीएम ने की 7 मामलों की सुनवाई

प्रातः किरण, संवाददाता

छपरा कार्यालय। जिलाधिकारी, सारण अमन समीर के द्वारा आज कार्यालय कक्ष में बिहार लोक शिकायत निवारण अधिकार अधिनियम, 2015 के तहत द्वितीय अपील में शिकायतों की सुनवाई की गई और शिकायत का निवारण किया गया। जिला पदाधिकारी द्वारा आज लोक शिकायत के कुल 07 मामलों की सुनवाई की गई जिसमें 05 मामले में अंतिम रूप से आदेश पारित किया गया तथा शेष 02 मामले में पूर्ण प्रतिवेदन के साथ अगली तिथि पर लोक प्राधिकार को उपस्थित होने का निर्देश दिया गया। जिला पदाधिकारी अमन समीर ने कहा कि लोक शिकायतों का ससमय तथा गुणवत्तापूर्ण निवारण अत्यावश्यक है। लोक प्राधिकारों को तत्परता प्रदर्शित करनी होगी। उन्होंने कहा कि बिहार लोक शिकायत निवारण अधिकार अधिनियम, 2015 का सफल क्रियान्वयन प्रशासन की सर्वोच्च प्राथमिकता है। सभी पदाधिकारी इसके लिए सजग, संवेदनशील तथा सक्रिय रहें।

श्रद्धालुओं ने निकाली कलश यात्रा

छपरा कार्यालय। गायत्री शक्तिपीठ सलेमपुर छपरा पांच दिवसीय 24 कुंडिय गायत्री महायज्ञ का हुआ शुभारंभ आज कलश यात्रा हजारों हजार महिलाएं शामिल हुई । 27 दिसंबर कलश यात्रा से प्रारंभ गायत्री यज्ञ 1 जनवरी 2025 तक चलेगा प्रतिदिन सुबह में यज्ञ हवन पूजा पाठ एवं संध्या समय प्रवचन का आयोजन किया गया है । पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य हरिद्वार के गायत्री परिवार के द्वारा प्रत्येक वर्ष आयोजन किया जाता है। अरुण पुरोहित धर्म प्रचारक ने समस्त सनातन धमार्लंबियों से हवन एवं प्रवचन के कार्यक्रम में तन मन धन से सहयोग कर अपनी भागीदारी सुनिश्चित करने की अपील की। हजारों की संख्या में महिलाओं ने कलश यात्रा मैं सम्मिलित हू कलश यात्रा गायत्री शक्तिपीठ सलेमपुर से प्रारंभ होकर के कचहरी स्टेशन मौना चौक गांधी चौक कटहरी बाग ,सोनार पट्टी साहेबगंज, टाउन थाना चौक, नगर निगम चौक होते हुए सलेमपुर चौक से पुनः मंदिर परिसर में पहुंची।

भारतीय युवा शक्ति संघर्ष मोर्चा के प्रमुख संरक्षक बने जयप्रकाश विश्वविद्यालय के पूर्व छात्र नेता प्रिंस कुमार सिंह

प्रातः किरण, संवाददाता

छपरा सदर। शुक्रवार को सामाजिक संगठन भारतीय युवा शक्ति संघर्ष मोर्चा के अध्यक्ष अमित नयन एवं सचिव रोहित रमन सिंह के द्वारा भारतीय युवा शक्ति संघर्ष मोर्चा के प्रमुख संरक्षक पूर्व छात्र नेता प्रिंस कुमार सिंह जी को मोमेंटो एवं साल से सम्मानित कर संगठन का प्रमुख संरक्षक बनाया । संगठन के विस्तार में प्रमुख संरक्षक की भूमिका काफी बढ़ जाती है। सम्मानित होने पर संगठन के प्रमुख संरक्षक प्रिंस कुमार सिंह ने कहा कि भारतीय युवा शक्ति संघर्ष मोर्चा एक सामाजिक संगठन है जो सामाजिक बदलाव के दिशा में क्रांतिकारी मुहिम छेड़ रहा है। मैं संगठन के अध्यक्ष अमित नयन सचिव रोहित रमन सिंह समेत तमाम भारतीय युवा शक्ति संघर्ष मोर्चा के कार्यकताओं को सम्मान के लिए तहे दिल से अभिनंदन करता हूं। संगठन का दायित्व बहुत बड़ा होता है जिसका निर्वहन में पूरी शिद्दत के साथ करूंगा ताकि समाज में व्यापक बदलाव लाया जा सके। प्रमुख संरक्षक को बधाई देते हुए अध्यक्ष एवं सचिव ने प्रफुल्लित मुद्रा में संदेश दिया कि भारतीय युवा शक्ति संघर्ष मोर्चा शिक्षा स्वास्थ्य एवं रोजगार के दिशा में निरंतर संघर्ष करते रहेगा। सम्मानित होने पर बधाई देने वालों में पूर्व छात्र नेता विकास कुमार तिवारी, सुशील कुमार डब्लू, मजहर रिजवी, सोनू यादव अमर बाबा, संगठन के सह विकास कुमार गुप्ता, सुमित कुमार सिंह, उपाध्यक्ष दिलीप वर्मा, संजना मिश्रा कोषाध्यक्ष ऐश्वर्या सोनी एवं विभिन्न सामाजिक क्षेत्र से सरोकार रखने वाले जनप्रतिनिधियों ने प्रिंस कुमार सिंह को भारतीय युवा शक्ति संघर्ष मोर्चा का प्रमुख संरक्षक बनने पर बधाइयां दी।

फुशनुमा घर में लगी आग हजारों का सम्मान जलकर राख

प्रातः किरण, संवाददाता

परसा।थाना क्षेत्र के बिशनपुर गांव में गुरुवार की रात्रि जलन्धर राम के फुशनुमा घर में अचानक आग लगने से भारी नुकसान हुआ। इस आगजनी में एक गाय का बच्चा, एक बकरी का बच्चा, एक खोप गेहूं, चारपाई, बर्तन, कपड़े समेत अन्य घरेलू सामान जलकर राख हो गए। वहीं, एक गाय बुरी तरह झुलस गई है।आग लगने की घटना से पूरे गांव में अफरा-तफरी मच गई।

ग्रामीणों ने काफी प्रयास कर आग पर काबू पाया, लेकिन तब तक घर का सारा सामान खाक हो चुका था।घटना की जानकारी मिलते ही सीओ चंदन कुमार ने जांच के आदेश दिए हैं। उन्होंने बताया कि पीड़ित परिवार को जरूरी राहत सामग्री और सहायता जल्द मुहैया कराई जाएगी।मुखिया प्रतिनिधि सतेन्द्र सिंह ने बताया कि पीड़ित परिवार को तत्काल राहत पहुंचाने के लिए कंबल, त्रिपाल और अन्य सामग्री दी जा रही है। साथ ही, उन्होंने प्रशासन से पीड़ित परिवार को आर्थिक सहायता उपलब्ध कराने की मांग की.इस संबंध में पीड़ित महिला राधिका देवी ने बताई की गुरुवार की रात्रि खना बनाकर खाकर सभी परिवार सो गये. इसी बीच गुरुवार की रात्रि लगभग 11 बजे एका एक गाय चिलाने लगी,तो देखा कि फुसनुमा घर मे आग लगी हुई है.किसी तरह से अपनी जान बचाकर बाहर निकलकर चिलाई तो आस पास के लोगो इकठा हुए तबतक सारे समान जलकर राख हो गया था.एक गाय का बच्चा व एक बकरी का बच्चा का जलने से मौत हो गई।

पेपर लीक और परीक्षा माफियाओं पर कार्रवाई करो: अगिआंव विधायक

प्रात: किरण संवाददाता

आरा। पूर्व प्रधानमंत्री डॉ मनमोहन सिंह एवम इढरउ अभ्यर्थी सोनू कुमार को 2 मिनट का मौन रख श्रद्धांजलि दी गई इढरउ अभ्यर्थियों पर बर्बर लाठी चार्ज, पी परीक्षा रद कर नई तारी की घोषणा सहित मृतक इढरउ अभ्यर्थी सोनू कुमार के परिजनों को मुआवजा दिलाने के मांग को लेकर आज आरा रेलवे परिसर में फ्रअ - अक्रअ द्वारा राज्यव्यापी प्रतिवाद दिवस के तहत विरोध प्रदर्शन किया गया।

सभा को संबोधित करते हुए फ्रअ राज्य सचिव सह अगिआंव विधायक शिवप्रकाश रंजन ने कहा जब पूरे देश और दुनिया में क्रिसमस का जश्न मनाया जा रहा था तब बिहार में भाजपा - जदयू की डबल इंजन सरकार बिहार के छात्र नौजवानों पर लाठियां बरसा रही थी। ये स्टूडेंट्स पटना के गर्दनीबाग में इढरउ की 70इं उइए प्री परीक्षा में हुए पेपर लीक के खिलाफ प्रदर्शन कर रहे थे।ठीक इसी दिन डबल इंजन सरकार की भ्रष्ट नीतियों ने पटना के पालीगंज के एक स्टूडेंट की जान ले ली।25 साल का युवा सोनू कुमार,एक इढरउ अभ्यर्थी था जो सत्ताजनित अवसाद का शिकार होकर आत्महत्या कर लिया।नितीश-मोदी की सरकार जो बिहार में सुशासन के बड़े बड़े दावे करती है,वो नाकामी और तानाशाही की सारी सीमाओं को पार करती जा रही है।आज बिहार में सरकार एक परीक्षा सुचारु रूप से करा पाने में समर्थ नहीं है।वहीं अपनी मांगों को लोकतांत्रिक ढंग से रखने वाले युवाओं को आये दिन बर्बर पुलिसिया दमन का शिकार बनाया जा रहा है। अभी इसी महीने इढरउ की परीक्षा में नॉर्मलाइजेशन का विरोध कर रहे स्टूडेंट्स पर लाठीचार्ज किया गया था।आगे अगिआंव विधायक ने कहा कि बिहार इस वक्त शिक्षा और परीक्षा माफियाओं के गिरफ़्त में है।

भोजपुर डीएम व एसपी ने भूमि विवाद और अवैध शराब की रोकथाम के लिए किया समीक्षा बैठक

प्रात: किरण संवाददाता

आरा। जिलाधिकारी भोजपुर एवं पुलिस अधीक्षक भोजपुर द्वारा संयुक्त रूप से भूमि विवाद और अवैध शराब की रोकथाम के लिए समीक्षात्मक बैठक आयोजित की गई। बैठक के दौरान उन्होंने सभी अनुमंडल पदाधिकारी एवं अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी को निर्देश दिया कि देशी शराब बनाने वाले व्यक्तियों की पहचान कर अभियान चलाते हुए उनके विरुद्ध कड़ी कार्रवाई की जाए। इसके बाद ही उन्होंने जप्त शराब के शीघ्र विनष्टीकरण का निर्देश भी संबंधित पदाधिकारियों को दिया। जिलाधिकारी ने थानावार जप्त वाहनों की सूची तैयार कर उसे नीलामी के लिए अविलंब जिला कार्यालय में उपलब्ध कराने का निर्देश दिया। साथ ही, खनन से संबंधित वैकल्पिक रास्तों का चयन कर उनकी सूची जिला कार्यालय में उपलब्ध कराने का निर्देश सभी अनुमंडल पदाधिकारी और अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी को दिया इसके अतिरिक्त, उन्होंने सभी अंचलाधिकारियों को निर्देशित किया कि भूमि विवाद से संबंधित सूची संबंधित थाना से प्राप्त कर उसे शीघ्र निपटाने की प्रक्रिया शुरू करें। इस बैठक में अनुमंडल पदाधिकारी,आरा सदर, पीरो, जगदीशपुर, अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी,आरा सदर, पीरो, जगदीशपुर, सहायक आयुक्त,उत्पाद, जिला खनन पदाधिकारी, प्रभारी पदाधिकारी जिला राजस्व शाखा एवं अन्य उपस्थित थे।

कृषि विज्ञान केंद्र में किया गया वर्मी कंपोस्ट उत्पादक विषय पर आठ दिवसीय पूर्वार्जित ज्ञान प्रमाणन प्रशिक्षण का उद्घाटन

प्रात: किरण संवाददाता

बिक्रमगंज(रोहतास)। कृषि विज्ञान केंद्र बिक्रमगंज, रोहतास में वर्मी कंपोस्ट उत्पादक विषय पर आठ दिवसीय पूर्वार्जित ज्ञान प्रमाणन (आर.पी.एल) प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन किया गया। इस कार्यक्रम का उद्घाटन वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान, डॉ. शोभा रानी और केंद्र के सभी वैज्ञानिकों ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित करके किया।

इस मौके पर प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित करते हुए डॉ. शोभा रानी ने कहा कि यह प्रशिक्षण कार्यक्रम एग्रीकल्चर स्किल काउंसिल ऑफ इंडिया, दिल्ली के नियमों के तहत आयोजित किया गया है और बिहार सरकार के बामेती पटना द्वारा प्रायोजित है। इस कार्यक्रम का उद्देश्य कृषि क्षेत्र में वर्मी कंपोस्ट उत्पादन तकनीकों को बढ़ावा देना और किसानों को आत्मनिर्भर बनाना है। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम की विशेषता यह है कि इसमें थ्योरी और प्रैक्टिकल दोनों का समावेश किया गया है। इसके अलावा, प्रशिक्षणार्थियों को वर्मी कंपोस्ट उत्पादन की तकनीकों का गहराई से अध्ययन करने के लिए विभिन्न स्थलों पर परिभ्रमण कराया जाएगा।

यह उन्हें तकनीकी ज्ञान को वास्तविक स्थिति में देखने और समझने का अवसर प्रदान करेगा।

उन्होंने आगे बताया कि प्रशिक्षण समाप्ति के बाद परीक्षा आयोजित की जाएगी। केवल परीक्षा में सफल होने वाले प्रशिक्षणार्थियों को प्रमाणपत्र प्रदान किए जाएंगे, जो उनके ज्ञान और कौशल को मान्यता देंगे। प्रशिक्षण में डॉ. रमाकांत सिंह ने वर्मी कंपोस्ट के महत्व पर विस्तार से चर्चा की।

उन्होंने बताया कि वर्मी कंपोस्ट का उपयोग भूमि की उर्वरकता बढ़ाने के लिए अत्यंत लाभकारी है और यह पर्यावरण के लिए भी फायदेमंद है। उन्होंने यह भी बताया कि प्रशिक्षण के बाद, प्रशिक्षणार्थी वर्मी कंपोस्ट उत्पादन की प्रक्रिया को न केवल समझेंगे बल्कि इसे अपनी कृषि भूमि पर प्रभावी रूप से लागू भी कर सकेंगे। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में डॉ आर के जलज, डॉ रतन कुमार ,संजू कुमारी ,अभिषेक कौशल एवं एचपी शर्मा भी उपस्थित थे।

प्राइवेट स्कूल एंड चिल्ड्रेन वेलफेयर एसोसिएशन के द्वारा एक शिष्टमंडल ने भोजपुर जिला अधिकारी से मिलकर दिया पांच सूत्री मांगों का ज्ञापन

प्रात: किरण संवाददाता

आरा। प्राइवेट स्कूल एंड चिल्ड्रेन वेलफेयर एसोसिएशन भोजपुर के अध्यक्ष स्मिता सिंह के नेतृत्व में एक शिष्टमंडल भोजपुर जिलाअधिकारी ऊद,तान्या सुल्तानिया से मिलकर पांच सूत्री मांगों को रखा । शिष्टमंडल में निर्मल कुमार सिंह ,विनोद शाह,एन के पांडे ,नागेंद्र राय, रब नवाजा खां , राजन सर ,वसी अख्तर, रत्नेश जी, जयशंकर प्रसाद सम्मिलित हुए। अध्यक्ष -डॉ स्मिता सिंह के द्वारा जिलाधिकारी महोदय के सामने आर टी ई के बकाया पैसा ,जन्म प्रमाण पत्र बनाने में हो रहे विलंब, चुनाव में गई गाड़ियों का बकाया पैसा, प्राइवेट स्कूल में आधार केंद्र स्थापित करने के संबंध में, चर्चा की जिस पर जिलाधिकारी ने सहमति जताते हुए कहा कि बहुत जल्द हम अपने स्तर से केंद्र को पत्र लिखकर आर टी ई का बकाया पैसा अभिलंब विद्यालय को दिया जाए यह मांग रखूंगा एवं जन्म प्रमाण पत्र और आधार केंद्र के संबंध में कहा कि यह बहुत जल्द हम पत्र निर्गत करके इसका समाधान करते हैं सभी एसोसिएशन लीडर ने अपनी अपनी बात रखते हुए कहां की अगर आर टी ई का पैसा इस बार नहीं मिलने पर हम सभी 2025-26 का आर टी ई के तहत लिए जाने वाले नामांकन अपने विद्यालय में नहीं करेंगे जिलाधिकारी महोदय के सामने अपनी बातों को रखें। जिलाधिकारी महोदय ने कहा की हर समय आप सभी के साथ हैं और आपके किसी भी परेशानी को हम अपने स्तर से दुरुस्त करने का काम करूंगा।जिस पर स्मिता सिंह ने कहा कि इसके लिए मैं आपको अपने टीम के साथ आभार प्रकट करते हुए कहा कि आपने मेरी समस्याओं को सुनकर उसकी समाधान करने के लिए हम सभी के साथ खड़े ।यह आपकी शालीनता का प्रतीक है।

गुरुद्वारा सिंह सभा में वीर बालकों को दिया गया श्रद्धांजलि

प्रात: किरण संवाददाता

आरा भोजपुर। 28 दिसंबर दिन बृहस्पतिवार को गुरु गोविंद सिंह के बालकों को भाजपा के द्वारा वीर बाल दिवस पर शहादत श्रद्धांजलि दी गई . इस अवसर पर भाजपा के अध्यक्ष दुर्गा राज ने कहा कि समाज में लड़ाई किस से है और हमें भविष्य में किस चीज से जागरूक रहने की आवश्यकता है या समझने की जरूरत है. नगर विधायक अमरेंद्र प्रताप सिंह ने कहा की सदियों से मेरा परिवार सिख समुदाय के साथ रहा है और यह समुदाय सिर्फ देश ही नहीं संपूर्ण समाज की रक्षा के लिए कृत संकल्प है और हम सभी को इस समुदाय और उनके आदर्शों के बारे में जागृत करने की जरूरत है. समारोह के मन संचालक के तौर पर हरनाम प्रीत सिंह थे . कार्यक्रम के जिला संयोजक पंकज प्रभाकर ने लोगों का धन्यवाद और आभार व्यक्त करते हुए कहा कि जहां भी लंगर की व्यवस्था होती है वहां सिख समुदाय सर्वप्रथम आगे रहता है आज पूरे देश में जगह-जगह पर स्वास्थ्य और आर्थिक सहयोग में सिख समुदाय अग्रणी है. कार्यक्रम में उपस्थित लोगों में कार्यक्रम को सफल बनाने में उपस्थित लोगों में संजय सिंह टाइगर .प्रेम रंजन चतुर्वेदी, धीरेंद्र जी ,संतोष चंद्रवंशी, विभु जैन, डॉ आदित्य विजय जैन, शंभू चौरसिया, राकेश रंजन पुतुल, मनीष गुप्ता, हैप्पी तिवारी, संजय सिंह ,निशांत सिंह, प्रतीक कुमार, जीतू चौरसिया ,धर्मेंद्र सिंह राजीव रंजन श्रीवास्तव नवीन प्रकाश थे. कार्यक्रम के संयोजक पंकज प्रभाकर थे.

सब इंस्पेक्टर की पत्नी का आकस्मिक निधन, शोक में डूबा परिवार

आरा। जिले के कोइलवर प्रखण्ड के वार्ड-3 निवासी ऋषव रोहन की 26 वर्षीय पत्नी निशा कुमारी की आकस्मिक निधन हो गया। उन्होंने पटना स्थित एक निजी अस्पताल में आखिरी सांस ली। बेतिया के मटियारिया थाना में पदस्थापित 2019 बैच के प्रशिक्षु सब इंस्पेक्टर ऋषव रोहन की 26 वर्षीय पत्नी निशा कुमारी की आकस्मिक मौत से शोक की लहर दौड़ गयी। उन्होंने गुरुवार की शाम मेदांता हॉस्पिटल पटना में अंतिम सांस ली। जिनका दो माह का एक पुत्र है। कोईलवर शव पहुंचते ही हर किसी के आंखों से आंसू छलक पड़े। इनकी मौत की सूचना मिलते ही नगर कोईलवर के वार्ड नंबर 3 में शोक संतप्त स्वजनों को ढांढस देने मुख्य पार्षद सरताज आलम, वार्ड पार्षद शिवकुमार सिंह, पार्षद प्रतिनिधि दिनेश बिंद,सोनू, शुभम,आशीष, पत्रकार आलोक, दीपक, नीरज,समेत सैकड़ो लोग पहुँच ऋषव को ढांढस बंधाया।

खुशी: भाजपा नगर अध्यक्ष पुन: बनने पर नागेश्वर कुशवाहा को लोगों ने दी बधाई

बिक्रमगंज (रोहतास) भाजपा युवा नेता नागेश्वर कुशवाहा को पुनः बिक्रमगंज नगर अध्यक्ष बनने पर कार्यकर्ता सहित अन्य लोगों ने बधाई दी।

इस अवसर पर स्थानीय शहर के एक सभागार में भाजपा कार्यकताओं ने एक सम्मान समारोह कार्यक्रम का आयोजन किया। जिसके अंतर्गत पुनः दूसरी बार नगर अध्यक्ष बनें नागेश्वर कुशवाहा को फूल माला पहना अंगवस्त्र भेट कर उन्हें सम्मानित किया। मौके पर नवनिर्वाचित नगर अध्यक्ष ने एनडीए कार्यकताओं सहित अन्य लोगों का अभिनंदन करते हुए बताया कि मेरे लिए यह सौभाग्य की बात है कि पुनः हमें नगर अध्यक्ष के रूप में बिक्रमगंज नगर क्षेत्र में जनहित के लिए कार्य करने का मौका मिला। जिसके लिए मैं भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता व रोहतास जिला भाजपा चुनाव अधिकारी सह पूर्व विधान परिषद सदस्य डॉ. रणवीर नंदन सहित प्रदेश नेतृत्व एवं बिहार प्रदेश अध्यक्ष डॉ. दिलीप जयसवाल का तहेदिल से आभारी हूं। जिनके द्वारा रोहतास जिला मंडल अध्यक्षों की सूची में मुझे भी शामिल किया गया। दूसरे तरफ कार्यकताओं ने भी हर्ष व्यक्त हुए बताया नए अध्यक्ष के बनने से नगर क्षेत्र में भ्रष्टाचार के खिलाफ भी जनहित कार्य में आवाज बुलंद होगी। कार्यक्रम समारोह के मौके पर बिहार विधान परिषद सदस्या श्रीमती निवेदिता सिंह, पूर्व विधायक जवाहर प्रसाद,सरदार सूचित सिंह, संदीप सोनी, मंगल कुमार, गुप्तेश्वर गुप्ता, मंगलानंद पाठक, शरदचंद्र संतोष, शिवनाथ चौधरी, संतोष कुमार,रजनीश वर्मा,मुकेश पाण्डेय,कपिल देव चौधरी,अरुण कांश्यकार,अवधेश सिंह, चौरसिया,अजय सिंह,कपिल देव चौधरी,राजेश कुमार, डॉ. राजेन्द्र चंद्रवंशी, विशाल देव, प्रभाकर तिवारी, बृजनंदन कुशवाहा, बंशीधर सेठ, जितेंद्र कुमार सहित अन्य लोग शामिल थे।

संक्षिप्त खबरें

पुलिस ने खिरियांव से भारी मात्रा में शराब किया बरामद

प्रात: किरण संवाददाता

नासरीगंज(रोहतास) । नासरीगंज थाना क्षेत्र के खिरियांव गांव में पुलिस ने छापेमारी कर 42 लीटर देशी महुआ शराब बरामद किया गया। जबकि धंधेबाज फरार हो गया।थानाध्यक्ष मितेश कुमार ने बताया कि खिरियांव गांव में देशी महुआ शराब की एक बड़ी खेप पहुचने की सूचना मिली। इस पर त्वरित कार्रवाई करते हुए छापेमारी की गई। पुलिस को आते देख धंधेबाज फरार हो गया। वहां से अलग अलग पोलिथिन में पैक 42 लीटर महुआ शराब बरामद किया गया। धंधेबाज की पहचान कर उसके विरुद्ध कार्रवाई की जाएगी।

वाहन चेकिंग में वसूला 10 हजार रुपया जुमार्ना

काराकाट(रोहतास)। पुलिस अधीक्षक रोहतास रौशन कुमार के निर्देश पर अपराध नियंत्रण को लेकर चलाए जा रहे वाहन चेकिंग अभियान के तहत पीएसआई शालू कुमारी और एएसआई धर्मेंद्र कुमार सिंह के नेतृत्व में कछवां पुलिस ने थाना मोड़ के पास वाहन चेकिंग अभियान चलाया। हालांकि कोई आपत्ति जनक सामग्री बरामद नहीं किया गया, लेकिन वाहन अधिनियम के उल्लंघन को लेकर विभिन्न वाहन चालकों से 10 हजार रुपया जुमार्ना वसूल किया गया।

30 दिसंबर को होने वाले एक दिवसीय व्याख्यानमाला कार्यक्रम स्थगित

बिक्रमगंज(रोहतास) । एक दिवसीय व्याख्यानमाला कार्यक्रम जो पूर्व में 30 दिसंबर 2024 को निर्धारित था, जो अब पूर्व प्रधानमंत्री डॉ मनमोहन सिंह के देहांत के कारण राष्ट्रीय शोक के पालन में स्थगित किया जाता है । कार्यक्रम की नई तिथि की सूचना शीघ्र ही प्रदान की जाएगी । इसकी जानकारी डॉ नागेंद्र झा महिला कॉलेज के प्राचार्य डॉ अमरेंद्र कुमार मिश्रा ने दी ।

वार्षिक खेल प्रतियोगिता में बच्चों ने लिया भाग

बिक्रमगंज (रोहतास) बिक्रमगंज शहर के करियवां बाल पर प्रज्ञा पुंज पब्लिक स्कूल के बच्चों ने वार्षिक खेल प्रतियोगिता में लिया भाग । जानकारी देते हुए उक्त विद्यालय के निदेशक अभिजीत आनंद ने बताया कि वार्षिक खेल प्रतियोगिता में लॉन्ग जंप,हाई जंप ,100 मीटर रेस ,200 मीटर रेस ,क्रिकेट ,स्पून रेस ,सुई धागा, बैडमिंटन ,कैरम बोर्ड ,शतरंज सहित अन्य खेलों में स्कूल के सभी छात्र-छात्राओं ने बढ़ चढ़कर भाग लिया । जिसमें सभी छात्र-छात्राओं ने अपने-अपने खेल में अपना-अपना करतब दिखाया । उन्होंने बताया कि खेल प्रतियोगिता में सफल प्रतिभागियों को पुरस्कृत भी किया जाएगा ।

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद दक्षिण प्रान्त के 66 वें प्रान्त अधिवेशन का कार्यकर्ता सम्मेलन सह सम्मान समारोह आयोजित

प्रात: किरण संवाददाता

आरा। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद दक्षिण प्रान्त के 66वें प्रान्त अधिवेशन में आज पूर्व कार्यकर्ता सम्मेलन सह सम्मान समारोह का भी आयोजन किया गया। इस आयोजन में पूरे बिहार से लगभग दो सौ पूर्व कार्यकर्ता शिरकत किए। सभी कार्यकताओं को अंग वस्त्र व बैग देकर सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम में स्वागत भाषण पूर्व कार्यकर्ता के तौर पर भाजपा नेता कौशल कुमार विद्यार्थी ने किया जबकि मंच संचालन पूर्व कार्यकर्ता डॉ अमरेन्द्र शक्रवार तथा धन्यवाद ज्ञापन श्री राजेन्द्र तिवारी ने की।

उक्त कार्यक्रम में अभाविप के राष्ट्रीय सह संगठन मंत्री श्री बाल कृष्णन ने कार्यकताओं को संबोधित करते हुए कहा अतीत में जो कार्यकर्ता संगठन के लिए कार्य किए हैं, वे हमारे वर्तमान समय के वैचारिक संपति हैं। अपने आप में हर समय उनका सहयोग ,समर्पण तथा त्याग के कारण हीं वैचारिक अधिष्ठान अपने उत्तरोत्तर विकास के लिए अग्रसर है। वहीं अभाविप के पूर्व प्रान्त संगठन मंत्री श्री शिव नारायण महतों ने कार्यकताओं को अपने संबोधन में कहा कि पूर्व कार्यकर्ता संगठन के वैचारिक अधिष्ठान को जिस जोश खरोश के साथ सीचने का जो प्रयास किया है, वो सराहनीय है। कार्यकर्ता जिस क्षेत्र में जाएं उनकी सोच संगठन के सोच को और आगे बढ़ाएगा।

उक्त अवसर पर राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के प्रान्त बौद्धिक प्रमुख श्री उपेन्द्र त्यागी , पूर्व कार्यकर्ता के रूप में दीघा के माननीय विधायक श्री संजीव चौरसिया, विधान पार्षद श्री प्रमोद चंद्रवंशी, सुशील कुमार,प्रो नरेन्द्र कुमार सिंह, मुंगेर विधायक प्रणव यादव, कौशल विद्यार्थी, डॉ अमरेन्द्र कुमार,राजेन्द्र तिवारी, डॉ प्रेम रंजन, डॉ अमरेन्द्र शक्रवार, आनंद कुमार, राजेश रौशन, डॉ राजेश राय, डॉ शेखर सिंह, के डी यादव, मदन स्नेही, भारत लाल, अमित सिंह, बीरेंद्र सिंह, विनय मिश्रा, भीम राय, अभिषेक राय, आदित्य विजय प्रताप सिंह, सौरभ तिवारी, दीपक यादव, डॉ शरत चन्द्र संतोष, विवेक कुमार, रंजय विद्यार्थी, धर्मेंद्र आजाद, कौशलेंद्र कुमार समेत सैकड़ों पूर्व कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

भोजपुर जिला कांग्रेस कमिटी के स्थानीय पार्टी कार्यालय शहीद भवन में किया गया शोकसभा सह पुष्पांजलि सभा का आयोजन

प्रातः किरण संवाददाता

आरा। भोजपुर जिला कांग्रेस कमिटी के अध्यक्ष अशोक राम के नेतृत्व में स्थानीय पार्टी कार्यालय शहीद भवन में एक शोकसभा सह पुष्पांजलि सभा का आयोजन किया गया। सर्व प्रथम सभी कांग्रेसियों ने दो मिनट का मौन व्रत रख मृत आत्मा की शांति के लिए ईश्वर से प्रार्थना किया। तत्पश्चात जिला अध्यक्ष अशोक राम ने अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि भारत के पूर्व प्रधानमंत्री, महान अर्थशास्त्री डॉ. मनमोहन सिंह जी का निधन की खबर अत्यंत दुखद हैं। देश ने एक महान अर्थशास्त्री खो दिया है जिसकी भरपाई आनेवाले समय में दूर-दूर तक संभव नहीं है। हम केंद्र की सरकार से मांग करते है कि ऐसे दूरद्दष्टा जिसको दुनिया ने लोहा माना हो उसे अविलंब भारत रत्न सम्मान की घोषणा करें।

शोकसभा सह श्रद्धांजलि में भोजपुर जिला कांग्रेस कमिटी अध्यक्ष अशोक राम, लालदास राय-पूर्व विधान पार्षद, प्रो० निर्मल कुमार सिंह, घनश्याम उपाध्याय, अशोक यादव, हाकिम प्रसाद, जितेन्द्र शर्मा, डॉ श्रीधर तिवारी, डॉ आशुतोष ठाकुर, पन्नग त्रिपाठी, प्रमोद राय, शैलेन्द्र राम, रामानुज दुबे, गजेन्द्र चौधरी, बीरेन्द मिश्र, राकेश त्रिपाठी, संतोष पाण्डेय, मनोज कुमार अंजनी, चितरंजन सिंह मुन्ना, श्याम सुन्दर पाण्डेय, सूरज प्रकाश, नंदेश्वर ओझा, आनंद तिवारी, रवि राम, अशोक सिंह, देव कुमार सिंह, राकेश पाण्डेय, संपत सिंह, गोपाल कृष्ण गोखले, राजेश कुमार, शशिकान्त तिवारी, डॉ भानु प्रताप सिह, बूटन राम, डी० के०सिंह, अजीत सिंह, शिव शंकर राम, शालीग्राम पाठक, शिवनाथ राम, श्याम बाबू, लुटावन राम चौरसिया आदि सभी लोगों ने अपनी श्रद्धांजलि अर्पित किया।

जरूरतमंदों की सेवा ही मानवता का बड़ा धर्म-: कपुरी ठाकुर

■ नई आशा ने गरीबों के बीच किया कंबल वितरण

उदवंतनगर। एकौना पंचायत के चैराई मुसहर टोला में जरूरतमंदों के बीच ह्यनई आशाह्य द्वारा कंबल वितरण किया गया। इस अवसर पर प्रखंड विकास पदाधिकारी कपूरी ठाकुर ने कहा कि जरूरतमंदों के बीच कंबल का वितरण मानवता की सेवा है।

ऐसे कार्य करने वाले और कराने वाले लोग समाज के लिए अनुकरणीय हैं। उन्होंने कहा कि भाग-दौड़ के इस दौर में जरूरतमंदों के बीच जाकर उनकी समस्याओं को जानना और उसके निदान के लिए प्रयास करना सराहनीय है। जो लोग साधन संपन्न हैं या अपनी जरूरतें सुविधा से पूरी कर लेते हैं, उन्हें चाहिए कि निश्चित रूप से अपनी आय का कुछ हिस्सा समाज के गरीब और जरूरतमंदों के बीच वितरण करें। इससे समाज का भला होगा और उन्हें जो संतुष्टि मिलेगी, उसकी तुलना स्वयं उपभोग पर खर्च किए जाने वाली संतुष्टि पर भारी पडेगी। श्री ठाकुर ने टोला के लोगों द्वारा नल-जल, शौचालय, समाजिक सुरक्षा पेंशन, नाली-गली की समस्या पर कहा कि 15 दिनों के भीतर सभी योग्य लोगों को सामाजिक सुरक्षा पेंशन उपलब्ध करा दिया जाएगा। उन्होंने पीएचईडी के अभियंता से यथाशीघ्र नल-जल की शुरूआत कराने की बातें कहीं। साथ ही उपस्थित विकास मित्र को निर्देश दिया कि सभी विधवा, दिव्यांग एवं वृद्धो की सूची बनाकर सामाजिक सुरक्षा पेंशन के लिए प्रपत्र पूरा कराएं। कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ. भीम सिंह भवेश ने किया। मौके पर सोनू पांडे, वरीय शिक्षक सुरेंद्र सिंह, नई आशा के जिला समन्वयक कुंदन कुमार, अमन कुमार, काजल कुमारी, पूजा कुमारी, अर्जून राम आदि थे।

ज्वेलरी के दुकान पर से गहनों से भरे बैग की हुई चोरी

प्रात: किरण संवाददाता

काराकाट(रोहतास) । काराकाट थाना क्षेत्र के गोड़ारी बाजार में शुक्रवार को उचक्के दिनदहाड़े एक ज्वेलरी दुकान से सोने-चांदी के गहनों से भरा बैग लेकर भाग निकले। इस मामले में ज्वेलरी दुकान के मालिक गोडारी निवासी शिवबचन सेठ के पुत्र जगनारायण सोनी ने काराकाट थाने में आवेदन दिया है। पुलिस को दिये गए आवेदन में कहा है कि वह शुक्रवार सुबह दस बजे गोडारी बाजार में स्थित अपनी ज्वेलरी दुकान पर खोलने आया। अभी दुकान खोल हीं रहा था कि बगल में रखा बैग को कोई अज्ञात उच्चके द्वारा उड़ा लिया गया। आगे कहा कि इस घटना को योजनाबद्ध तरीके से अंजाम दिया गया है। क्योंकि दुकान में तीन ताला लगा था जिसमे एक ताला के अंदर फेवीक्विक डाल दिया गया था ताकि दुकान खोलने में देर हो जाये। दुकानदार ने बताया हैं कि उचक्कों द्वारा लेकर भागे गये बैग में 25 ग्राम सोना जिसमें सोने की मंगलसूत्र, नथिया, लॉकेट, लॉकेट सहित अन्य सोने के सामान थे। जिसकी कुल कीमत ढ़ेड लाख रुपये और ढाई किलो चांदी जिसकी कीमत 1.3 लाख रुपये थी। गहनों के अलावा बैग में रखा अन्य सामान भी उचक्के लेकर भाग गये हैं। इस मामले में दुकानदार द्वारा पुलिस से अज्ञात उचक्कों की पहचान कर कार्रवाई करने की गुहार लगायी गयी है।

जिला फुटबॉल लीग प्रतियोगिता 2024-25 का हुआ समापन

सासाराम(रोहतास) ।जिला फुटबॉल लीग प्रतियोगिता 2024-25 का समापन हुआ जिसमे , जिला पदाधिकारी उदिता सिंह, रोहतास के साथ-साथ अभिषेक कुमार, विशेष कार्य पदाधिकारी, रोहतास एवं विनय प्रताप, वरीय उप समाहर्ता-सह-उपाधीक्षक, शारीरिक शिक्षक, रोहतास के साथ काजल कुमारी, मेयर नगर निगम, सासाराम की गरिमामायी उपस्थिति रही सभी खिलाड़ियों को प्रोत्साहित किया गया। आज का फाइनल मैच श्री शंकर स्पोर्ट्स क्लब, सासाराम बनाम न्यू जाय शंकर फुटबॉल क्लब, कोआथ के बीच खेला गया, जिसमे श्री शंकर स्पोर्ट्स क्लब, सासाराम ने न्यू जाय शंकर फुटबॉल क्लब, कोआथ को 2-1 से मात दी. उपाधीक्षक, शारीरिक शिक्षा, रोहतास के द्वारा विजेता खिलाड़ियों को जीत की बधाई दी गई साथ ही उपविजेता टीम के खिलाड़ियों का प्रोत्साहित किया गया उनके द्वारा कहा गया की जीवन में हार जीत लगी रहती है ।

संभावना स्कूल में रजत जयंती समारोह सांस्कृतिक कार्यक्रम के साथ संपन्न

■ समारोह में शामिल हुए बिहार विधान परिषद के सभापति अवधेश नारायण सिंह

प्रात: किरण संवाददाता

आरा। शहर के शुभ नारायण नगर मझौंवा स्थित संभावना आवासीय उच्च विद्यालय के रजत जयंती के दो दिवसीय समारोह का समापन शुक्रवार को भव्य सांस्कृतिक कार्यक्रम के साथ धूमधाम से हुआ। इसके पूर्व रजत जयंती के दूसरे दिन समारोह का उद्घाटन बिहार विधान परिषद के सभापति अवधेश नारायण सिंह, महाराजा कॉलेज के पूर्व प्राचार्य प्रो. डॉ. गांधी जी राय, वीर कुंवर सिंह विवि के पूर्व कुलपति आचार्य धर्मेंद्र तिवारी, पूर्व सह थल सेनाध्यक्ष लेफ्टिनेंट जनरल श्रीकृष्ण सिंह, कर्नल राणा प्रताप सिंह (सेनि), रेडक्रास के चेयरमैन डॉ. विवेकानंद यादव, विद्यालय के निदेशक डॉ. कुमार द्विजेंद्र, प्राचार्या डॉ. अर्चना सिंह, कवि जनार्दन मिश्रा आदि ने संयुक्त रूप से किया। दूसरे दिन समारोह में माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक के छात्र-छात्राएं शामिल हुए। संचालन वरीय शिक्षक अरविंद ओझा, छात्र आलोक आतुल्य एवं छात्रा साक्षी राज ने किया। स्वागत गीत स्कूल की छात्र-छात्राओं द्वारा पेश किया गया। इस मौके पर अतिथियों द्वारा बच्चों द्वारा निर्मित कला एवं शिल्प प्रदर्शनी का स्वावलोकन किया गया। उद्घाटनकर्ता बिहार विधान परिषद के सभापति ने कहा कि यह वीरों की भूमि है एवं ज्ञान की स्थली है। यहां के विद्वानों की पकड़ वेद, पुराण और कुरान पर है, उन्होंने स्कूल के प्रति आभार जताते हुए कहा की संभावना ने पूरे बिहार में मान-सम्मान बढ़ाया है। मुख्य अतिथि पूर्व सह थल सेनाध्यक्ष लेफ्टिनेंट जनरल श्रीकृष्ण सिंह ने फौज की नौकरी और जिंदगी के बारे में जानकारी दी। कहा कि फौज की नौकरी एडवेंचर्स से भरी होती है। जो बच्चे नया करना चाहते हैं। चैलेंज स्वीकार करना चाहते हैं। अपने आप को प्रमाणित करना चाहते हैं। वे निश्चित रूप से फौजी बन सकते हैं। विशिष्ट अतिथि पूर्व प्राचार्य प्रो. डॉ. गांधी जी राय ने कहा कि जिस उद्देश्य से इस विद्यालय की स्थापना की गई। पूर्व कुलपति आचार्य धर्मेंद्र तिवारी ने कहा कि शिक्षा के लक्ष्य को प्राप्त करना ही संभावना है। कर्नल राणा प्रताप सिंह (सेनि) ने कहा कि बच्चे मोम की भांति होते हैं, जिस प्रकार ढालो वैसे ही ढल जाते हैं। इसके पूर्व स्वागत करते हुए प्राचार्या डॉ. अर्चना सिंह ने कहा कि युवा अपनी शक्ति को पहचाने और उसका सदुपयोग करें। एकाग्रता, कर्मठता और जीवंतता को ध्यान में रखकर बच्चे संस्कारवान और वीरवान बने। रजत जयंती समारोह के दूसरे दिन उद्घाटन के पहले भारत के पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह के असमायिक निधन पर शोक व्यक्त किया गया। इस दौरान दो मिनट का मौन रखकर दिवंगत प्रधानमंत्री की आत्मा की शांति हेतु प्रार्थना की गई। कार्यक्रम के दौरान अतिथियों को विद्यालय के निदेशक डॉ. कुमार द्विजेंद्र एवं प्राचार्या डॉ. अर्चना सिंह द्वारा प्रतीक चिन्ह एवं बुके देकर सम्मानित किया गया। तत्पश्चात विभिन्न विधाओं में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान पाने वाले बच्चों को प्रशस्ति-पत्र एवं मोमेंटो देकर पुरस्कृत किया गया। इस दौरान उपस्थित लोगों ने तालियां बजाकर बच्चों की हौसला अफजाई की। उपस्थित लोगों में डॉ. विजय गुप्ता, रेड क्रॉस की सचिव डॉ. विभा कुमारी, निर्मल कुमार सिंह, डॉ. दिनेश प्रसाद सिन्हा, प्राइवेट स्कूल एसोसिएशन के मिथिलेश कुमार, मनोज कुमार सिंह, आईएमए के अध्यक्ष राजेश कुमार सिंह, डॉ. के. के. सिंह, डॉ. मनीष तिवारी, अखिलानंद ओझा, अधिवक्ता तारकेश्वर ठाकुर, उप प्रचार्य ऋषिकेश ओझा, मुखिया संघ के अध्यक्ष हरेंद्र यादव, ददन सिंह, अविनाश कुमार (रिटायर डीएसपी) समेत अन्य लोग मौजूद थे।

झांसी की रानी नृत्य पेश कर बच्चों ने अभिनय का लोहा मनवाया

आरा। संभावना आवासीय उच्च विद्यालय का दो दिवसीय रजत जयंती समारोह-2024 शुक्रवार को धूमधाम से संपन्न हो गया। इस दौरान माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक वर्ग के छात्र-छात्राओं ने सांस्कृतिक कार्यक्रम के दौरान अपनी कलाकारी का लोहा मनवाया।

बच्चों की शानदार अभिनय और प्रस्तुति देख अभिभावक एवं अतिथिगण मंत्रमुग्ध हो गए। सर्वप्रथम स्वागत गीत रितिका सिंह, अनुप्रिया, अर्चना कुमारी, सौम्या सिंह, रिया, साक्षी सिंह, श्रेया, वेदिका सिंह, प्रियांशी कुमारी, ऋषि यादव, आशीष आनंद, अनुराग कुमार, विवेक राज, अभिराज, ओवैश ने प्रस्तुत किया। ग्रुप डांस हनुमान चालीसा को आंचल, निशि, कृतिका, आराध्या, अर्पिता, पूर्वी, सलोनी, सूची एवं आयुषी ने प्रस्तुत कर लोगों की खूब तालियां बटोरी। वहीं लाइव झूमर निमिया पतइया झर जाला... को मनीष यादव, तनु सिंह, खुशबू कुमारी, अनुष्का कुमारी, निशा कुमारी, शिजा मोजामिल, आयूषी चौबे, जिकरा उस्मानी, प्रियांशी, श्रद्धा, बिस्मा ने प्रस्तुत किया।

जनता दरबार मे चार सौ लोगों की समस्यायों का निस्तारण किया गया

डीएम ने पदाधिकारियों को प्राप्त आवेदनों की जांच कर प्रतिवेदन उपलब्ध कराने का निर्देश दिया

प्रातः किरण संवाददाता

गया। शुक्रवार को आयोजित जिला पदाधिकारी का जनता दरबार मे जिला पदाधिकारी गया डॉ० त्यागराजन एसएम ने सुबह 11 बजे से संध्या 04 बजे तक लगातार उपस्थित लगभग 400 से अधिक व्यक्तियों के मामले को गंभीरतापूर्वक सुनते हुए संबंधित पदाधिकारियों को प्राप्त आवेदनों को जांच यथाशीघ्र कराते हुए जांच प्रतिवेदन उपलब्ध कराने का निर्देश दिया है। आवेदकों के कई मामलों में जिला पदाधिकारी द्वारा जिले के वरीय पदाधिकारी यथा उप विकास आयुक्त, अपर समाहर्ता, अनुमंडल पदाधिकारी संबंधित प्रखंड के नामित जिला स्तरीय पदाधिकारी आदि द्वारा मामले को जांच करने का भी जिम्मा दिया गया है।प्रधानमंत्री आवास एवं मुख्यमंत्री आवास योजना से संबंधित आए मामलों को जिला पदाधिकारी ने उप विकास आयुक्त, डीआरडीए को संबंधित आवेदनों को यथाशीघ्र जांच करते हुए पात्रता रखने वाले व्यक्तियों को प्रधानमंत्री,मुख्यमंत्री आवास योजना का लाभ देने हेतु अग्रसर कार्य करने का निर्देश दिया है।कई व्यक्तियों ने भूमि विवाद, आपसी बटवारा, अतिक्रमण, जमीन संबंधी दिक्कते आदि से संबंधित आवेदन दिए हैं। उन सभी आवेदन के आलोक में जिला पदाधिकारी ने संबंधित अंचलाधिकारी एवं थानाध्यक्ष एवं अनुमंडल पदाधिकारी तथा अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी के अध्यक्षता में थाना स्तर एवं अनुमंडल स्तर पर हर शनिवार को आयोजित होने वाले जनता दरबार में दोनों पक्षों के व्यक्तियों को बुलाकर संबधित मामलों को प्राथमिकता देते हुए निराकरण कराने का निर्देश दिए हैं। जमीन से संबंधित अत्यधिक मामले को देखते हुए जिला पदाधिकारी ने आए आवेदनों को सभी भूमि सुधार उप समाहर्ता को निर्देश दिया कि अच्छे तरीके से आए आवेदनों को जांच करते हुए संबंधित अधिकारियों द्वारा नियमानुसार उचित कार्रवाई करने हेतु आदेशित करें। इसके साथ ही प्राप्त कई आवेदनों के विरुद्ध वरीय पदाधिकारी नामित कर जांच हेतु निर्देशित किया है। इसके साथ ही जांच पदाधिकारी को निर्देश दिया है कि प्राप्त आवेदन को अधिकतम सात दिनों में जांच करते हुए दोषी कर्मी,पदाधिकारी के विरुद्ध कार्रवाई हेतु प्रेषित करे।कई व्यक्ति परिमार्जन के संबंध में आवेदन दिए जिसपर जिला पदाधिकारी ने संबंधित अंचलाधिकारी एवं राजस्व पदाधिकारी को सख्त निर्देश दिया कि परिमार्जन हेतु लंबित आवेदनों को तेजी से निष्पादन करें। जमीन से संबंधित आये मामलों में डीएम ने सभी अंचलाधिकारी को कहा कि ये आम जनता ज्यादातर गाँव के ही होते हैं और किसान होते है, इन्हें सरकारी कागजी प्रक्रिया के बारे में हर तरह से मदद करे। जरूरत पड़े तो ग्रामीणों की जो उनकी समस्या है, उसके आलोक में उन्हें आवेदन लिखवाने में मदद करे, किसी को बेवजह दौड़ना न पड़े इसका पूरा ख्याल रखें। मुख्यमंत्री पारिवारिक लाभ योजना संबंधित वंचित आवेदक आये देख, डीएम ने अपर समाहर्ता राजस्व को निर्देश दिया है कि आवेदनों को जांच करते हुए पात्रता रखने वाले आवेदकों को मुख्यमंत्री पारिवारिक लाभ योजना का लाभ दिलवाए। वजीरगंज अंचल से आये लोगो ने बताया कि जमावन्दी सुधारने में देरी हो रही है।डीएम ने अंचलाधिकारी वजीरगंज को निर्देश दिया कि लंबित आवेदनों को तेजी से समाप्त करवाये।

कुजाप से आये आवेदक ने बताया कि फर्जी आधार कार्ड बनाकर जमीन रजिस्ट्री करवाया जा रहा है।डीएम ने अंचलाधिकारी नगर को निर्देश दिया कि प्राप्त आवेदन को पूरी गहनता से जांच करे एव गडबडी रहने पर प्राथमिकी दर्ज करें।

पत्रकारों की लेखनी में समाज को बदलने की ताकत होती है: विकास कुमार माली

प्रातः किरण संवाददाता

गया। झारखंड जर्नलिस्ट एसोसिएशन के प्रदेश स्तरीय सम्मेलन सह कार्यशाला का आयोजन जिला मुख्यालय से 12 किलोमीटर दूर अन्नराज डैम के पास किया गया है। इस कार्यक्रम में प्रदेश के वरिष्ठ पत्रकार, प्रशासनिक अधिकारी, और मीडिया से जुड़े अन्य लोग शामिल हुए हैं। सम्मेलन का मुख्य विषय सामाजिक विकास में मीडिया की भूमिका रहा, जिसमें वक्ताओं ने पत्रकारिता के विभिन्न पहलुओं पर गहन चर्चा की गई है। इस कार्यक्रम की शुरूआत झारखंड जर्नलिस्ट एसोसिएशन के प्रदेश अध्यक्ष अमरकांत के स्वागत भाषण से हुई। उन्होंने कहा कि पत्रकारिता केवल खबरों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह समाज को दिशा देने और सकारात्मक बदलाव लाने का माध्यम भी है। उन्होंने पत्रकारों को उनकी जिम्मेदारियों की याद दिलाते हुए कहा कि लेखनी के माध्यम से समाज में बदलाव संभव है।प्रदेश अध्यक्ष ने कहा, पत्रकार समाज का दर्पण होता है। आज भी कई पत्रकार ईमानदारी और कर्तव्यनिष्ठा से अपना काम कर रहे हैं। हमें अपने लेखन में सच्चाई और समाज हित को प्राथमिकता देनी चाहिए। उन्होंने पत्रकारों से अपील की कि वे अपनी भूमिका को और अधिक प्रभावी बनाएं।

मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित एसडीएम संजय कुमार ने पत्रकारों को संबोधित करते हुए कहा, मीडिया समाज में सभी प्रकार के विकास कार्यों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।कठिन परिस्थितियों में भी पत्रकार सच्चाई को सामने लाते हैं, जो समाज के विकास में सहायक होता है।

उन्होंने अपने पत्रकारिता के दिनों को याद करते हुए कहा कि पत्रकारों की चुनौतियों को वे भलीभांति समझते हैं। उन्होंने पत्रकारों को निडर होकर अपना काम करने की प्रेरणा दी है।

संगठन के प्रदेश उपाध्यक्ष कुमार कौशलेंद्र ने पत्रकारों को अधिक पढ़ाई करने और नए विषयों की जानकारी हासिल करने पर जोर दिया है। उन्होंने कहा, पढ़ाई पत्रकार को न केवल ज्ञानवान बनाती है, बल्कि उसे अपनी लेखनी में गहराई और मजबूती प्रदान करती है। विशिष्ट अतिथि विकास माली ने कहा, पत्रकारों की लेखनी में समाज को बदलने की ताकत होती है। आपकी जिम्मेदारी केवल खबरें देना नहीं है, बल्कि समाज को सही दिशा में ले जाना भी है। उन्होंने पत्रकारों को प्रोत्साहित किया कि वे समाज के विकास में अपनी भूमिका को और अधिक प्रभावी बनाएं।

इस कार्यक्रम में संगठन के कई पदाधिकारी, सदस्य और स्थानीय पत्रकार मौजूद थे।सभी ने इस आयोजन की सराहना की और इसे पत्रकारिता के विकास के लिए महत्वपूर्ण बताया है। सम्मेलन का समापन धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ है।यह सम्मेलन पत्रकारिता के महत्व और इसके समाज पर प्रभाव को रेखांकित करता है। वक्ताओं ने मीडिया को एक ऐसा माध्यम बताया, जो न केवल समाज को जागरूक करता है, बल्कि उसकी दिशा भी तय करता है।

नैतिक मूल्यों को धारण करते हुए किसी ध्येय की प्राप्ति ही धर्म है: कुलपति, प्रो.केएन सिंह

प्रातः किरण संवाददाता

गया।दक्षिण बिहार केन्द्रीय विश्विद्यालय सीयूएसबी के ऐतिहासिक अध्ययन एवं पुरातत्व विभाग एवं राष्ट्रीय सेवा योजना एनएसएस द्वारा संयुक्त रूप से वीर बाल दिवस आयोजित किया गया है।इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में कुलपति प्रोफेसर कामेश्वर नाथ सिंह ने उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए साहबजादे फतेह सिंह एवं साहबजादे जोरावर सिंह के सर्वोच्च बलिदान के महत्व को रेखांकित किया है ।उन्होंने कहा कि ह्लनैतिक मूल्यों को धारण करते हुए किसी ध्येय की प्राप्ति ही धर्म हैह्व ।साहबजादों के बलिदान को इन्हीं धर्म और मूल्यों की रक्षा के संदर्भ में देखा जाना चाहिये, आगे कुलपति ने जोर देकर कहा कि बच्चों में इस तरह के नैतिक साहस पारिवारिक शिक्षा से ही आ सकता है। उन्होंने अपने संबोधन में जीवन दृष्टि, नैतिक मूल्य, कुटुम्ब-प्रबोधन, शिक्षा और त्याग के बारे में विस्तार से बातें कहीं हैं इस कार्यक्रम की शुरूआत शहीद साहबजादों के चित्रों पर पुष्पांजलि के साथ हुई है स्वागत-संबोधन एवं विषय प्रवेश करते हुए इतिहास विभाग के सह-प्राध्यापक डॉ. प्रीति अनिल खांदारे ने इस शहादत से प्रेरणा लेते हुए आगे बढ़ने का आह्वाहन किया है धन्यवाद ज्ञापन राष्ट्रीय सेवा योजना के कार्यक्रम अधिकारी डॉ. पारिजात प्रधान के द्वारा किया गया है इस अवसर पर प्रो. रविकांत, प्रो. रामाशीष यादव, डॉ. हेमंत कुमार, डॉ. मंगलेश कुमार मंगलम, डॉ. प्रिय रंजन, डॉ. तरुण कुमार त्यागी, डॉ. प्रज्ञा गुप्ता एवं डॉ. जितेंद्र सिंह सहित अनेक शिक्षक, शोधार्थी, एवं छात्र-छात्राएं उपस्थित थे मंच का संचालन शोधार्थी नितीश कुमार हलचल एवं अमृत राज के द्वारा किया गया हू ।

अजमेर शरीफ की दरगाह पर चढ़ेगी औरंगाबाद में बनी तिरंगे वाली चादर

प्रातः किरण संवाददाता

औरंगाबाद। अजमेर स्थित ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती की दरगाह पर उनके उर्स के मौके पर औरंगाबादमें बनी तिरंगे वाली चादर चढ़ाई जाएगी। शुक्रवार को जुम्मे की नमाज के बाद शहर के पठान टोली मस्जिद हजरत मखदूम शाह बाबा के आस्ताने पर तिरंगे वाली चादर की जियारत कराई गई।कहते हैं की ख्वाजा के दरबार जो आता है कभी खाली हाथ नही जाता है। अजमेर शरीफ के दरगाह में जाने पर एक रूहानी सुकून मिलता है। इस दरगाह में क्या बड़ा छोटा-बड़ा ,आमिर-गरीब सभी अपनी मुरादों को पूरी करने के लिए बड़ी उम्मीदों से यहाँ पर आते है। अजमेर शरीफ दरगाह का भारत में बड़ा महत्व है। खास बात यह भी है कि ख्वाजा पर हर धर्म के लोगों का विश्वास है।इस अजीम चादर की जियारत करने को यहां काफी अकीदतमंद जुटे और दुआख्वानी की। बता दें कि ख्वाजा गरीब नवाज का उर्स 8 जनवरी 2025 को है 5 जनवरी को अकीदतमंदों का जत्था इस चादर को लेकर 5 जनवरी कीशाम रवाना होंगे।

पैगाम ए इंसानियत के अध्यक्ष मो शहनवाज रहमान उर्फ सल्लू खान पठान टोली मस्जिद इमाम गुलाम रसूल कादरी जामा मस्जिद के सचिव नगर परिषद के पूर्व अध्यक्ष रईस आजम खान मस्जिद सचिव सैयद सोनू राहुल कुमार अभिषेक कुमार सिंह प्रकाश कुमार सिंह सदर टिक्का खान एहतेशाम खान शहनवाज आलम गोहर अली खान ने बताया कि 24 साल से यहां से अकीदतमंद चादर चढ़ाने अजमेर शरीफ जाते हैं।

मुकुंद नारायण सिंह की 20 वीं पुण्यतिथि पर जरूरतमंदों के बीच किया गय वस्त्र का वितरण

औरंगाबाद। सदर प्रखंड स्थित ग्राम भरथौली के समीप हवेली रिजॉर्ट के प्रांगण में भरथौली निवासी स्वर्गीय मुकुंद नारायण सिंह जी की 20वीं पुण्यतिथि के अवसर पर श्रद्धांजलि सभा आयोजित किया गया एवं जरूरतमंदों के बीच ऊनी वस्त्र का वितरण किया गया। साथ ही साथ उन्हें जलपान भी कराया गया।मंजीत सिंह की अध्यक्षता में आयोजित श्रद्धांजलि सभा में उपस्थित लोगों ने सर्वप्रथम उनके तैल चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित किया।मौके पर पृथ्वीराज चौहान चैरिटेबल ट्रस्ट के अध्यक्ष राघवेंद्र प्रताप नारायण सिंह,उपाध्यक्ष डॉ संजीव रंजन,कोषाध्यक्ष आदि थे।

भारत के आर्थिक सुधारों के प्रणेता, पूर्व पीएम डॉ मनमोहन सिंह के निधन पर सम्पूर्ण भारतवासी मर्माहत एवं शोकाकुल: कॉग्रेस

प्रातः किरण संवाददाता

गया ।भारत के आर्थिक सुधारों के प्रणेता, पूर्व प्रधानमंत्री, अति साधारण व्यक्तित्व के प्रतिमूर्ति डॉ मनमोहन सिंह के निधन पर गया जिला कॉग्रेस कमिटी के तत्वावधान में स्थानीय कॉग्रेस कार्यालय राजेंद्र आश्रम में विशाल श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया है। सर्वप्रथम स्व डॉ मनमोहन सिंह के चित्र पर माल्यार्पण एवं पुष्पांजलि के पाश्चात्य एक मिनट का मौन रख कर ईश्वर से प्रार्थना किया कि इनके पुण्य आत्मा को अपने चरण श्री में स्थान दें। श्रद्धांजलि सभा की अध्यक्षता गया जिला कॉग्रेस कमिटी के अध्यक्ष डॉ गगन कुमार मिश्रा ने किया है।

श्रद्धांजलि सभा में शामिल बिहार सरकार के पूर्व मंत्री अवधेश कुमार सिंह, बिहार प्रदेश कॉग्रेस कमिटी के प्रदेश प्रतिनिधि सह प्रवक्ता प्रो विजय कुमार मिट्ठू, पूर्व विधायक मोहम्मद खान अली, डॉ दिवाकर सरायर, पूर्व जिला अध्यक्ष चंद्रिका प्रसाद यादव, जिला उपाध्यक्ष बाबूलाल प्रसाद सिंह, राम प्रमोद सिंह, दामोदर गोस्वामी, देविका सरयार मिश्रा, शिव कुमार चौरसिया, युगल किशोर सिंह, विद्या शर्मा, भुवन राम, राम सेवक कुशवाहा, अजय कुमार सिंह, प्रदीप शर्मा, शैलेश चौधरी, शशि कांत सिन्हा, विपिन बिहारी सिन्हा, नंदु चंद्रवंशी ,धर्मेंद्र कुमार निराला,शशिकांत सिन्हा,श्रीकांत शर्मा,कुमार ओंकार शक्ति, बृजेश राय, लालसा देवी, नवाब अली, रणजीत कुमार सिंह, मदीना खातून, मोहम्मद अजहरुद्दीन, मोहम्मद ताज उद्दीन, विकास यादव, जितेंद्र यादव,शिवनाथ प्रसाद आदि ने कहा कि सन 1991 में देश के लिए अर्थिक उदारीकरण, चहुंमुखी विकास के उनके द्वारा खोले गए रास्ते पर आज मंजिले दौड़ रही है, भारत आज विश्व के प्रमुख विकसित देशों की शृंखला में है।

नेताओ ने कहा कि इनकी विद्वता, सज्जनता, सरलता, सर्वहारा स्वभाव, ईमानदारी, व्यक्तित्व भारत की जनमानस हमेशा याद रखेगी। नेताओ ने कहा कि इनके प्रधानमंत्री काल में सूचना का अधिकार, भोजन का अधिकार, रोजगार का अधिकार, शिक्षा का अधिकार देकर देश के 140 करोड़ महान जनता के लिए संजीवनी का काम कर रहा है।बिहार के लिए ग्रामीण सड़क निर्माण के लिए उन्होंने 12 हजार करोड़ रुपए दिए जिससे बिहार के गांव में सड़कों का जाल बिछा दिया गया था।उन्होंने राजीव गांधी विद्युत योजना के तहत गांव गांव तक बिली पहुंचाने का काम किया है।बिहार में दो दो केंद्रीय विश्वविद्यालय की स्थापना उनकी सरकार के दौरान हीं हुआ है। नेताओ ने कहा कि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस लगातार सात दिनों तक राष्ट्रीय शोक घोषित करते हुए सभी कार्यक्रमों को रद्द कर दिया है। नेताओ ने कहा कि इनके निधन पर देशभर के सभी राजनीतिक दलों के नेता, कार्यकर्ता, सामाजिक संगठन, किसान मजदूर संगठन, आमजन इस महापुरुष को श्रद्धांजलि अर्पित कर रहे हैं।

मंडल अध्यक्षों के मनोनयन पर पूर्व सांसद ने दी शुभकामनाएँ

प्रातः किरण संवाददाता

औरंगाबाद। भाजपा के पूर्व सांसद सुशील कुमार सिंह ने संगठन महामंत्री भीखूभाई दलसानिया, प्रदेश अध्यक्ष डॉ.दिलीप जायसवाल, भाजपा के पूर्व राष्ट्रीय मंत्री सह जिला चुनाव अधिकारी रजनीश कुमार के निदेर्शानुसार भारतीय जनता पार्टी के नव नियुक्त 31 मंडल अध्यक्षों को मनोनयन होने पर हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ दी है पूर्व सांसद ने कहा कि इस सूची में युवाओं,महिलाओं और भाजपा के समर्पित कार्यकताओं एवं समाज के विभिन्न वर्गों के लोगो को शामिल किया गया है सभी नए मंडल अध्यक्षों को संगठन को मजबूत करने और जनहित के मुद्दों को प्राथमिकता देने का आह्वान किया है।

सभी लोग जनसमस्याओं को उठाकर सरकार का ध्यान आकर्षित करना और उनकी समस्याओं को पुरा करना प्रमुख जिम्मेदारी होगी।इन सभी लोगों को मनोनयन होने पर भाजपा के जिलाध्यक्ष मुकेश शर्मा,जिला उपाध्यक्ष सिद्धनाथ मिश्रा,जुलेखा खातून,सारिका शेखर,जिला महामंत्री मुकेश सिंह,रविशंकर शर्मा,संजय गुप्ता,जिला मंत्री धर्मेन्द्र शर्मा,संगीता प्रसाद,शिवपूजन राम,रेखा पासवान,जिला कोषाध्यक्ष आलोक सिंह,जिला मीडिया प्रभारी मितेन्द्र कुमार सिंह,जिला प्रवक्ता अश्विनी तिवारी,किसान मोर्चा जिलाध्यक्ष विनय सिंह,महिला मोर्चा जिलाध्यक्ष अनिता सिंह,अतिपिछड़ा वर्ग मोर्चा अध्यक्ष बिनोद चन्द्रवंशी,अनुसूचित जाति मोर्चा अध्यक्ष रामेश्वर बैठा,अल्पसंख्यक मोर्चा अध्यक्ष औरंगजेब खान,प्रदेश कार्यसमिति सदस्य एवं जिला कार्यसमिति सदस्य,एवं भारतीय जनता पार्टी के सभी कार्यकताओं ने हर्ष ब्यक्त किया है।

बीजेपी कार्यकर्ताओं ने पूर्व पीएम के निधन पर जताया शोक

औरंगाबाद। देश में आर्थिक सुधार के जनक पूर्व प्रधानमंत्री श्रद्धेय डॉ. मनमोहन सिंह के निधन पर भाजपा कार्यकताओं ने शोक जताया है। शोक व्यक्त करते हुए औरंगाबाद भाजपा के पूर्व जिला अध्यक्ष पुरुषोत्तम कुमार सिंह ने कहा कि डॉ मनमोहन सिंह देश में आर्थिक सुधार के जनक थें। सौम्य एवं शालीनता के प्रतीक थे आर्थिक सुधार में उनका योगदान महत्वपूर्ण था वे अर्थव्यवस्था के सूचक तथा दूरदर्शित नेता थे .राष्ट्र निर्माण में उनका महान योगदान रहा है वे समावेशी राजनीतिक के पोषक थे उनका निधन से देश एक महान जननेता खो दिया। शोक व्यक्त करने वाले में भाजपा नेता इंद्रदेव यादव अनिल सिंह विजय प्रसाद निराला दीपक कुमार वीरेंद्र कुमार सिंह रघुनाथ राम मधेश्वर चंद्रवंशी राम रूप सिंह चंदन कुमार अरविंद सिंह सुनील कुमार सिंह बिकास कुमार सहीत अन्य लोग शामिल है।

कुर्था पुलिस ने एक शराबी को किया गिरफ्तार

कुर्था (अरवल) पुलिस अधीक्षक राजेंद्र कुमार भील के निर्देश पर अवैध शराब कारोबारी एवं शराबियों के खिलाफ चलाए जा रहे छापेमारी अभियान के तहत शुक्रवार को कुर्था थाने की पुलिस ने थाना क्षेत्र के विभिन्न गांव में सघन छापेमारी अभियान चलाई इस दौरान थाना क्षेत्र के कंसुआ गांव निवासी राकेश कुमार को गिरफ्तार किया इस बाबत कुर्था थानाध्यक्ष सुरेंद्र कुमार ने बताया कि जहानाबाद जिले के शकूराबाद थाना अंतर्गत कंसुआ गांव निवासी सत्येंद्र यादव के पुत्र राकेश कुमार को शराब के नशे में गिरफ्तार किया गया जिसे उत्पाद अधिनियम के तहत न्यायालय भेजी गई छापेमारी अभियान में थानाध्यक्ष के अलाबे कई पुलिसकर्मी शामिल थे।

पूर्व प्रधानमंत्री के निधन पर विद्यालयों में किया गया शोक सभा का आयोजन

कुर्था (अरवल)। भारत के पूर्व प्रधानमंत्री व बेहतर अर्थशास्त्री डॉ0 मनमोहन सिंह के निधन पर शुक्रवार को प्रखंड क्षेत्र के विभिन्न सरकारी वगैर सरकारी विद्यालयों में शिक्षक व स्कूली बच्चों द्वारा लोकसभा का आयोजन किया गया वहीं कुर्था राजकीय कृत मध्य विद्यालय में भी स्कूली बच्चों ने शोक सभा की इसके बाद विद्यालय के बच्चों को छुट्टी दे दी गई शोक सभा में विद्यालय के प्राचार्य डॉ रामजी ठाकुर ने कहा कि पूर्व प्रधानमंत्री डॉ मनमोहन सिंह देश के प्रधानमंत्री के साथ-साथ बेहतर अर्थशास्त्री भी थे उनका निधन मानो देश के लिए एक अपूरणीय क्षति है जिसे निकट भविष्य में पूरा नहीं किया जा सकता है उन्होंने कहा कि मनमोहन सिंह 10 वर्षों तक भारत के प्रधानमंत्री रहे थे और अपने कार्यकाल के दौरान कई महत्वाकांक्षी योजनाओं को धरातल पर उतरने का कार्य किया था उन्होंने कहा कि उनका निधन की खबर सुनते ही मानो पूरे देश में शोक की लहर दौड़ गया हालांकि उक्त विद्यालय में शोक सभा आयोजित कर बच्चों को एक दिन का अवकाश दे दिया गया हालांकि कहीं निजी विद्यालयों में भी शोकसभा आयोजित की गई डीपीएस स्कूल कुर्था में विद्यालय के प्रधानाचार्य धीरेंद्र मिश्रा के द्वारा भी शोक सभा आयोजित कर पूर्व प्रधानमंत्री डॉ मनमोहन सिंह को श्रद्धांजलि दी गई।

बिहटा अरवल औरंगाबाद रेलवे संघर्ष समिति फिर से होगा आंदोलन तेज :मनोज यादव

बिहटा अरवल औरंगाबाद रेलवे लाइन संघर्ष समिति द्वारा लगातार 10 वर्षो से जन आंदोलन जारी है । आंदोलन के बदौलत कार्य योजना में पूर्ण स्वीकृति मिली है लेकिन अभी तक कार्य शिथिल के बराबर है फिर से आंदोलन तेज करने के लिए अरवल ब्लॉक प्रांगण में बैठक करने के बाद मुख्य संयोजक मनोज सिंह यादव ने बताया कि 5 जनवरी 2025 से विशेष प्रधानमंत्री के नाम से हस्ताक्षर अभियान चलाया जाएगा साथ ही रेल मंत्री को हस्ताक्षर अभियान का कॉपी भेजा जाएगा 16 जनवरी 2025 से औरंगाबाद रमेश चौक से रेल लाओ जन आंदोलन के तहत पदयात्रा का प्रारंभ किया जाएगा जो 155 किलोमीटर हाजीपुर जोनल कार्यालय तक जाएगा ।रेलवे संघर्ष समिति के मुख्य संयोजक मनोज सिंह यादव के अलावा अखिलेश कुमार राजनीति यादव मंटू यादव प्रोफेसर शिवकुमार चंद्रवंशी धनंजय यादव उपेंद्र कुमार जयप्रकाश सिंह बिंदेश्वरी सिंह एवं दर्जनों लोग बैठक में शामिल रहे।

बेलागंज विधानसभा के तीन मंडलों के भाजपा अध्यक्षों की हुई धोषणा

प्रातः किरण संवाददाता

गया ।भारतीय जनता पार्टी बेलागंज विधानसभा के तीन मंडलों की नई घोषणा के साथ ही संगठन ने अपनी मजबूती और एकजुटता की दिशा में एक और कदम बढ़ाया है। चंदोती दक्षिणी से धर्मेंद्र गुप्ता, चंदोती उत्तरी से इंजीनियर अमित पासवान और बेलागंज पश्चिमी से दिलीप कुमार को मंडल अध्यक्ष के रूप में जिम्मेदारी सौंपी गई है। इन सभी नए मंडल अध्यक्षों को बधाई और शुभकामनाएँ देते हुए भाजपा जिला उपाध्यक्ष सह बेलागंज विधानसभा प्रभारी राजेंद्र प्रसाद अधिवक्ता ने भव्य स्वागत किया है।इस अवसर पर भाजपा के वरिष्ठ नेता मुकेश कुमार अधिवक्ता भाजपा जिला उपाध्यक्ष राजेंद्र प्रसाद अधिवक्ता आयोजित कार्यक्रम मेंसभी नव-नियुक्त मंडल अध्यक्षों को अंग वस्त्र, माला और फूल देकर सम्मानित किया। उन्होंने कहा कि संगठन की मजबूती के लिए मंडल अध्यक्षों की भूमिका बेहद महत्वपूर्ण होती है। पार्टी के सिद्धांतों और विचारधारा को जन-जन तक पहुँचाने के साथ-साथ संगठन को जमीनी स्तर पर मजबूत करने की जिम्मेदारी अब इन नव-नियुक्त अध्यक्षों पर है।

सभी मंडल अध्यक्षों से अपील की कि वे संगठन के उद्देश्यों को समर्पित भाव से आगे बढ़ाएं और समाज के हर वर्ग तक पार्टी की योजनाओं और नीतियों को पहुँचाएं। उन्होंने विश्वास जताया कि धर्मेंद्र गुप्ता, इंजीनियर अमित पासवान और दिलीप कुमार अपनी-अपनी भूमिकाओं में बेहतरीन कार्य करेंगे और पार्टी को नई ऊँचाइयों तक ले जाएँगे।कार्यक्रम में पार्टी के वरिष्ठ नेता मुकेश कुमार अधिवक्ता ने तो हमारा लगता अन्य वरिष्ठ नेता, कार्यकर्ता और क्षेत्र के सम्मानित नागरिक भी उपस्थित थे। अशोक प्रसाद भारती के द्वारा सभी ने नए मंडल अध्यक्षों को बधाई दी और संगठन के प्रति अपने समर्थन का आश्वासन दिया है। इस कार्यक्रम ने पार्टी कार्यकताओं में नई ऊर्जा और उत्साह का संचार किया है।

आज के कार्यक्रम में मनोज प्रसाद प्रखंड प्रमुख पूर्व अध्यक्ष प्रदेश मीडिया प्रभारी अशोक प्रसाद भारती सिया शरण सिंह दीपक कुमार दयानंद चंद्रवंशी शशि भूषण सिंह नरेंद्र सिंह दुर्गा प्रसाद वर्मा मनीष सिंह मुकेश कुमार अरुण कुमार प्रियदर्शी टूना कुमार रवीश कुमार चंदन कुमार धर्मपाल सिंह कुंदन कुमार सोनू मोदी संजय कुमार गोस्वामी लखींद्र मांझी सुनील कुमार यादव पवन सिंह आदि उपस्थित हुए हैं।

सेवा और समर्पण के साथ मनाया जाएगा सचिव विकास कुमार माली का जन्मोत्सव

गया ।कन्या विवाह एंड विकास सोसाइटी के सचिव विकास कुमार माली ने अपने जन्मदिवस को समाजसेवा का प्रतीक बनाते हुए इसे खास तरीके से मनाया जाएगा। इस अवसर पर संस्था की ओर से कई सामाजिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाएगा। जिसमें आम लोगों और जरूरतमंदों को मदद पहुंचाने का प्रयास किया जाएगा।सदर अस्पताल में मरीजों के बीच किया जाएगा। फल वितरण जहां भर्ती मरीजों के बीच फल, ब्रेड और दूध का वितरण किया गया है।सचिव विकास कुमार माली ने कहा कि मरीजों की सेवा करना और उनकी जरूरतों का ख्याल रखना सबसे बड़ा धर्म है।इसके बाद संस्था के कार्यालय में एक विशाल रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया है। इस शिविर में सचिव विकास कुमार माली और संस्था के अन्य सदस्यों के द्वारा 101 यूनिट रक्तदान किया जाएगा। इस पहल ने समाज में रक्तदान के प्रति जागरूकता बढ़ाने और जरूरतमंद मरीजों को मदद पहुंचाने का संदेश दिया है। विकास कुमार माली ने अपने संबोधन में कहा कि उनकी संस्था का मुख्य उद्देश्य समाज की सेवा करना है।उन्होंने बताया कि संस्था गरीब परिवार की बेटियों की शादी करवाने, दहेज प्रथा, बाल विवाह और भ्रूण हत्या जैसी सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ काम करती है।उन्होंने आगे कहा, ह्लमैं अपने जन्मदिवस पर हमेशा समाजसेवा के कार्य करता हूं। इससे मुझे गर्व और आत्मसंतुष्टि मिलती है। अन्य लोग भी अपने जन्मदिवस और खास मौकों को समाज की सेवा के लिए समर्पित करें। इससे समाज में सकारात्मक बदलाव लाने में मदद मिलेगी। इस कार्यक्रम में शामिल लोगों और संस्था के सदस्यों ने विकास कुमार माली की इस पहल की सराहना की। उन्होंने कहा कि यह कदम समाज में एक मिसाल कायम करता है। संस्था के सामाजिक कार्यों की चर्चा कन्या विवाह एंड विकास सोसाइटी ने पहले भी कई जरूरतमंद परिवारों की मदद की है और समाज में बदलाव लाने की दिशा में काम किया है। संस्था द्वारा किए गए कार्यों को लेकर स्थानीय लोगों में काफी प्रशंसा है।

पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह के निधन पर मेयर व कांग्रेस नेता मोहन श्रीवास्तव ने जताया शोक

प्रातः किरण संवाददाता

गया। देश के पूर्व प्रधानमंत्री एवं दिग्गज कांग्रेस नेता डॉ. मनमोहन सिंह का 92 वर्ष की उम्र में निधन हो गया है। दिल्ली एम्स में इलाज के दौरान गुरुवार देर शाम उन्होंने आखिरी सांसें ली है। मनमोहन सिंह के जाने से गया नगर निगम के मेयर वीरेंद्र कुमार उर्फ गणेश पासवान, कांग्रेस नेता सह स्टैंडिंग कमेटी के सदस्य अखौरी ओंकार नाथ उर्फ मोहन श्रीवास्तव ने शोक प्रकट किया है।

मेयर गणेश पासवान ने कहा कि इतिहास आपके योगदान से सदैव परिपूर्ण रहेगा। एक महान राष्ट्र कर्मी आज जीवन के अंतिम सफर पर हम सबसे विदा हो गए हैं। उनके व्यक्तित्व, योगदान और देशसेवा के लिए शब्द कम हैं। पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह जी का निधन बड़ी क्षति है। ईश्वर उनकी आत्मा को शांति दें। कांग्रेस नेता मोहन श्रीवास्तव ने कहा कि दुनिया के महान अर्थशास्त्री, भारत में आर्थिक सुधारों के पुरोधा और अपने काम के जरिये देश को प्रगति पथ पर आगे बढ़ाकर दुनिया भर में अलग पहचान दिलाने वाले पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह के निधन की खबर से मन व्यथित है। उनके जाने से राजनीतिक जगत को अपूरणीय क्षति हुई है, जो निकटतम भविष्य में भर पाना बेहद मुश्किल है। दिवंगत आत्मा को भावभीनी श्रद्धांजलि, परिवारजनों व समर्थकों के प्रति गहरी संवेदनाएं।

सांसद ने डीएम से मिलकर केंद्र व राज्य सरकार की विकास योजनाओं को लेकर चर्चा की

गया ।भाजपा नेता एवं नवादा सांसद विवेक ठाकुर ने शेखपुरा समाहरणालय में जिलाधिकारी आरिफ अहसन से मुलाकात कर नवादा संसदीय क्षेत्र अंतर्गत बरबीघा विधानसभा में केंद्र व राज्य सरकार की विकास योजनाओं को लेकर समीक्षात्मक बैठक किया है। इसके साथ ही सांसद ने मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की वहां होने वाली प्रगति यात्रा के दौरान कार्यक्रम को लेकर भी जिलाधिकारी से चर्चा किया है।

भाजपा का विधानसभा स्तरीय मंडल अध्यक्ष का हुआ स्वागत

शेरघाटी। शहर के नया बाजार स्थित एक होटल में शुक्रवार को विधानसभा स्तरीय नव नियुक्त मंडल अध्यक्ष का किया गया स्वागत समारोह उक्त दैरान शेरघाटी, डोभी एवं आमस के लोग शामिल थे, कार्यक्रम के अध्यक्षता जिला अध्यक्ष प्रेम प्रकाश उर्फ चिंटू सिंह के द्वारा किया गया।

मंच का संचालन शेरघाटी विधानसभा प्रभारी अजीत कुमार मिश्रा ने किया। उक्त दौरान जिला अध्यक्ष प्रेम प्रकाश ने सभी नवनियुक्त मंडल अध्यक्ष को माला पहनाकर व अंगवस्त्र देकर सम्मानित किया गया, शेरघाटी नगर से राधेश्याम सिंह, ग्रामीण रवि कुमार सिंह, डोभी उत्तरी से अभ्यास कुमार चंद्रवंशी,दक्षिणी सुमन चतुर्वेदी, आमस पूर्वी से माधुरी जायसवाल तथा पश्चिम से कुंदन कुमार सिंह को माला एवं अंगवस्त्र पहनाकर अभिनंदन किया। जिला अध्यक्ष ने सभी को मनोनीत किया गया है।

दस माह बीत जाने के बाद भी नहीं शुरू हुआ पुल का निर्माण कार्य, डहरा धार में दो करोड़ की लागत से बनना है पुल

प्रातः किरण संवाददाता

उदाकिशुनगंज (मधेपुरा)। हाल की महीनों में पुल को लेकर सरकार की काफी किरकरी हुई। कही निर्माणधीन तो कहीं नव निर्मित पुल धाराशाई हो गई। उसके बाद सरकार ने व्यापक स्तर पर हर विभाग से पुल को लेकर रिपोर्ट मंगवाई। जांच के बाद सरकार को पुल की स्थिति के बारे में जानकारी प्राप्त हुआ। उसके बाद पुल को लेकर सजग हुई। जहा जर्जर पुल को लेकर व्यवस्था अब भी गंभीर नहीं है। वजह कि उदाकिशुनगंज प्रखंड के छर्रापट्टी गांव के समीप डहरा धार का पुल काफी पुराना है। पुल की जर्जरता बड़े हादसे का गवाह बन सकता है। यह पुल उदाकिशुनगंज पश्चिमी क्षेत्र के लोगों के लिए लाइफ लाइन माना जाता है। पुल प्रखंड क्षेत्र के अलावा खगड़िया जिले को भी जोड़ती है। हालांकि पुल निर्माण का कायार्देश भी जारी हुआ। पीएमजेएसवाई योजना अंतर्गत पुल का निर्माण होना है। इसके लिए ग्रामीण कार्य विभाग द्वारा सारी प्रक्रिया पूरी कर ली गई है। योजना का टेंडर भी हो गया। कार्यस्थल पर प्राक्कलन से संबंधित बोर्ड भी लगा हुआ। कार्य प्रारंभ की तिथि पांच फरवरी 2024 और कार्य समाप्ति की तिथि चार फरवरी 2025 है। यूं कहें कि कार्य प्रारंभ हुआ होता तो यह पुल फरवरी 2025 में बनकर तैयार हो जाता है। लेकिन विभागीय अधिकारी के मिलि भगत से संवेदक ने अब तक कार्य आरंभ नहीं किया है। जबकि कार्य प्रारंभ की तिथि को दस माह होना बीत गया है। इसमें विभाग और संवेदक की साफ मिलि भगत दिख रहा है। लोग पुल नहीं बनने से तरह तरह सवाल उठा रहे हैं। लोगों के मन में है कि विभाग ने राशि उठाव कर लिया है। कहीं कागज पर ही पुल निर्माण करके न छोड़ दें। इसमें योजना का नाम भवानंदपुर छर्रापट्टी पुल दिया गया है। जिसमें पांच वर्ष तक मेंटेनेंस कार्य भी शामिल हैं। करीब दो करोड़ एक लाख दो सौ छियासी रूपया की लागत से पुल का निर्माण होना है। कार्य राजा सिंह नाम संवेदक को आवंटित किया गया है। लेकिन संवेदक द्वारा दस माह बीत जाने के बाद भी कार्य शुरू नहीं किए जाने से लोगों में आक्रोश है।

ईंट मारकर सिर फोड़ने के आरोप में हुआ केस दर्ज

प्रातः किरण संवाददाता

उदाकिशुनगंज (मधेपुरा)। उदाकिशुनगंज थाना क्षेत्र के जेल चौक के पास स्थित पेट्रोल पंप पर पूर्व से घात लगाए युवक ने युवक पर ईंट से वारकर युवक का सिर फोड़ दिया। जहां उन्हें गंभीर चोट आई है। ज्ञात हो कि पिछले दिनों उदाकिशुनगंज मुख्यालय स्थित डोहटवारी संतोष यादव पिता विद्यानंद यादव ने थाना में आवेदन देकर मामला दर्ज कराया है। दिए गए आवेदन में उन्होंने आरोप लगाया है कि मैं अपने मोटर साईकिल में पेट्रोल भरवाने हेतु जेल के समीप स्थित पेट्रोल पम्प पर पहुँचा था। इस दौरान पूर्व से घात लगाये श्रवण यादव, शत्रुधन यादव, अभिनंदन यादव पिता बालदेव यादव, प्रवेश कुमार पिता श्यामदेव यादव साकिन डोहटवारी वार्ड संख्या 5 थाना उदाकिशुनगंज ने अचानक अपनी चार चक्का वाहन कार से मेरे मोटर साइकिल में जान मारने की नियत से धक्का मार दिया जिससे मै मोटर साईकिल समेत गिर गया। जिसे देख आस परोस के लोगों के द्वारा किसी तरह मोटर साइकिल से निकाला। लेकिन उसी बीच शत्रुधन यादव ने पुनः मुझे पकरकर अपनी गाड़ी के चक्का के अंदर करने लगा। इतना ही नहीं अभिनंदन यादव द्वारा मेरे मोटर साईकिल पर अंधाधुन ईट के टुकड़ा से चकनाचुर कर दिया और प्रवेश कुमार ने मेरे पॉकेट से दस हजार रुपया छिन लिया। उसी बीच श्रवण यादव ने मेरे सिर पर ईंट से प्रहार कर दिया जिससे मेरा सिर फट गया और मैं लहुलहान हो गया। तबतक पेट्रोल पर आये ग्राहक के बीच बचाव के कारण जान बच गया अन्यथा उनलोगों द्वारा मेरे ऊपर गाड़ी चढ़ाकर जान मार देते। तत्पश्चात लोगों द्वारा मेरे परिजन को सुचना दिया गया तब मुझे उपचार हेतु उदाकिशुनगंज पीएचसी केन्द्र लाया गया जहाँ मेरी ईलाज करवायी गई। दिए गए आवेदन पत्र में उन्होंने बताया है कि इनलोगों द्वारा पूर्व में भी मेरे घर पर चढ़कर मुझे एवं मेरे परिवार के सदस्यों को जानलेवा हमला कर चुका है। जिसके विरूद्ध प्राथमिकी दर्ज हुई थी। उन्होंने पुलिस से अंदेशा जाहिर किया है कि कभी भी मेरे और मेरे परिवार के साथ कोई अनहोनी घटना हो सकता है। क्योंकि ये लोग अपराधिक किस्म के है। मामले को लेकर उदाकिशुनगंज थानाध्यक्ष विनोद कुमार सिंह ने बताया कि दिए गए आवेदन पर केस दर्ज कर जांच की जा रही है जल्द ही आरोपी पुलिस के पकड़ में आएगा।

पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह के निधन पर नेताओं ने जताया शोक

प्रातः किरण संवाददाता

उदाकिशुनगंज (मधेपुरा)। देश में आर्थिक सुधारों के जनक, आर्थिक बदलाव के शिल्पकार पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह के निधन पर अनुमंडल क्षेत्र में शोक की लहर है। उनके निधन पर राजनीतिज्ञ और सामाजिक लोगों ने शोक व्यक्त किया। कांग्रेस इंटक जिलाध्यक्ष संजय कुमार सिंह ने मजबूत शख्सियत, महान राजनेता पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह जी के निधन पर गहरी शोक संवेदना व्यक्त किया। उन्होंने ईश्वर से प्रार्थना किया है कि पुण्यात्मा को अपने श्रीचरणों में स्थान दें। उन्होंने कहा कि डॉ. मनमोहन सिंह ने दशकों तक हमारी अर्थव्यवस्था, देश की अभूतपूर्व प्रगति और विकास की ऐतिहासिक अध्यक्षता की। उनकी बुद्धिमता, सहनशीलता, दूरदर्शिता, विनम्रता और समर्पण को सदैव याद रखा जाएगा। कांग्रेस प्रखंड अध्यक्ष नवीद्र कुमार सिंह उर्फ खोखा सिंह ने कहा कि पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह को एक विशाल कद के नेता और दूरदर्शी अर्थशास्त्री के रूप में उन्हें याद किया जाएगा। उन्हें भारत के आर्थिक सुधारों के वास्तुकार के रूप में हमेशा याद किया जाएगा। देश की चुनौतियों के बारे में गहन जानकारी रखने वाले डॉ. सिंह के अथक प्रयासों ने लाखों लोगों का उत्थान किया। प्रगति की उनकी स्थायी विरासत आने वाली पीढ़ियों को प्रेरित करती रहेगी। कांग्रेस के वरिष्ठ नेता केसर कुमार सिंह ने कहा मनमोहन सिंह ने देश की प्रगति को नई दिशा दी। आर्थिक सशक्तिकरण में अद्वितीय योगदान दिया। विश्व पटल पर भारत को आर्थिक शक्ति के रूप में स्थापित किया। डॉ प्रो पूजा भारती, प्राचार्य रविंद्र कुमार रमन, बिजय कुमार सिंह, विजय जैन, डॉ डिके सिंन्हा, डॉ बिक्रम, डॉ मनोज कुमार, डॉ एसके संत, डॉ एके मिश्रा, डॉ मिथिलेश कुमार, डॉ विवेक भारती, विष्णु देव सिंह, डॉ संदीप कुमार सोनू, डॉ संतोष कुमार, डॉ आशीष कुमार मुन्ना, देवेश कुमार सिंह, प्रशांत कुमार सिंह, ठाकुर माधव सिंह तोमर, हेमंत कुमार, चितरंजन कुमार सिंह आदि थे।

120 करोड़ की लगात से ग्रामीण कार्य विभाग के द्वारा 15 हाई लेबल ब्रिज का होगा निर्माण :दिनेश यादव

प्रातः किरण संवाददाता

मधेपुरा। जिला मुख्यालय स्थित परिसदन में सांसद दिनेश चंद्र यादव ने प्रेस वार्ता आयोजित की। गुरुवार को आयोजित प्रेस वार्ता के दौरान उन्होंने कहा यातायात को सुगम करने की दिशा में सरकार लगातार प्रयास कर रही है। वहीं बेहतर पुल के निर्माण भी हो रहा है। इसी के तहत जिले में 120 करोड़ की लागत से ग्रामीण कार्य विभाग के द्वारा 15 हाई लेबल ब्रिज का निर्माण किया जाएगा। उन्होंने कहा कि मधेपुरा अनुमंडल में 10 व उदाकिशुनगंज अनुमंडल में पांच हाई लेबल ब्रिज के निर्माण की स्वीकृति ग्रामीण कार्य विभाग की ओर से दी गई है। जिसके तहत मधेपुरा नगर परिषद में भीरखी चौक से मधुवा पथ में 90 मीटर, नौ करोड़ व साहुगढ़ पंचायत दो जानकी टोला, शर्मा टोला से पूरब मधेपुरा नप वार्ड एक जाने वाली रोड में कोसी सहायक नदी में 10 करोड़ की लागत से 100 मीटर ब्रिज, जयपालपट्टी वार्ड मधेपुरा से भरार्ही (मदनपुर पंचायत) जाने वाली गोमती नदी में 10 करोड़ की लागत से 100 मीटर हाई लेबल ब्रिज का निर्माण किया जाएगा। इसके साथ ही घैलाढ़ प्रखंड के चित्ती से मोकना पथ में 8 करोड़ की लागत से 80 मीटर हाई लेवल ब्रिज का निर्माण किया जाएगा। मुरलीगंज प्रखंड के एसएच 91 से रतनपट्टी पथ में पांच करोड़ 10 लाख की लागत से 51 मीटर व मुरलीगंज एसएच से गंगापुर जाने वाली पथ में छह करोड़ कि लागत से 60 मीटर हाई लेवल ब्रिज का निर्माण किया जाएगा। इसके साथ बाबा नगरी सिंहेश्वर से लझा पथ में 9 करोड़ की लागत से 90 मीटर हाई लेबल ब्रिज का निर्माण किया जाएगा। इसके अतिरिक्त उदाकिशुनगंज अनुमंडल में भी पांच हाई लेबल ब्रिज का निर्माण किया जाएगा। जिसके तहत ग्वालपाड़ा प्रखंड में बेलापट्टी से करणपट्टी सुखासन पंचायत माई नदी में 6 करोड़ की लागत से 60 मीटर पुल का निर्माण किया जाएगा। विरगांव से बेलदारी पथ के अंतिम सीमा पर नवसृजित स्कूल के निकट 6 करोड़ की लागत से 60 मीटर आरसीसी पुल निर्माण का निर्माण किया जाएगा। आलमनगर प्रखंड में पुरानी बसा के नजदिक बसनवारा धार पर 5.5 करोड़ से 55 मीटर आरसीसी पुल का निर्माण होगा। आलमनगर में गंगापुर ग्राम पंचायत अंतरगत चौवतिया से लूटना हरजोरा पथ माई मझवारी बाशा के निकट 6 करोड़ की लागत से 60 मीटर पुल व केशोपुर के निकट हरेली धार माई पर 3 करोड़ की लागत से 30 मीटर आरसीसी पुल निर्माण किया जाएगा। उन्होंने बताया कि इन पुलों के निर्माण से यहां के लोगों को काफी सहूलियत हो जाएगी। सांसद दिनेश चंद यादव ने बताया कि बाबा नगरी सिंहेश्वर में रोज लगने वाले जाम की मुक्ति से निजात के लिए वहां कई वर्षों से लोगों की बायपास की मांग है।

जदयू ने कार्यकारिणी सदस्य का किया भौतिक सत्यापन

उदाकिशुनगंज (मधेपुरा)। जदयू की पंचायत स्तरीय बैठक शुक्रवार को आलमनगर विधानसभा क्षेत्र के मंजोरा, जोतेली, लश्करी, गोपालपुर, नयानगर, खाड़ा, बुधमा, शहजादपुर पंचायत और नप क्षेत्र के रहटा फनहन में आयोजित की गई। बैठक कि अध्यक्षता जदयू प्रखंड अध्यक्ष प्रदीप कुमार मंडल ने किया। बैठक में पंचायत स्तरीय कार्यकारिणी सदस्य का भौतिक सत्यापन के साथ गत बैठक का समीक्षा किया गया। बैठक में पार्टी नेताओं ने एक स्वर में पार्टी-संगठन को बूथ स्तर पर मजबूत करने का आह्वान किया। बैठक को संबोधित करते हुए आलमनगर विधानसभा प्रभारी कुणाल रत्नप्रिया ने कहा कि संगठन को सबल, सुदृढ़ व धारदार बनाने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के नेतृत्व में बिहार का चहुंमुखी विकास हुआ है। आज बिहार के विकास की चर्चा पूरे देश में है। उन्होंने कहा कि कार्यकर्ता पार्टी की रीढ होती है। जदयू प्रखंड अध्यक्ष प्रदीप कुमार मंडल ने पार्टी के कार्यकताओं को पंचायत से बूथ कमेटी को सशक्त बनाने परजोर दिया।

भारत के पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह के निधन पर भाकपा का श्रद्धांजलि

मधेपुरा। भारत के पूर्व प्रधानमंत्री, महान अर्थशास्त्री ,सरल व्यवहार और सादगी पूर्ण जीवन जीने वाले, सदैव गंभीर रहने वाले विद्वान राज नेता डॉ. मनमोहन सिंह के निधन पर भाकपा के राष्ट्रीय परिषद सदस्य प्रमोद प्रभाकर ने भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की है।भाकपा नेता ने कहा कि डॉ. सिंह का निधन देश के लिए अपूरणीय क्षति है। उन्होंने कहा कि जब देश आर्थिक संकट के दौर से गुजर रहा था तब डॉ. मनमोहन सिंह की आर्थिक नीति देश को आर्थिक संकट से ऊबारने का काम किया था। भाकपा नेता ने कहा कि डॉ.मनमोहन सिंह के व्यक्तित्व और कृतित्व को भूलाया नहीं जा सकता।

जिले के टॉप टेन अपराधियों की सूची में शामिल इनामी बदमाश ननकू उर्फ ननका गिरफ्तार

उदाकिशुनगंज (मधेपुरा)। जिले के टाप टेन अपराधियों के सूची में शामिल ननकू यादव उर्फ ननका को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। उसपर 25 हजार का इनाम घोषित था। वह हत्या, लूट कांड जैसे संगीन मामले में आरोपित रहे हैं। इसका पूर्व से अपराधिक इतिहास रहा है। एसडीपीओ अविनाश कुमार ने बताया कि बिहार पुलिस मुख्यालय, बिहार, पटना एवं पुलिस उप-महानिरीक्षक, कोशी क्षेत्र सहरसा के आदेशानुसार अपराध नियंत्रण हेतु फरार, सकिय अपराधकर्मियों की गिरफ्तारी हेतु विशेष अभियान चलाया जा रहा हैं। इसी अभियान के तहत मधेपुरा जिला के टापटेन की सूची में शामील कुख्यात एवं दुर्दान्त 25 हजार रूपया का ईनामी अपराधकर्मी ननकू यादव उर्फ ननका (30) पिता रूपेण यादव गांव फतेहपुर थाना बिहारीगंज जिला मधेपुरा को गिरफ्तार किया गया है। उन्होंने बताया कि गिरफ्तार अपराधी हत्या, लूट एवं अन्य मामलों में फरार चल रहा था। उसकी तलाश मधेपुरा पुलिस को काफी दिनों से था। इस अपराधी को 26 दिसंबर को पुलिस अधीक्षक मधेपुरा के निदेर्शानुसार अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी उदाकिशुनगंज के नेतृत्व में पुअनि अमित रंजन थानाध्यक्ष बिहारीगंज एवं थाना के अन्य पुलिस पदाधिकारी एवं सशस्त्र बल की टीम के द्वारा छापामारी कर कुख्यात एवं दुर्दान्त अपराधकर्मी ननकू यादव उर्फ ननका को विधिवत गिरफ्तार किया गया। जिसका पूर्व का अपराधिक इतिहास रहा हैं। एसडीपीओ ने बताया कि गिरफ्तार बदमाश बिहारीगंज थाना में कई मामलों में वांक्षित था। छापेमारी अभियान में पुअनि अमित रंजन थानाध्यक्ष बिहारीगंज थाना, प्रिंस कुमार, मिंटू पासवान, संदीप कुमार सौरेन शामिल थे।

लश्करी गांव निवासी चर्चित संवेदक पवन राय हत्याकांड में दो अपराधी गिरफ्तार

उदाकिशुनगंज (मधेपुरा)। उदाकिशुनगंज अनुमंडल पुलिस ने पुरैनी थाना क्षेत्र में कुछ दिन पूर्व हुए उदाकिशुनगंज थाना क्षेत्र के लश्करी गांव निवासी चर्चित संवेदक पवन राय हत्याकांड के मामले में दो अपराधियों को गिरफ्तार किया है। अपराधियों की गिरफ्तारी तकनीकी एवं मानवीय अनुसंधान के आधार पर हुई है। लेकिन स्पष्ट नहीं हो पाया है कि संवेदक की हत्या किन कारणों से की गई थी। पुलिस के मुताबिक मामले में जांच जारी है। माना जा रहा है कि पेशेवर बदमाशों ने संवेदक पवन की हत्या की है। उदाकिशुनगंज के एसडीपीओ अविनाश कुमार ने गिरफ्तारी की पुष्टि करते हुए बताया कि 11 दिसंबर 2024 को करीब 10 बजे रात में संवेदक पवन राय की गोली मारकर कर हत्या कर दी गई थी। वह उदाकिशुनगंज थाना क्षेत्र के लश्करी गांव के जनेश्वरी यादव का पुत्र था। वारदात के दिन संवेदक अपने भाईयों के साथ आलमनगर थाना क्षेत्र के खावन दियरा से सड़क निर्माण कार्य संपन्न करा अपने घर लोट रहे थे। जहां पुरैनी थाना क्षेत्र के करामा रोड गणेश प्रभा फ्यूल सेंटर से करीब 400 मीटर दक्षिण सड़क पर अपराधकर्मियों द्वारा गोली मारकर हत्या कर दिया गया। इस संदर्भ में संवेदक के पुत्र पंकज कुमार के शिकायत आवेदन पर पुरैनी थाना में एक मामला दर्ज किया गया। घटना की गंभीरता को देखते हुए पुलिस अधीक्षक मधेपुरा के द्वारा अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी उदाकिशुनगंज के नेतृत्व में थानाध्यक्ष पुरैनी एवं अन्य पुलिस पदाधिकारी, डीआईयू एवं सशस्त्र बल का एक टीम गठन किया गया। टीम द्वारा त्वरित कार्रवाई करते हुए तकनीकि एवं मानवीय अनुसंधान के तहत घटना में संलिप्त दो अपराधकर्मी सियाराम मेहता पिता नागो मेहता गांव मददपुर वासा वार्ड संख्या 13 थाना आलमनगर, अरूण मेहता पिता दामोदर मेहता गांव धनेशपुर त्रिवेणी टोला वार्ड संख्या पांच थाना पुरैनी दोनों जिला मधेपुरा को गिरफ्तार किया गया है। एसडीपीओ ने बताया कि सियाराम मेहता का पूर्व का अपराधिक इतिहास रहा है। अन्य चिन्हित अभियुक्तों के लिए लगातार छापामारी की जा रही है, शीघ्र ही गिरफ्तारी सुनिश्चित की जाएगी। एसडीपीओ ने बताया कि गिरफ्तार अपराधी सियाराम मेहता का लंबा आपराधिक इतिहास रहा है। वह मधेपुरा जिले के विभिन्न थाना के अलावा पूर्णियां जिले के रूपौली एवं अन्य थाना में वांक्षित रहा है। छापेमारी अभियान में पुनि राघव शरण थानाध्यक्ष पुरैनी, पुअनि, अखिलेश कुमार थानाध्यक्ष आलमनगर, प्रपुअनि रिजवान अहमद, डीआईयू टीम, सशस्त्र बल शामिल थे।

गुरुग्राम में बीएनएमयू के एक दर्जन शोधार्थियों ने प्रस्तुत किया शोध पत्र

प्रातः किरण संवाददाता

मधेपुरा। 49वाँ ऑल इंडिया सोशियोलॉजिकल कांफ्रेंस में बी. एन. मंडल विश्वविद्यालय मधेपुरा के समाजशास्त्र विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. राणा सुनील कुमार सिंह ने चेयरपर्सन के रूप में भाग लिया। विदित हो कि 49वाँ ऑल इंडिया सोशियोलॉजिकल सम्मेलन 2024 का आयोजन बीएमएल मुंजाल विश्वविद्यालय, गुड़गांव हरियाणा में हुआ। जिसमें भूपेन्द्र नारायण मंडल विश्वविद्यालय, मधेपुरा के समाजशास्त्र विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. राणा सुनील कुमार सिंह ने आरसी झ 02 के एक सत्र में चेयर पर्सन का दायित्व का निर्वहण किया साथ ही डॉ. सिंह ने अपना आलेख वृद्धों की परिवार में प्रस्थिति : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन भी प्रस्तुत किया। डॉ. सिंह ने वृद्धों की स्थिति में आने वाले परिवर्तन का मुख्य कारण युवाओं को रोजगार और शिक्षा के लिए शहरों में पलायन बताया। पालयन के कारण बच्चे अपने माता झ पिता से दूर हो जाते है। जिस कारण वृद्धों को अकेलापन, असुरक्षा और आर्थिक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। साथ ही बताया कि भारत में वृद्धजनों की संख्या तेजी से बढ़ रही है, लेकिन औद्योगीकरण, नगरीकरण, आधुनिकीकरण और पश्चिमीकरण के कारण पारिवारिक मूल्यों में बदलाव आ रहा है। आरसी 02 में सुरज कुमार ने परिवारिक और वैश्विक विकास में जीविका योजना की प्रासंगिकता विषय पर अपना शोध प्रस्तुत किया। शोध आलेख में बताया कि जीविका योजना से महिलाएँ न सिर्फ सशक्त हो रही है बल्कि वो पारिवारिक और वैश्विक विकास में अपना अहम योगदान निभा रही है। आरसी 08 में सुरज कुमार ने महिला सशक्तीकरण में जीविका योजना की प्रासंगिकता (बिहार राज्य के पूर्णियाँ जिला के संदर्भ में) प्रस्तुत किया। शोध के जरीये से बताया कि जीविका योजना महिलाओं के आर्थिक-सामाजिक सशक्तीकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। जीविका के माध्यम से महिलाओं की आय में वृद्धि, घरेलू निर्णय लेने में भागीदारी साथ ही सामाजिक भागीदारी भी बढ़ी है। जिसमें बताया कि जीविका योजना के द्वारा महिलाएँ आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक तथा मनोवैज्ञानिक रूप से सशक्त हो रही है। आरसी 25 में सुरज कुमार ने खेल से महिला प्रतिभागियों का आर्थिक और सामाजिक परिवर्तन : एक अध्ययन पर आलेख प्रस्तुत किया।

आलेख के माध्यम बताया कि आज केवल पुरूष ही नहीं बल्कि महिलाएँ भी खेल में देश के लिए मेंडल ला रही है। आज महिलाएँ खेल में अपना कैरियर रिपोर्टर, प्रशिक्षक आदि के रूप बना रही है। ब्रजेश कुमार सिंह महिलाओं के उत्थान में आंगनवाड़ी कार्यक्रम की भूमिका शोध पेपर प्रस्तुति के माध्यम आवश्यक बताया ।

रेल पुलिस ने ऑपरेशन मुस्कान कार्यक्रम का किया आयोजन

पटना। रेल पुलिस पटना के द्वारा ऑपरेशन मुस्कान का कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें रेल पुलिस पटना के तरफ से यात्रियों के गुम हुए 101 मोबाइल को बरामद कर लौटाया गया जिसमें रेल थाना आरा का अच्छा मोबाइल बरामद कर उनके धारा को लौटाया गया इस अवसर पर रेल पुलिस अधीक्षक अमृतेंदु शेखर ठाकुर, रेल पुलिस उपाधीक्षक दानापुर प्रशांत कुमार, रेल पुलिस उपाधीक्षक मुख्यालय प्रभाकर तिवारी, एवं रेल पुलिस उपाधीक्षक विधि व्यवस्था श्रीमती निशित प्रिया एवं थानाध्यक्ष रेल थाना आरा भी उपस्थित थे मोबाइल पा कर लोगों ने रेल पुलिस को धन्यवाद दिया

एक से सात जनवरी तक संबंधित विधालयों में योगदान देने सुनिश्चित करेंगे विशिष्ट शिक्षक

प्रातः किरण संवाददाता

उदाकिशुनगंज (मधेपुरा)। प्रखंड क्षेत्र में विशिष्ट शिक्षकों को औपबंधिक प्रमाण पत्र देने का कार्य शुरू है। बीआरसी कार्यालय में इन शिक्षकों के बीच प्रमाण पत्र वितरण कार्यक्रम किया जा रहा है। ऐसे शिक्षक पहली से सात जनवरी तक संबंधित विधालयों योगदान देना सुनिश्चित करेंगे। इसके लिए शिक्षकों को बीइओ ने जरूरी निर्देश दिए हैं। मालूम हो कि जिला शिक्षा अधिकारी मधेपुरा के द्वारा प्रत्येक प्रखंडों में एक से सात जनवरी तक संबंधित विधालयों में योगदान करने का निर्देश जारी किया गया है। सक्षमता पास सभी शिक्षकों को औपबंधिक नियुक्ति पत्र बीईओ और बीपीएम के द्वारा बीआरसी कार्यालय में वितरण किया जा रहा है। सभी विशिष्ट शिक्षक के रूप में अपने अपने पदस्थापित विद्यालयों में योगदान करेंगे। प्रमाण पत्र मिलने वाले शिक्षकों में खुशी देखी गई। इस प्रखंड क्षेत्र में वर्ग एक से आठ तक 462, वर्ग नौ से 10 तक 20 और वर्ग 11 तथा 12 तक दो शिक्षकों को औपबंधिक नियुक्ति प्रमाण पत्र दिया जाना है। बीईओ निर्मला कुमारी ने बताया कि सरकार के गाईड लाईन के मुताबिक इन शिक्षकों को जरूरी दिशा-निर्देश दिया गया है। मौके पर बीडीओ निर्मला कुमारी, बीपीएम दीपक कुमार, अंचल प्राथमिक शिक्षक संघ के अध्यक्ष कुमार किशोर केसरी, सचिव ललन कुमार दीनबंधु, एचएम संजय प्रताप, चंद्रभूषण पासवान, बिपीन बिहारी, बीआरपी प्रभात कुमार, प्रभू कुमार, दिनेश प्रसाद सिंह, रमन कुमार शर्मा, इंद्रदेव मेहता आदि मौजूद थे।

गौशाला प्रागंण में जिला जन सुराज के सभी पदाधिकारीगण की हुई बैठक

प्रातः किरण संवाददाता

मधेपुरा ।मधेपुरा के गौशाला प्रागंण में शुक्रवार को जिला जन सुराज के सभी पदाधिकारीगण, सभी विंग और 13 प्रखंडों के साथ पीके युथ क्लब की संयुक्त बैठक जिलाध्यक्ष दीपनारायण यादव के अध्यक्षता में हुई। जिसमें धरातल से जुड़ कर लोगों की सेवा और परेशानी को समझने और हल करने पर बल दिया गया। ताकि समाज के अंतिम पायदान के लोग जो कई सुविधाओं से वंचित है। उसको उसका समुचित लाभ दिलाने का दायित्व निभाना है। हमारा ईमानदार प्रयास ही उसे जन सुराज की मजबूत सीढ़ी का काम करेगा। जब तक लोगो का विश्वास हमको प्राप्त नही हो जाएगा तब तक हम अपने उद्देश्य में सफल नही हो सकते। गरीब को उसका सही सही हक दिलाना उसके बच्चों को शिक्षा का मार्ग दिखाना ही हमारा सबसे बड़ा उद्देश्य है। ताकि आने वाले समय में पढ़ा लिखा युवक को कोई ठग नही सके बरगला नही सके। वहीं मुख्य प्रवक्ता रंजीत कुमार ने कहा की बैठक में मुख्य रूप से यह फैसला लिया गया की सभी कार्यकर्ता अपने कार्यो को जन-जन तक पहुंचना है किसी भी समस्या को खुद से देखना है और उसको हल करना है,ओर गांव गांव तक पहुंच कर लोगों की समस्या का हल निकालने का प्रयास करना है,ताकि लोगों में विश्वास ओर प्यार बन सके ।

आगामी विधानसभा में बुलंद हौसलों के साथ जन सुराज विजय प्राप्त करेगी। प्रदेश कार्यकारिणी के सदस्य किशोर कुमार ने कहा प्रदेश अध्यक्ष मनोज भारती के निर्देश के अनुसार प्रखंड के सभी साथी एक दिन छोड़ एक दिन प्रखंड का दौरा करेंगे ।

ट्रक और हाईवा की जोरदार टक्कर में चालक हुए गंभीर रूप से जख्मी

पुरैनी (मधेपुरा)। एस एच 58 पर शुक्रवार की सुबह करीब आठ बजे बाबा विशु राउत के पास ट्रक और हाईवा के टक्कर से एक चालक गंभीर रूप से जख्मी हो गए। प्राथमिक उपचार के बाद बेहतर इलाज के लिए हायर सेंटर रेफर किया गया। उक्त घटना के बारे में लोगों ने बताया कि चौसा की ओर से आ रहे ट्रक को विपरीत दिशा से आ रहे हाईवा ने अनियंत्रित होकर जोरदार टक्कर मार दी। जिसमें बुरी तरह से हाईवा चालक का दाएं पैर फैक्कर तथा सिर में गंभीर चोट लग गई। मौके पर पहुंची पुलिस आवागमन को चालू किया और गाड़ी में फंसे चालक को बड़ी मशक्कत के बाद निकाला गया। आनन फानन में पुरैनी के सीएचसी केंद्र में भर्ती कराया गया। प्राथमिक उपचार के बाद बेहतर इलाज के लिए हायर सेंटर रेफर कर दिया गया। जख्मी चालक की पहचान कुमारखंड प्रखंड के रघुनियां गांव वार्ड 7 निवासी भूमि शर्मा के 32 वर्षीय पुत्र चालक प्रदीप शर्मा के रूप में की गई है।

आनंद मार्ग धर्म महासम्मेलन के मद्देनजर पुनदाग स्टेशन पर 02 जोड़ी ट्रेनों का अस्थायी ठहराव

हाजीपुर। यात्रियों की सुविधा हेतु आनंद मार्ग धर्म महासम्मेलन के मद्देनजर 7.12.2024 से 04.01.2025 तक 02 जोड़ी एक्सप्रेस ट्रेनों का अस्थायी रूप से पुनदाग स्टेशन पर एक-एक मिनट का ठहराव दिया गया है ।

गाड़ी संख्या 18105 राउरकेला-जयनगर एक्सप्रेस का पुनदाग स्टेशन पर आगमन समय 22.21 बजे तथा प्रस्थान समय 22.22 बजे निर्धारित किया गया है । जबकि गाड़ी संख्या 18106 जयनगर-राउरकेला एक्सप्रेस का आगमन समय 08.05 बजे तथा प्रस्थान समय एक मिनट बाद 08.06 बजे निर्धारित किया गया है ।इसी तरह गाड़ी संख्या 18621 पटना-हटिया एक्सप्रेस का आगमन समय 02.16 बजे एवं प्रस्थान समय 02.17 बजे तथा 18622 हटिया-पटना एक्सप्रेस का पुनदाग स्टेशन पर आगमन समय 00.14 बजे तथा प्रस्थान समय 00.15 बजे निर्धारित किया गया है।

हैदराबाद-रक्सौल स्पेशल ट्रेन के परिचालन अवधि में की गई वृद्धि

हाजीपुर। यात्रियों की सुविधा के मद्देनजर वर्तमान में हैदराबाद/सिकंदराबाद एवं रक्सौल के मध्य संचालित की जा रही 07051/07052 रक्सौल-हैदराबाद/सिकंदराबाद -रक्सौल स्पेशल ट्रेन के परिचालन अवधि में वृद्धि करते हुए अब इसका परिचालन 01.04.2025 तक किया जाएगा ।गाड़ी संख्या 07051 हैदराबाद-रक्सौल साप्ताहिक एक्सप्रेस स्पेशल ट्रेन का परिचालन दिनांक 28.12.2024 के बदले विस्तारित अवधि के साथ 29.03.2025 तक किया जाएगा । इसी तरह गाड़ी संख्या 07052 रक्सौल-सिकंदराबाद साप्ताहिक एक्सप्रेस स्पेशल ट्रेन के परिचालन अवधि में वृद्धि करते हुए अब इसका परिचालन 31.12.2024 के बदले 01.04.2025 तक किया जाएगा ।

महाकुंभ के अवसर पर यात्रियों की सुविधा के लिए अतिरिक्त 04 जोड़ी कुंभ मेला स्पेशल ट्रेन का होगा परिचालन

प्रातः किरण संवाददाता

हाजीपुर। रेलवे द्वारा महाकुंभ-2025 के अवसर पर श्रद्धालु यात्रियों की होने वाली अतिरिक्त भीड़ के मद्देनजर कई कुंभ मेला स्पेशल ट्रेनों का परिचालन किया जा रहा है । इसी कड़ी में अतिरिक्त 04 जोड़ी महाकुंभ मेला स्पेशल ट्रेन का परिचालन किया जाएगा ।

1.गाड़ी सं. 08425/08426 भुवनेश्वर-टुंडला-भुवनेश्वर कुंभ मेला स्पेशल - गाड़ी सं. 08425 भुवनेश्वर-टुंडला जंक्शन कुंभ मेला स्पेशल 01, 08 एवं 22 जनवरी तथा 05, 19 एवं 26 फरवरी, 2025 (बुधवार) को भुवनेश्वर से 12.30 बजे खुलकर विभिन्न स्टेशनों पर रूकते हुए गुरूवार को 20.15 बजे टुंडला पहुंचेगी । यहां से वापसी में गाड़ी सं. 08426 टुंडला जंक्शन-भुवनेश्वर कुंभ मेला स्पेशल 03, 10 एवं 24 जनवरी तथा 07, 21 एवं 28 फरवरी, 2025 (शुक्रवार) को टुंडला जंक्शन से 03.00 बजे खुलकर शनिवार को 07.00 बजे भुवनेश्वर पहुंचेगी । इस ट्रेन का परिचालन कटक, मुरी, बोकारो स्टील सिटी, राजाबेरा, चंद्रपुरा, नेसुबो गोमो, पारसनाथ, कोडरमा, गया, सासाराम, भभुआ रोड, चंदौली मझवार, पंडित दीन दयाल उपाध्याय जंक्शन, मिजार्पुर, प्रयागराज के रास्ते किया जाएगा ।

2.गाड़ी सं. 08417/08418 पुरी-टुंडला-पुरी कुंभ मेला स्पेशल - गाड़ी सं. 08417 पुरी-टुंडला कुंभ मेला स्पेशल 06 एवं 20 जनवरी तथा 17 फरवरी, 2025 (सोमवार) को पुरी से 12.30 बजे खुलकर विभिन्न स्टेशनों पर रूकते हुए मंगलवार को 20.15 बजे टुंडला जंक्शन पहुंचेगी ।यहां से वापसी में गाड़ी सं. 08418 टुंडला जंक्शन-पुरी कुंभ मेला स्पेशल 08 एवं 22 जनवरी तथा 19 फरवरी, 2025 (बुधवार) को टुंडला जंक्शन से 03.00 बजे खुलकर गुरूवार को 09.45 बजे पुरी पहुंचेगी ।इस ट्रेन का परिचालन कटक, अद्रा, भोजुडीह, नेसुबो गोमो, पारसनाथ, कोडरमा, गया, डेहरी ऑन सोन, सासाराम, भभुआ रोड, चंदौली मझवार, पंडित दीन दयाल उपाध्याय जंक्शन, मिजार्पुर, प्रयागराज के रास्ते किया जाएगा ।

3.गाड़ी सं. 08314/08313 तितलागढ़-टुंडला-तितलागढ़ कुंभ मेला स्पेशल - गाड़ी सं. 08314 तितलागढ़-टुंडला जंक्शन कुंभ मेला स्पेशल 09, 16 एवं 23 जनवरी तथा 06, 20 एवं 27 फरवरी, 2025 (गुरूवार) को तितलागढ़ से 17.00 बजे खुलकर विभिन्न स्टेशनों पर रूकते हुए शनिवार को 02.30 बजे टुंडला जंक्शन पहुंचेगी । यहां से वापसी में गाड़ी सं. 08313 टुंडला जंक्शन-तितलागढ़ कुंभ मेला स्पेशल 11, 18 एवं 25 जनवरी तथा 08, 22 फरवरी एवं 01 मार्च, 2025 (शनिवार) को टुंडला जंक्शन से 05.00 बजे खुलकर रविवार को 11.00 बजे तितलागढ़ पहुंचेगी । इस ट्रेन का परिचालन राउरकेला, हटिया, रांची, मुरी, बरकाकाना, टोरी, बड़वाडीह, डाल्टेनगंज, गढ़वा रोड, जपला, डेहरी ऑन सोन, सासाराम, भभुआ रोड, चंदौली मझवार, पंडित दीन दयाल उपाध्याय जंक्शन, मिजार्पुर, प्रयागराज के रास्ते किया जाएगा ।4.गाड़ी सं. 08530/08529 विशाखापत्तनम-पंडित दीन दयाल उपाध्याय जं.-विशाखापत्तनम कुंभ मेला स्पेशल - गाड़ी सं. 08530 विशाखापत्तनम-पंडित दीन दयाल उपाध्याय जंक्शन कुंभ मेला स्पेशल 09, 16 एवं 23 जनवरी तथा 06, 20 एवं 27 फरवरी, 2025 (गुरूवार) को विशाखापत्तनम. से 17.35 बजे खुलकर विभिन्न स्टेशनों पर रूकते हुए आगे जायेगी।

भारतीय महिला टीम ने वेस्टइंडीज को 5 विकेट से हराया, वनडे सीरीज में किया क्लीन स्वीप

वड़ोदरा (एजेंसी)। दीप्ति शर्मा (छह विकेट और नाबाद 39 रन) के हरफनमौला प्रदर्शन के दम पर भारतीय महिला टीम ने शुक्रवार को तीसरे एकदिवसीय मुकाबले में वेस्टइंडीज को पांच विकेट से हरा दिया। इसी के भारतीय टीम ने तीन मैचों की एकदिवसीय सीरीज भी 3-0 से अपने नाम कर ली हैं।

वेस्टइंडीज के 162 रनों के जवाब में बल्लेबाजी करने उतरी भारतीय महिला टीम की शुरुआत अच्छी नहीं रही और उसने 23 के स्कोर पर अपने दो विकेट गवां दिए। स्मृति मंधाना (चार) और हरलीन देओल (एक) रन बनाकर आउट हुई। इसके बाद प्रतिका रावल और कप्तान हरमनप्रीत कौर ने पारी संभालने का प्रयास किया। 10वें ओवर में हेली मैथ्यूज ने प्रतिका रावल (18) को आउट कर भारत को तीसरा झटका दिया। 13वें ओवर में ऐफी फ्लेचर ने हरमनप्रीत कौर (32) को आउटकर पवेलियन भेज दिया।

जेमिमाह रॉड्रिग्स तथा दीप्ति शर्मा ने पारी को संभाला और तेजी के साथ रन बटोरे। दोनों बल्लेबाजों के बीच पांचवें विकेट के लिये 56 रनों की साझेदारी हुई। 25वें ओवर में करिश्मा रामहैरक ने जेमिमाह रॉड्रिग्स (29) को आउट कर साझेदारी को तोड़ा। दीप्ति शर्मा और ऋचा घोष ने शानदार बल्लेबाजी का मुजाहिरा करते हुए टीम को पांच विकेट से जीत दिला दी। दीप्ति शर्मा ने 48 गेंदों में तीन चौके और एक छक्का लगाते हुए (नाबाद 39) रनों की पारी खेली।

वहीं ऋचा घोष ने 11 गेंदों में एक चौका और तीन छक्के लगाते हुए तूफानी अंदाज में (नाबाद 23)रन बनाये। भारत ने 28.2 ओवर में 167 रन बनाकर मुकाबला और 3-0 से श्रृंखला भी जीती। वेस्टइंडीज की ओर से डिएंड्रा डॉटिन, आलिया ऑलेन, हेली मैथ्यूज, करिश्मा रामहैक और ऐफी फ्लेचर ने एक-एक बल्लेबाज को आउट किया।

इससे पहले दीप्ति शर्मा (छह विकेट) और रेणुका सिंह (चार विकेट) शानदार गेंदबाजी करते हुए वेस्टइंडीज की पूरी टीम को 162 के स्कोर पर ढ़ेर कर दिया था। वेस्टइंडीज की महिला टीम ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करने का फैसला किया। बल्लेबाजी करने उतरी वेस्टइंडीज की शुरुआत बेहद खराब रही और उसने मात्र नौ रन के स्कोर पर अपने तीन विकेट गवां दिये। इसके बाद शमैन कैंपबेल और शिनेल हेनरी की जोड़ी ने पारी को संभाला।

दोनों बल्लेबाजों के बीच चौथे विकेट के लिये 91 रनों की साझेदारी हुई। 22वें ओवर में दीप्ति शर्मा ने शमैन कैंपबेल (46) को आउटकर इस साझेदारी को तोड़ा। 24वें ओवर में दीप्ति ने जायडा जेम्स (एक) को आउट कर पवेलियन भेज दिया। 32वें ओवर में दीप्ति ने शिनेल हेनरी को आउटकर वेस्टइंडीज के बड़े स्कोर बनाने की उम्मीदों को झटका दिया।

शिनेल हेनरी ने 72 गेंदों में 5 चौके और तीन छक्के लगाते हुए (61) रनों की पारी खेली। आलिया ऑलेन (21), मैंडी मैंगरु (नौ), ऐफी फ्लेचर (एक) और अश्मिनी मुनिसार (चार) रन बनाकर आउट हुई। भारतीय गेंदबाजों ने वेस्टइंडी की पूरी टीम को 38.5 ओवर में 162 रनों पर ढेर कर दिया। भारत की ओर से दीप्ति शर्मा ने छह विकेट लिये। रेणुका सिंह को चार विकेट मिले।

मेलबर्न टेस्ट: 22 गेंद में गंवाए 3 विकेट, फॉलोऑन बचाने के लिए 111 रन और बनाने हैं

भारत ने 164 रन पर 5 विकेट गंवाए

मेलबर्न (एजेंसी)। ऑस्ट्रेलिया और भारत के बीच बॉर्डर गावस्कर ट्रॉफी सीरीज के तहत चौथा टेस्ट बॉक्सिंग डे के रूप में खेला जा रहा है। दूसरे दिन ऑस्ट्रेलिया ने 311/6 के स्कोर के आगे खेलना शुरू करते हुए स्टीव स्मिथ की शतकीय पारी (197 गेंदों पर 140 रन, 13 चौके और 3 छक्के) की बदौलत पहली पारी में 474 रन का मजबूत स्कोर बनाया। इसके जवाब में उतरी भारतीय टीम ने खराब शुरूआत के बाद वापसी करते हुए 5 विकेट के नुकसान पर 164 रन बनाते हुए दूसरे दिन की समाप्ति की। भारत अभी भी 310 रन पीछे है। बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी के चौथे टेस्ट में भारतीय टीम पर फॉलोऑन का खतरा मंडरा रहा है। टीम ने शुक्रवार को स्टंप्स तक 164 रन बनाने में 5 विकेट गंवा दिए हैं। ऋषभ पंत 6 और रवींद्र जडेजा 4 रन पर नाबाद लौटे हैं। भारत को फॉलोऑन बचाने के लिए 111 रन और बनाने हैं। इस मैच का फॉलोऑन मार्क 275 रन है, क्योंकि ऑस्ट्रेलिया ने पहली पारी में 474 रन बनाए हैं।

भारत ने बल्लेबाजी ऑर्डर में बदलाव किया और यशस्वी जायसवाल के साथ रोहित शर्मा ओपनिंग पर उतरे। लेकिन यह फैसला गलत साबित हुआ और रोहित (3) सस्ते में पवेलियन लौट गए। वह कमिंस की गेंद पर बोलैंड को कैच थमा बैठे। इसके बाद केएल राहुल ने जायसवाल के साथ मोर्चा संभाला और दूसरे विकेट के लिए 43 रन की साझेदारी की। यह साझेदारी केएल राहुल के विकेट से समाप्त हुई जो कमिंस की गेंद पर बोल्ड हुए। उन्होंने 42 गेंदों पर 3 चौकों की मदद से 24 रन बनाए। यशस्वी जायसवाल ने 118 गेंदों पर 11 चौके और एक छक्के की मदद से 82 रन बनाए और कमिंस तथा कैरी के हाथों रन आउट हो गए। उनके बाद कोहली (36)

बोलेंड की गेंद पर कमिंस के हाथों कैच आउट हो गए। पिछले मैच में भारत को फॉलोऑन से बचाने वाले आकाशदीप ने 13 गेंदें खेली लेकिन बिना खाता खोले बोलेंड की गेंद पर लियोन के हाथों कैच आउट हो गए।

पहला दिन

ऑस्ट्रेलिया ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करते हुए 6 विकेट के नुकसान पर 311 रन बनाते हुए पहले दिन की समाप्ति की। स्टंप्स तक स्टीव स्मिथ 68 रन बनाकर पैट कमिंस (8) के साथ क्रीज पर मौजूद रहे। उस्मान ख्वाजा (57), सैम कॉन्स्टास (60) और मार्नस लाबुशाने (72) की अर्धशतकीय पारियों के बाद स्मिथ ने भी अर्धशतक लगा दिया है। वहीं इस बार ट्रेविस हेड को भारतीय गेंदबाजों ने अपना प्रदर्शन शुरू करने से पहले ही आउट कर दिया। ऑस्ट्रेलियाई कप्तान पैट कमिंस ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करने का फैसला किया। बल्लेबाजी करने उतरी उस्मान ख्वाजा और सैम कॉन्स्टास की सलामी जोड़ी ने अच्छी शुरुआत करते हुए पहले विकेट के लिए 89रनों की साझेदारी की। 20वें ओवर में रवींद्र जडेजा ने सैम कॉन्स्टास को पगबाधा आउट कर इस साझेदारी को तोड़ा। कॉन्स्टास ने 65 गेंदों में छह चौके और दो छक्के लगाते हुए पदार्पण टेस्ट में अपना पहला अर्धशतक बनाते हुए (60)रनों की पारी खेली।

इसके बाद बल्लेबाजी करने आये मार्नसन लाबुशेन ने उस्मान ख्वाज के साथ मोर्चा संभाला। दोनों बल्लेबाजों के बीच दूसरे विकेट लिए 65 रनों की साझेदारी हुई। 45वें ओवर में जसप्रीत बुमराह ने उस्मान ख्वाजा को केएल राहुल के हाथों कैच आउट कराकर इस साझेदारी को तोड़ा। उस्मान ख्वाजा ने 121 गेंदों में छह चौके लगाते हुए (57)रन बनाए। इसके बाद मार्नसन लाबुशेन (145 गेंदों पर 72 रन और 7 चौके) सुंदर की गेंद पर कोहली के हाथों कैच आउट हुए। भारत के लिए बड़ा खतरा साबित होने वाले ट्रेविड हेड क्रीज पर पैर जमाने से पहली ही 7 गेंदों पर बिना खाता खोले बुमराह के हाथों बोल्ड हो गए। मार्श 4 रन बनाकर बुमराह का शिकार बने जबकि आकाशदीप ने एलेक्स केरी को 31 रन पर पंत के हाथों कैच आउट करवाया।

प्लेइंग 11

ऑस्ट्रेलिया -उस्मान ख्वाजा, सैम कोंस्टास, मार्नस लाबुशेन, स्टीवन स्मिथ, ट्रैविस हेड, मिशेल मार्श, एलेक्स कैरी (विकेट कीपर), पैट कमिंस (कप्तान), मिशेल स्टार्क, नाथन लियोन, स्कॉट बोलैंड

भारत - यशस्वी जयसवाल, केएल राहुल, रोहित शर्मा (कप्तान), विराट कोहली, ऋषभ पंत (विकेटकीपर), रवींद्र जड़ेजा, नितीश कुमार रेड्डी, वाशिंगटन सुंदर, जसप्रित बुमरा, मोहम्मद सिराज, आकाश दीप

मैदान में घुसा फैन, विराट से मिला

फैंस ने कोहली के खिलाफ हूटिंग की, खुद को बोल्ड होते देखते रहे स्मिथ

मेलबर्न (एजेंसी)। ऑस्ट्रेलियाई टीम भारत के खिलाफ बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी के मेलबर्न टेस्ट में मजबूत स्थिती में पहुंच गई है। भारत पर फॉलोऑन बचाने का खतरा मंडरा रहा है। शुक्रवार को दूसरे दिन स्टंप्स तक भारत ने पहली पारी में 5 विकेट खोकर 164 रन बनाए। टीम अभी भी ऑस्ट्रेलियाई टीम से 310 रन से पीछे है। कंगारू टीम पहली पारी में 474 रन पर ऑलआउट हुई।मैच के दूसरे दिन भी कुछ इंटरेस्टिंग मोमेंट्स देखने के मिले। जैसे मैच को शुरू हुए अभी एक घंटा भी नहीं हुआ था कि एक फैन मैदान में घुस आया, उसने विराट कोहली के कंधे पर हाथ रखकर बातचीत भी की। वहीं, ऑस्ट्रेलियाई बल्लेबाज स्टीव स्मिथ अजीब तरह से बोल्ड हो गए।

विराट के आउट होने पर फैंस ने हूटिंग की

विराट कोहली जब आउट होकर मैदान से बाहर जा रहे थे तो ऑस्ट्रेलियाई दर्शकों ने उनके खिलाफ हूटिंग की। विराट कोहली जैसे ही पवेलियन के अंदर जाने लगे तो उन्हें फैंस ने कुछ कहा जो कोहली को बुरा लग गया। इसके बाद विराट कोहली बाहर वापस आए और लोगों से बहस करने लगे। बाद में वहां मौजूद सिक्योरिटी गार्ड ने बीच-बचाव किया और विराट को अंदर ले गए।

विराट कोहली मेलबर्न टेस्ट की पहली पारी में 36 रन ही बना सके। उन्हें स्कॉट बोलैंड ने विकेटकीपर कैरी के हाथों कैच कराया।

जिमी एंडरसन की ऑल टाइम प्लेइंग-11 में पाकिस्तान का एक भी क्रिकेटर नहीं

दुबई (एजेंसी)। दुनिया के महान गेंदबाजों में शुमार इंग्लैंड के पूर्व पेसर जेम्स एंडरसन ने अपनी टेस्ट इतिहास की सर्वश्रेष्ठ प्लेइंग-11 चुनी है। टीम में पाकिस्तान का एक भी क्रिकेटर नहीं है। इसी तरह श्रीलंका के क्रिकेटर्स को भी एंडरसन ने वरीयता नहीं दी है। एंडरसन की इस टीम में तीन एक्टिव क्रिकेटर्स हैं, जिनमें से दो भारतीय हैं।

मुरलीधरन नहीं, वॉर्न को जगह

सबसे ज्यादा 800 टेस्ट विकेट लेने वाले श्रीलंकाई दिग्गज मुथैया मुरलीधरन को एंडरसन ने अपनी इस टीम में नहीं चुना। उनकी जगह ऑस्ट्रेलिया के दिग्गज स्पिनर शेन वॉर्न को वरीयता दी है। वॉर्न के नाम 705 विकेट हैं। एंडरसन के दो तेज गेंदबाज ग्लेन मैकग्रा और डेल स्टेन हैं।

प्लेइंग 11 में 4 भारतीय

एंडरसन की टीम में विराट कोहली और विकेटकीपर बल्लेबाज ऋषभ पंत दो एक्टिव भारतीय क्रिकेटर्स हैं। इसके अलावा उन्होंने पूर्व विस्फोटक भारतीय बल्लेबाज वीरेंद्र सहवाग और सबसे ज्यादा इंटरनेशनल रन बनाने वाले महान सचिन तेंदुलकर के रूप में 2 अन्य भारतीयों को भी चुना है।

एंडरसन की ऑल टाइम प्लेइंग 11

एलेस्टेयर कुक (इंग्लैंड) -सलामी बल्लेबाज कुक होते जोकि इंग्लैंड के सर्वश्रेष्ठ टेस्ट बल्लेबाजों में से एक रहे।
वीरेंद्र सहवाग (भारत)- सहवाग का टेस्ट फार्मेट में बतौर ओपनर स्ट्राइक रेट अच्छा है। इसलिए उन्हें जगह मिली।
विराट कोहली (भारत)- नंबर तीन पर विराट कोहली से बढ़िया कोई क्रिकेटर नहीं।
जो रूट (इंग्लैंड)-भरोसेमंद बल्लेबाज। मध्यक्रम को थाम सकते हैं
सचिन तेंदुलकर (भारत)- क्रिकेट के भगवान के नाम से मशहूर तेंदुलकर को 5वें स्थान पर जगह दी गई है।
एंड्रयू फ्लिंटॉफ (इंग्लैंड)-ऑलराउंडर के तौर पर फ्लिंटॉफ को फिट किया है।
ऋषभ पंत (भारत)- विकेटकीपर की भूमिका निभाएंगे। आक्रामक खेल के लिए जाने जाते हैं।
शेन वॉर्न (ऑस्ट्रेलिया)- दिग्गज लेग स्पिनर शेन वॉर्न स्पिन खेमा संभालते।
स्टुअर्ट ब्रॉड (इंग्लैंड)- अपने पूर्व साथी स्टुअर्ट ब्रॉड को एंडरसन ने फेवरेट प्लेइंग 11 में भी चुना। ब्रॉड टेस्ट में 600 से ज्यादा विकेट ले चुके हैं।
ग्लेन मैकग्रा (ऑस्ट्रेलिया)-ऑस्ट्रेलिया के महानतम गेंदबाज। सटीक लाइन और

पूर्व पीएम मनमोहन सिंह का निधन, सम्मान में काली पट्टी बांधकर उतरे भारतीय खिलाड़ी

मेलबर्न (एजेंसी)। पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह के सम्मान में भारतीय महिला और पुरुष क्रिकेट टीम के खिलाड़ी शुक्रवार को अपने-अपने मैचों में बांह पर काली पट्टी बांध कर मैदान पर उतरे। भारत के आर्थिक सुधारों के जनक मनमोहन सिंह का 92 साल की उम्र में बृहस्पतिवार रात को दिल्ली में निधन हो गया। वह 2004-14 के दौरान भारत के प्रधानमंत्री थे।

उन्हें 1991 में भारत के आर्थिक उदारीकरण के वास्तुकार के रूप में जाना जाता है। रोहित शर्मा की अगुवाई वाली पुरुष टीम ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ बॉर्डर गावस्कर ट्रॉफी में चौथा टेस्ट मैच खेल रही है। भारतीय महिला टीम वडोदरा में तीन मैचों की श्रृंखला के आखिरी वनडे में वेस्टइंडीज का सामना कर रही है।

'वह एक बड़ी घटना थी', यशस्वी जायसवाल के रन आउट पर आया स्टीव स्मिथ का बयान

मेलबर्न (एजेंसी)। ऑस्ट्रेलिया के बल्लेबाजी नायक स्टीव स्मिथ ने कहा कि भारत के खिलाफ चौथे टेस्ट मैच में शुक्रवार को यशस्वी जयसवाल के रन आउट होने का बड़ा असर पड़ेगा क्योंकि इससे शानदार बल्लेबाजी कर रहे विराट कोहली की एकाग्रता भी प्रभावित हुई। जायसवाल ने बॉक्सिंग डे टेस्ट मैच के दूसरे दिन 118 गेंद की अपनी धाराप्रवाह पारी में 82 रन बनाए। उन्होंने कोहली (36) के साथ गफलत का शिकार होकर रन आउट होने से पहले तीसरे विकेट के लिए 102 रन की साझेदारी कर मैच में भारत की वापसी की नींव रखी थी।

स्मिथ से जब जायसवाल के रन आउट होने के बाद कोहली के विकेट के बारे में पूछा गया तो उन्होंने कहा, 'वह (कोहली) आज वास्तव में अनुशासित थे, वह अच्छे से अपने शॉट खेल रहे थे। वह शरीर पर आने वाली गेंदों को लेग साइड में खेलकर रन बना रहे थे। उन्होंने शॉट गेंदों का भी डटकर सामना किया। इससे पहले स्मिथ की 140 रन (श्रृंखला में उनका लगातार दूसरा शतक) की पारी की मदद से ऑस्ट्रेलिया ने 474 रन बनाए और फिर भारत को 164 रन पर पांच विकेट लेकर भारत को बैकफुट पर धकेल दिया।

स्मिथ ने कहा, 'ऐसा लगा कि जायसवाल ने रन लेने के लिए कहा लेकिन विराट ने उन्हें वापस भेज दिया। मैंने इससे ज्यादा कुछ नहीं देखा। टेस्ट में अपना 34वां शतक पूरा करने वाले इस बल्लेबाज ने कहा, 'इस साझेदारी को तोड़ना जाहिर तौर पर हमारे लिए अच्छा रहा। इसके बाद हमें दो और विकेट मिलें। हमारे लिए आखिरी घंटा शानदार रहा। मुझे लगता है कि आज के दिन के संदर्भ में वह (रन आउट) एक बड़ी घटना थी।

रोहित सिडनी टेस्ट से पहले खुद बाहर होंगे या बड़े फैसले का इंतजार करेंगे?

मेलबर्न (एजेंसी)। एक बार फिर रोहित शर्मा सस्ते में आउट हुए और फिर उनके भविष्य को लेकर अटकलें लगनी शुरू हो गई जो लाजमी भी हैं। महान बल्लेबाज सुनील गावस्कर ने कहा, 'उसके लिए कठिन समय है। अभी दूसरी पारी और सिडनी टेस्ट की दो पारियां बाकी है। इन तीनों पारियों में अगर वह रन नहीं बनाता है तो सवाल तो उठेंगे।

पैट कमिंस की शॉर्ट गेंद पर यहां चौथे टेस्ट की पहली पारी में भारतीय कप्तान के तीन रन पर आउट होने के बाद सवाल उठने लगे हैं कि वह टेस्ट क्रिकेट से विदा कब लेंगे। राष्ट्रीय चयन समिति के अध्यक्ष अजित अगरकर मेलबर्न में है और हो सकता है कि दोनों की भविष्य को लेकर बात भी हुई हो क्योंकि भारतीय टीम बदलाव के दौर से गुजर रही है। पिछले आठ टेस्ट की 14 पारियों में 11.07 की औसत से रोहित ने सिर्फ 155 रन बनाए हैं।

एक तो वह फॉर्म में नहीं हैं और स्थिर लग रही प्रारंभिक जोड़ी में बदलाव करके टीम का संतुलन भी बिगड़ गया है। ऐसी अटकलें हैं कि अगर भारत विश्व टेस्ट चैम्पियनशिप फाइनल के लिए क्वालीफाई नहीं कर पाता है तो सिडनी उनके करियर का आखिरी टेस्ट होगा। लेकिन क्या रोहित टीम के लिए सिडनी टेस्ट से खुद को बाहर रखकर फॉर्म में चल रहे केएल राहुल को यशस्वी जायसवाल के साथ पारी का आगाज करने देंगे।

भारतीय टीम के मुख्य कोच गौतम गंभीर ने आईपीएल में अपने खेलने के दिनों में एक बार खुद को बाहर कर दिया था। अगर रविचंद्रन अश्विन को यह जताकर संन्यास लेने के लिए विवश किया जाता है कि वह विदेश में पहली पसंद के दो स्पिनरों में से नहीं हैं तो क्या भारतीय कप्तान को यह नहीं बताना चाहिए कि वह टेस्ट में शीर्ष छह में नहीं हैं जिनकी जगह टीम में पक्की है।

सात सप्ताह बाद वनडे प्रारूप में चैम्पियंस ट्रॉफी खेली जानी है और वनडे में रोहित का कोई सानी नहीं। मौजूदा खराब फॉर्म से उनका मनोबल गिरा होगा लेकिन अगर टेस्ट की जिम्मेदारी हट जाती है तो वह खुलकर खेल सकेंगे। रोहित और विराट कोहली दोनों ही खराब फॉर्म में हैं लेकिन अंतर इतना है कि क्रीज पर दोनों कैसे दिखते हैं। कोहली को देखकर अभी भी लगता है कि वह जल्दी ही बड़ी पारी खेलेंगे और पर्थ में उन्होंने शतक जमाया भी। एमसीजी पर भी दूसरे दिन वह आत्मविश्वास से भरे दिख रहे थे।

दूसरी ओर रोहित आसानी से विकेट गंवाते आए हैं। यहां बहुत ही खराब शॉट खेलकर वह पवेलियन लौटे। बतौर कप्तान भी अभी तक इस श्रृंखला में उन्होंने बहुत प्रभावित नहीं किया है। लिहाजा कप्तान को जल्दी ही फैसला लेना होगा। शायद उनकी टीम इसका इंतजार कर रही है।

देश दुनिया की ताजा तरीन खबरें पढ़ने के ऑन करें
www.pratahkiran.com | epaper.pratahkiran.com
@Pratahkiran | @Pratahkiran

संक्षिप्त समाचार

मीराबाई को लेकर टिप्पणी पर घिरे कानून मंत्री मेघवाल ने मांगी सार्वजनिक माफी

जयपुर, एजेंसी। भक्त शिरोमणि मीराबाई को लेकर एक सार्वजनिक कार्यक्रम में कही गई बातों को लेकर विवादों से घिरे केंद्रीय मंत्री अर्जुन राम मेघवाल बैकफुट पर हैं. गुरुवार शाम को उन्होंने इस सिलसिले में एक वीडियो जारी किया. सोशल मीडिया पर जारी इस वीडियो में मेघवाल सार्वजनिक रूप से खेद प्रकट करते हुए नजर आ रहे हैं. मेघवाल ने कहा कि मीरा के प्रति मेरे मन में अगाध श्रद्धा एव आस्था है. मेरे किन्ही शब्दों से मां मीरा के प्रति भक्ति और श्रद्धा भाव रखने वाले श्रद्धालुओं के मन में किसी भी प्रकार से ठेस पहुंची है, तो मैं खेद व्यक्त करते हुए माफी मांगता हूं. गौरतलब है कि सोशल मीडिया पर मेघवाल का यह बयान वायरल होने के बाद राजपूत समाज में इस विषय पर कड़ी प्रतिक्रिया देखने को मिली थी. क्षत्रिय युवक संघ ने की थी मांग : अपने बयान को लेकर विवाद के बाद राजपूत समाज के संगठन क्षत्रिय युवक संघ ने भी सोशल मीडिया पर इस मामले पर अपनी प्रतिक्रिया रखी थी. क्षत्रिय युवक संघ के आधिकारिक एक्स अकाउंट पर जानकारी देते हुए बताया गया था कि मीरा बाई पर बयान के विषय में आपत्तिजनक टिप्पणी को लेकर अपनी स्थिति स्पष्ट करने बाबत केन्द्रीय कानून मंत्री अर्जुन राम मेघवाल का संघ के प्रमुख महावीर सिंह सरवड़ी के पास फोन आया था. इस बातचीत में महावीर सिंह ने केंद्रीय मंत्री मेघवाल को स्पष्ट कर दिया है कि पृष्ठभूमि चाहे जो भी रही हो, इतिहास और समाज की परंपराओं की पूर्ण जानकारी के बिना मीराबाई पर देवर के साथ विवाह करने का दबाव बनाने की उनकी टिप्पणी तथ्यहीन, गैरजरूरी और अपमानजनक है. क्षत्रिय युवक संघ ने यह भी कहा कि समाज में इस बेबुनियाद और अमर्यादित टिप्पणी को लेकर आक्रोश है. इसके लिए उन्हें सार्वजनिक रूप से माफी मांगनी चाहिए. गुरुवार शाम को हुई इस पोस्ट के थोड़ी देर बाद ही केंद्रीय मंत्री ने भी सोशल मीडिया पर अपना माफीनामा जारी कर दिया.

जब तक डीएमके को सत्ता से बाहर नहीं कर देता, तब तक जूते नहीं पहनूंगा : के. अन्नामलाई

चेन्नई , एजेंसी। तमिनलाडु भाजपा के अध्यक्ष के. अन्नामलाई ने गुरुवार को कहा कि जब तक डीएमके सत्ता से बेदखल नहीं हो जाती है, तब तक वे जूते नहीं पहनेंगे. उन्होंने यह घोषणा एक प्रेसवार्ता में की. उनके साथ कई समर्थक नेता भी मौजूद थे. अन्नामलाई ने डीएमके सरकार का विरोध करते हुए कहा कि अन्ना विश्वविद्यालय की छात्रा के साथ यौन शोषण हुआ, लेकिन प्रशासन ने त्वरित कार्रवाई नहीं की. इस मामले को लेकल वह शुक्रवार को विरोध प्रदर्शन करेंगे. भाजपा नेता अन्नामलाई ने कहा कि वह शुक्रवार से जूते का त्याग करने जा रहे हैं, और उन्होंने यह भी कहा कि जब तक डीएमके सत्ता से बाहर नहीं हो जाती है, तब तक वे कोई भी फुटवियर नहीं धारण करेंगे. अन्नामलाई एक फायर ब्रांड नेता माने जाते हैं. वह आईपीएस अधिकारी रह चुके हैं. भाजपा नेता ने आरोप लगाया कि इस मामले में आरोपी डीएमके का कार्यकर्ता है. उन्होंने कहा कि आरोपी गनाशेखरन साइदई ईस्ट में डीएमके के स्टूडेंट विंग का लीडर है. अन्नामलाई ने कहा कि यदि आरोपी डीएमके का कार्यकर्ता होता है, तो पुलिस उसके खिलाफ कार्रवाई नहीं करती है या फिर कार्रवाई करती भी है, तो उसकी गति धीमी हो जाती है. उन्होंने आरोप लगाया कि विश्वविद्यालय मामले में आरोपी को पुलिस ने वॉचलिस्ट में भी नहीं रखा है, क्योंकि पुलिस पर ऊपर से दबाव डाला जा रहा है कि वे उनके खिलाफ कार्रवाई न करे.

पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह के निधन पर हिमाचल में 7 दिन का राजकीय शोक, क्या-क्या रहेगा बंद

शिमला, एजेंसी। हिमाचल प्रदेश सरकार ने देश के पूर्व प्रधानमंत्री, पूर्व वित्त मंत्री और प्रख्यात अर्थशास्त्री डॉ. मनमोहन सिंह के निधन पर शोक व्यक्त किया है। उनकी श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए राज्य सरकार ने सात दिनों का राजकीय शोक घोषित किया है। इस दौरान राष्ट्रीय ध्वज आधा झुका रहेगा और राज्य सरकार की ओर से किसी भी प्रकार का मनोरंजक कार्यक्रम आयोजित नहीं किया जाएगा। राज्य सरकार द्वारा जारी आदेश के अनुसार प्रदेश के सभी सरकारी दफ्तर, स्कूल, कॉलेज और शिक्षण संस्थान 27 और 28 दिसंबर को बंद रहेंगे।

कांग्रेस को इंडिया गठबंधन से बाहर करने की मांग, केजरीवाल के बयान पर सीएम ममता ने साधी चुप्पी

कोलकाता, एजेंसी।
दिल्ली में कांग्रेस नेताओं की विवादास्पद बयानबाजी के बाद आम आदमी पार्टी (आप) के प्रमुख अरविंद केजरीवाल ने देश की मुख्य विपक्षी पार्टी को इंडिया गठबंधन से बाहर करने का आह्वान किया है. हालांकि, पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी इस मामले पर कुछ भी बोलने से परहेज करती दिखीं. तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) प्रमुख बनर्जी ने न तो दिल्ली के पूर्व मुख्यमंत्री केजरीवाल के बयान का समर्थन किया और न ही इसका विरोध किया.

कोलकाता में राज्य सचिवालय नबन्ना में गुरुवार को इस मुद्दे पर पत्रकारों के सवाल पर सीएम ममता बनर्जी ने कहा, यह एक सरकारी मंच है. यहां मैं राजनीतिक मुद्दों पर चर्चा नहीं कर सकती. मैं सभी राजनीतिक दलों का सम्मान करती हूं. मैं उन्हें नए साल की शुभकामनाएं देती हूं और उम्मीद करती हूं कि उनका नया साल सुरक्षित और खुशहाल रहे. टीएमसी प्रमुख ने विवाद से किनारा करते हुए सभी विपक्षी दलों को एक साथ मिलकर आगे बढ़ने का संदेश दिया. हाल ही में इंडिया गठबंधन

का नेतृत्व करने के लिए कुछ विपक्षी दलों ने ममता बनर्जी को समर्थन दिया था. लेकिन, कांग्रेस ने साफ किया था कि राहुल गांधी ही विपक्ष के नेता हैं. पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी इन मुद्दों को बड़ी ही कुशलता से टालती रही हैं. हालांकि, राजनीतिक हलकों का मानना है कि उनके बयान के जरिये मुद्दे को संतुलित करने की कोशिश की गई है.

मुख्यमंत्री ममता ने आज क्या कहा?

आप प्रमुख केजरीवाल के कांग्रेस को इंडिया गठबंधन से बाहर करने के बयान के बाद ममता बनर्जी किसी भी तरह के विवाद को जन्म नहीं देने के मूड में दिखीं. किसी भी विवाद में घसीटे जाने से इनकार करते हुए उन्होंने यह बहाना बनाया कि चूंकि नबन्ना एक सरकारी मंच है, इसलिए वह वहां से कोई राजनीतिक संदेश साझा नहीं करना चाहती हैं. उन्होंने कहा, मैं सभी राजनीतिक दलों का समान सम्मान करती हूं.

ओल्ड गुरुग्राम मेट्रो स्टेशनों के निर्माण का सर्वे शुरू, 15 दिन में पूरा होगा काम, 2 इंटरचेंज स्टेशन बनेंगे

गुरुग्राम , एजेंसी।
ओल्ड गुरुग्राम मेट्रो के तहत मेट्रो स्टेशन निर्माण को लेकर सर्वे शुरू हो गया है। गुरुवार सुबह डिजाइन सलाहकार कंपनी सिस्टा के साथ गुरुग्राम मेट्रो रेल लिमिटेड (जीएमआरएल) और गुरुग्राम महानगर विकास प्राधिकरण (जीएमडीए), दक्षिण हरियाणा बिजली वितरण निगम (डीएचबीवीएन) के अधिकारियों ने तीन मेट्रो स्टेशन के निर्माण में अड़चनों का निरीक्षण इसके समाधान के बारे में चर्चा की गई।

सिस्टा कंपनी ने मेट्रो स्टेशन के निर्माण की जगह का चयन करने के साथ-साथ पानी, सीवर और बरसाती नालों के स्थानांतरण को लेकर अधिकारियों से विचार विमर्श किया। शनिवार को इस सर्वे के तहत बख्तावर चौक पर प्रस्तावित मेट्रो स्टेशन का सर्वे किया जाएगा। अंडरपास के ऊपर मेट्रो स्टेशन तैयार किया जाएगा। ऐसे में इसके पिलर एक होंगे। गुरुवार सुबह 11 बजे डिजाइन सलाहकार कंपनी के अधिकारी मिलेनियम सिटी सेंटर मेट्रो स्टेशन

के सामने सेक्टर-44 स्थित फोर्टिस अस्पताल के हरित क्षेत्र में पहुंच गए। इस दौरान जीएमडीए के बरसाती नालों के कार्यकारी अभियंता विक्रम कलकल, पानी के कार्यकारी अभियंता अभिनव वर्मा, सीवर के कार्यकारी अभियंता पारिक गर्ग के अलावा इनसे जुड़े उपमंडल अभियंता और फील्ड टेक्निशियन पहुंचे। अधिकारियों ने सलाहकार कंपनी के अधिकारियों को पानी, सीवर और नालों के निकलने से जुड़ी जानकारी दी, जिसको लेकर इस ने मार्किंग कर दी। इसके बाद टीम ने सेक्टर-45 और साइबर पार्क में प्रस्तावित मेट्रो स्टेशन का निरीक्षण किया। मेट्रो का निर्माण शुरू करने से पहले मिलेनियम सिटी की आठ मुख्य सड़कों की चौड़ाई बढ़ाई जाएगी। मंगलवार को ओल्ड गुरुग्राम मेट्रो संचालन को लेकर बैठक ली थी। इसमें मुख्यमंत्री ने जीएमआरएल के प्रबंध निदेशक डॉ. चंद्रशेखर खरे को आदेश जारी किए हैं कि 1 मई से मेट्रो संचालन का काम शुरू हो जाना चाहिए। जीएमआरएल के प्रबंध निदेशक ने मुख्यमंत्री को बताया था कि जनवरी माह में मिलेनियम सिटी सेंटर मेट्रो स्टेशन से लेकर सेक्टर-नौ व सेक्टर-101 तक मेट्रो लाइन का टेंडर को आमंत्रित कर दिया जाएगा।

किडनैप कर युवती से गैंगरेप; फरीदाबाद पुलिस का एनकाउंटर, 3 को दबोचा एक को लगी गोली

फरीदाबाद , एजेंसी।
फरीदाबाद पुलिस ने फैक्टरी से काम कर के ऑटो से घर लौट रही युवती को किडनैप कर उसके साथ गैंगरेप करने के तीन आरोपियों को एक एनकाउंटर के बाद दबोचा है। इनमें से एक आरोपी के पैर में मुठभेड़ के दौरान गोली लग गई जिसे इलाज के लिए अस्पताल ले जाया गया। मुठभेड़ ग्रेटर फरीदाबाद में हुई। आरोपियों ने 23 दिसंबर को वारदात को अंजाम दिया था। आरोपी पीड़िता को ट्रक में डालकर सुनसान जगह पर ले गए और उसके साथ सामूहिक दुष्कर्म किया।

पीड़ित युवती एक फैक्टरी में काम करती है। 23 दिसंबर की शाम करीब 7:00 बजे वह ड्युटी पूरी कर ऑटो में सवार होकर अपने घर के लिए निकली थी। नचौली गांव के पास अचानक ऑटो में कुछ दिक्कत हो गई। इससे ऑटो सड़क किनारे खड़ा हो गया। इसी बीच वहां एक ट्रक में सवार तीन युवक आ पहुंचे। वे बेवजह

ऑटो चालक के साथ मारपीट करने लगे। उनसे बचने के लिए ऑटो चालक भाग खड़ा हुआ। इस पर आरोपियों में से एक ऑटो चालक को पकड़ने के लिए उसका पीछा करने लगा जबकि वहां खड़े बाकी दो आरोपी ऑटो सवार युवती को अगवा कर ट्रक समेत फरार हो गए। इसके बाद कुछ दूर आगे सुनसान रास्ते में आरोपियों ट्रक खड़ा कर युवती के साथ सामूहिक दुष्कर्म किया। रात करीब 10:30 बजे आरोपी युवती को छोड़कर फरार हो गए।

आरोपियों के साथी के चंगुल से छूटकर ऑटो चालक ने युवती के अपहरण की सूचना पुलिस को दे दी थी। पुलिस की टीमों ने अगवा की युवती को छुड़ाने के लिए तलाशी अभियान चलाया। इस दौरान पीड़ित युवती नचौली के पास पुलिस को मिल गई। गैंगरेप के दौरान आरोपी अपना नाम ले रहे थे। इससे उनकी पहचान हो गई थी। 24 दिसंबर को पुलिस ने पीड़िता की शिकायत पर मामला दर्ज किया था।

संयुक्त पुलिस आयुक्त राजेश दुग्गल ने इस मामले की जांच के लिए अपराध जांच शाखा सेक्टर-30 प्रभारी अनिल कुमार के नेतृत्व में टीम गठित की थी। पुलिस टीम को मुखबिर से सूचना मिली थी कि आरोपी ग्रेटर फरीदाबाद में अमृता अस्पताल इलाके में चांदीवाला बाग के पास मौजूद हैं। इस पर पुलिस टीम ने छापेमारी कर दी। छापेमारी के दौरान पुलिस ने वहां से नचौली गांव निवासी राकेश को गिरफ्तार कर लिया। इसी दौरान राकेश का साथी वहां से भाग खड़ा हुआ। जब पुलिस ने आरोपी का पीछा किया तो गिरफ्तार से बचने के लिए आरोपी ने पुलिस कर्मियों पर गोली चला दी। लेकिन, निशाना चूकने से पुलिसकर्मी बाल-बाल बच गए। आत्मरक्षा में पुलिस द्वारा चलाई गई गोली आरोपी के पैर में जा लगी। इससे वह लुढ़क कर नीचे गिर पड़ा।

छत्तीसगढ़ में 8 लाख के इनामी नक्सली का सरेंडर, घर वापसी के तहत 208 इनामी डाल चुके हैं हथियार

दंतेवाड़ा, एजेंसी।
छत्तीसगढ़ के दंतेवाड़ा जिले में चलाए जा रहे नक्सल उन्मूलन अभियान लोन वर्राटू (घर वापस आइए) और छत्तीसगढ सरकार की पुनर्वास नीति के तहत आठ लाख रुपए के इनामी नक्सली ने आत्मसमर्पण किया। इस योजना के तहत अब तक 208 इनामी नक्सली हथियार डाल चुके हैं।

छत्तीसगढ़ के दंतेवाड़ा जिले में आठ लाख रुपए के इनामी नक्सली सुधरू कश्यप ने आत्मसमर्पण किया। यह आत्मसमर्पण डीआरजी और बस्तर फाइटर्स की विशेष टीम की सहायता से संभव हुआ। डीएसपी

गोविंद सिंह दीवाने ने गुरुवार को कहा कि सुधरू जो नक्सली संगठन की कंपनी नम्बर 06 का सदस्य था, ने मंगलवार को डीआरजी कार्यालय, दन्तेवाड़ा में उच्च पुलिस अधिकारियों के समक्ष आत्मसमर्पण किया। आत्मसमर्पण करने वाले नक्सली को छत्तीसगढ़ सरकार द्वारा 25,000 रुपए की सहायता राशि के साथ अन्य सुविधाएं प्रदान की जाएंगी। इसके अलावा, व्यवसायिक प्रशिक्षण और आवास की सुविधाओं के जरिए उसे समाज में पुनर्वासित किया जाएगा।

लोन वर्राटू अभियान के तहत जिले की पुलिस और सीआरपीएफ द्वारा माओवादियों को समाज की मुख्यधारा में जोड़ने के लिए लगातार संवाद और संपर्क अभियान चलाए जा रहे हैं। इस अभियान के प्रभाव में अब तक कई नक्सली आत्मसमर्पण कर चुके हैं। अब तक, लोन वर्राटू अभियान के तहत कुल 888 नक्सलियों ने आत्मसमर्पण किया है, जिनमें से 208 ईनामी नक्सली शामिल हैं।

हाल ही सुरक्षाबलों ने कांकेर जिले से 25 लाख के इनामी नक्सली नेता प्रभाकर को गिरफ्तार किया था। प्रभाकर छत्तीसगढ़ समेत कई राज्यों में आपराधिक मामले दर्ज हैं। वह ओडिया, बिहार, झारखंड और पश्चिम बंगला के शीर्ष माओवादी नेताओं का करीबी सहयोगी रहा है। वह मूलरूप से तेलंगाना के बीरपुर गांव का रहने वाला है।

14 सालों का इंतजार होगा खत्म, ग्रेटर नोएडा में आरजी होम्स के 600 खरीदारों को जल्द मिलेंगे फ्लैट

ग्रेटर नोएडा , एजेंसी। ग्रेटर नोएडा वेस्ट के आरजी लग्जरी होम प्रोजेक्ट में फंसे 600 खरीदारों को जल्द फ्लैट पर कब्जा मिल जाएगा। ग्रेनो प्राधिकरण ने प्रोजेक्ट के सात टॉवर में बने फ्लैट के लिए ऑक्यूपेंसी सर्टिफिकेट (ओसी) जारी कर दिया। दिवालिया प्रक्रिया में होने के बावजूद सात टावरों का ओसी जारी होने से खरीदारों से फ्लैट मिलने की उम्मीद जगी है। परियोजना में करीब 14 वर्षों से खरीदार फ्लैट मिलने के इंतजार में है। जानकारी के मुताबिक यह प्रोजेक्ट लंबे समय से दिवालिया प्रक्रिया में है। परियोजना का निर्माण एनसीएलटी से नियुक्त अंतरिम समाधान पेशेवर (आईआरपी) की निगरानी में जारी हैं। दावा है कि बाकी खरीदारों को अगले वर्ष कब्जा दिया जाएगा। सेक्टर 16 बी स्थित आरजी लग्जरी होम्स प्रोजेक्ट का निर्माण वर्ष 2010 में शुरू हुआ था। बिल्डर ने तीन वर्षों में कब्जा देने का वादा किया था, लेकिन वादा पूरा नहीं कर सका। निर्माण पूरा नहीं होने पर खरीदारों ने एनसीएलटी का दरवाजा खटखटाया। एनसीएलटी के आदेश के बाद अक्तूबर, 2021 में आईआरपी की निगरानी में बिल्डर ने प्रोजेक्ट का निर्माण शुरू किया।

जंगल की आग को और भड़का रही है तेज हवाएं

सिडनी , एजेंसी। ऑस्ट्रेलिया के विक्टोरिया राज्य में में लगी जंगल की आग को बुझाने में फायर फाइटर्स को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ा रहा है। विक्टोरिया के आपातकालीन प्रबंधन आयुक्त रिक नुगेंट ने कहा कि गुरुवार को फायर फाइटर्स को कई मुश्किलों का सामना करना पड़ा, लेकिन वे आगे आने वाली चुनौतियों के लिए तैयार हैं। समाचार एजेंसी सिन्हुआ की रिपोर्ट के मुताबिक, विक्टोरिया राज्य में आग पर पूरी तरह से प्रतिबंध लगा दिया गया था। दरअसल गर्मी और तेज हवाओं के कारण जंगलों में आग लगने का खतरा बढ़ गया था। नुगेंट ने पत्रकारों से कहा कि तेज उत्तरी हवाएं विक्टोरिया के दक्षिण में स्थित ग्रैम्पियंस नेशनल पार्क में लगी आग को और भड़का रही हैं।

अधिकारी ने कहा, इसके बाद हवा की दिशा बदलकर दक्षिण-पश्चिम की ओर हो जाएगी, जिससे मौजूदा आग को बुझाने वाले अग्निशामकों के लिए समस्याएं और बढ़ जाएंगी। ग्रैम्पियंस नेशनल पार्क की आग ने पहले ही करीब 55,000 हेक्टेयर भूमि को जलाकर पर्यावरण, पशुधन और बाहरी इमारतों को काफी नुकसान पहुंचाया है। नुगेंट ने कहा, हमें अब तक आवासीय घरों के नुकसान की कोई रिपोर्ट नहीं मिली है, लेकिन ग्रैम्पियंस में कई लोग रहते हैं, इसलिए अगर कोई घर नष्ट होता है, तो मुझे इसमें कोई हैरानी नहीं होगी।

विक्टोरिया के राज्य नियंत्रण केंद्र के ल्यूक हेगर्टी ने कहा कि ग्रैम्पियंस में हालात जल्दी बदल रहे हैं। उन्होंने कहा, जैसा कि हमने अनुमान लगाया था, आज दोपहर में आग और भड़की। हवा की दिशा बदलने से आग के कुछ हिस्सों पर असर पड़ना शुरू हो गया है। हेगर्टी ने आगे कहा, आज सुबह और दोपहर को हमने उत्तर-पश्चिमी हवाओं के कारण आग को दक्षिण-पूर्व की ओर फैलते हुए देखा है।

बांग्लादेश के सचिवालय में लगी भीषण आग, सरकारी दस्तावेज जलकर खाक

ढाका , एजेंसी। ढाका में बांग्लादेश सचिवालय की एक प्रमुख इमारत में बृहस्पतिवार को भीषण आग लग गई, जिससे सरकारी दस्तावेज नष्ट हो गए। अधिकारियों ने यह जानकारी दी। अधिकारियों को आशंका है कि सरकारी दस्तावेजों को नुकसान पहुंचाने की मंशा से ही घटना को अंजाम दिया गया और इस संबंध में एक उच्च स्तरीय जांच समिति गठित की गई है। बांग्लादेश सचिवालय की इमारत संख्या सात में आग लगी और करीब छह घंटे की मशक्कत के बाद आग पर काबू पा लिया गया। अधिकारियों के अनुसार, नौ मंजिला इमारत में सात मंत्रालय मौजूद हैं। उच्च सुरक्षा वाले परिसर में बृहस्पतिवार

सुबह आग लगी। हालांकि, आग की घटना में किसी के हताहत होने की खबर नहीं है।

अग्निशमन सेवा के प्रमुख ब्रिगेडियर जनरल जाहेद कमाल ने संवाददाताओं को बताया, ''कल (बुधवार) आधी रात के बाद इमारत में तीन स्थानों पर एक साथ आग लग गई। उन्होंने संकेत दिया कि आग संभवत दुर्घटनावश नहीं लगी। अधिकारियों ने बताया कि आग के कारण बिजली आपूर्ति बाधित हो गई, जिससे इमारत के अलावा अन्य मंत्रालयों को भी अपना सामान्य कामकाज रोकना पड़ा जबकि सुरक्षा एजेंसियों ने परिसर के अंदर प्रवेश प्रतिबंधित कर दिया, जिससे कई कर्मचारी परिसर में प्रवेश नहीं कर पाए। उन्होंने बताया कि इमारत संख्या सात की छठी, सातवीं और आठवीं मंजिल पर स्थित अधिकांश कमरे बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गए, जबकि स्थानीय प्रशासन, डाक एवं दूरसंचार मंत्रालयों के दस्तावेज और फर्नीचर जल गए। एक अधिकारी ने इमारत का दौरा करने के बाद बताया, ''आग बुझाने के लिए इस्तेमाल किए गए पानी से कई दस्तावेजों को भी नुकसान पहुंचा। इमारत के विभिन्न हिस्सों में रहने वाले कबूतर मरे हुए पाये गए और खिड़कियां टूटी हुई थीं। अंतरिम सरकार के सलाहकार आसिफ महमूद सजीब भुइयां ने कहा, ''षड्यंत्रकारियों ने अपनी गतिविधियां बंद नहीं की हैं।

यमन एयरपोर्ट से उड़ान भरने वाले थे डब्ल्यूएचओ चीफ, तभी बम बरसाने लगा इजरायल; बाल-बाल बचे

साना , एजेंसी।
विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) के प्रमुख और संयुक्त राष्ट्र के अन्य कर्मचारी गुरुवार को यमन के सना स्थित अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर फंस गए थे। इस दौरान इजरायल एयरस्ट्राइक कर रहा था। एक सोशल मीडिया पोस्ट में डब्ल्यूएचओ के महानिदेशक टेड्रोस एडनॉम घेब्रेयसस ने खुद इसका खुलासा किया है। उन्होंने खुद इस बात का खुलासा किया। उन्होंने कहा कि वह और उनके कर्मचारी विमान में सवार होने ही वाले थे कि तभी हवाई अड्डे पर हवाई बमबारी होने लगी। उन्होंने लिखा, हमारे विमान के चालक दल के एक सदस्य घायल हो गए। हवाई अड्डे पर दो लोग मारे गए।

हमलों में पावर स्टेशनों और बंदरगाहों को भी निशाना बनाया गया। कम से कम तीन लोग मारे गए और दर्जनों लोग घायल हो

गए। इजरायल द्वारा हमले की जिम्मेदारी लेने के बाद हूती विद्रोही समूह ने इन हमलों को क्रूर करार दिया। हलांकि इस घटना में मारे गए लोग नागरिक थे या हूती विद्रोही, इसका अभी तक खुलासा नहीं हो पाया है। इजरायली रक्षा बलों ने एक बयान में कहा कि उनके विमान ने हूती आतंकवादी शासन के सैन्य ठिकानों पर खुफिया रिपोर्ट के आधार पर हमले किए हैं। इनमें साना अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे, हेजियाज और रास कनातिब पावर स्टेशनों और पश्चिमी तट के अल-हुदायदाह, सालीफ और रास कनातिब बंदरगाहों पर स्थित सैन्य ठिकानों को निशाना बनाया गया। इजरायल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू ने हमलों के बाद कहा, हम ईरानी आतंकवादी धारा को तब तक खत्म करते रहेंगे जब तक हम काम पूरा नहीं कर लेते। वहीं, हूती के प्रमुख मोहम्मद अली अल-हूती ने इन हमलों को क्रूर और आक्रामक बताया और कहा कि अमेरिकी और इजरायली अहंकार के साथ संघर्ष तब तक जारी रहेगा जब तक गाजा संघर्ष समाप्त नहीं हो जाता। साना हवाई अड्डे पर हमले में घायल हुए कई लोगों ने अल-मसीरा चैनल को बताया कि रनवे पर तीन बार हमले किए गए। उसके बाद हवाई अड्डे के नियंत्रण टॉवर को भी निशाना बनाया गया। एक व्यक्ति ने कहा कि अस्पताल में 10 मरीजों का इलाज किया गया, जिनमें से एक की मौत हो गई। एक गंभीर स्थिति में था और बाकी को मामूली चोटें या हड्डी टूटने की समस्या थी।

साजिश के तहत हुआ कजाकिस्तान प्लेन क्रैश ! शक की सुई रूस पर, सोशल मीडिया पर छिड़ी बहस

अजरबैजान, एजेंसी। अजरबैजान एयरलाइंस के एक विमान की कजाकिस्तान के पास दुर्घटना ने सवालों को जन्म दिया है। प्रारंभिक जांच में पक्षियों के टकराने को हादसे का कारण बताया गया, लेकिन सोशल मीडिया पर यह चर्चा है कि यह घटना रूसी वायु रक्षा प्रणाली की गलती हो सकती है, जिसने विमान को यूक्रेनी ड्रोन समझकर निशाना बना लिया। अजरबैजान एयरलाइंस का एम्ब्रेयर ईएमबी 190 विमान, जो बाकू से रूस के ग्रोज़्नी के लिए उड़ान भर रहा था, बुधवार को कजाकिस्तान के पश्चिमी हिस्से अक्तौ के पास दुर्घटनाग्रस्त हो गया। विमान में 67 यात्री और 5 चालक दल के सदस्य सवार थे, जिनमें से 38 की मौत हो चुकी है। हादसा उस समय हुआ जब विमान आपातकालीन लैंडिंग की अनुमति का इंतजार करते हुए अक्तौ एयरपोर्ट के ऊपर चक्कर लगा रहा था। इस हादसे के बाद सोशल मीडिया पर कई वीडियो वायरल हो रहे हैं, जिनमें विमान में संदिग्ध छेद दिखाई दे रहे हैं। इन छेदों को छर्रे से हुए नुकसान के रूप में दर्शाया जा रहा है, जिससे अफवाहें फैल रही हैं कि विमान को रूस ने मार गिराया।

मुद्रक तथा प्रकाशक रंजीत राय द्वारा स्वामी आर.डी. प्रिंटर एंड पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड, प्लॉट नं. सी-16 एवं 17, रोड नं. 9, पाटलिपुत्रा इंडस्ट्रीयल एरिया, पटना-800013 के पक्ष में आर.डी. प्रिंटर एंड पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड प्रेस से मुद्रित एवं सी-20, एस.के. पुरी, नियर बसावन पार्क, पटना, बिहार-800013 से प्रकाशित संपादक- देवन प्रसाद
(नोटः प्रकाशित सभी लेखों आदि से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं और किसी भी कानूनी वाद-विवाद का निपटारा पटना न्यायालय में ही किया जाएगा।) RNI. No. BIHHIN/2013/ 49676, Email: news@pratahkiran.com, patna@pratahkiran.com, 9212228045, 8130691216, 9971557129